शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मंजरी
6

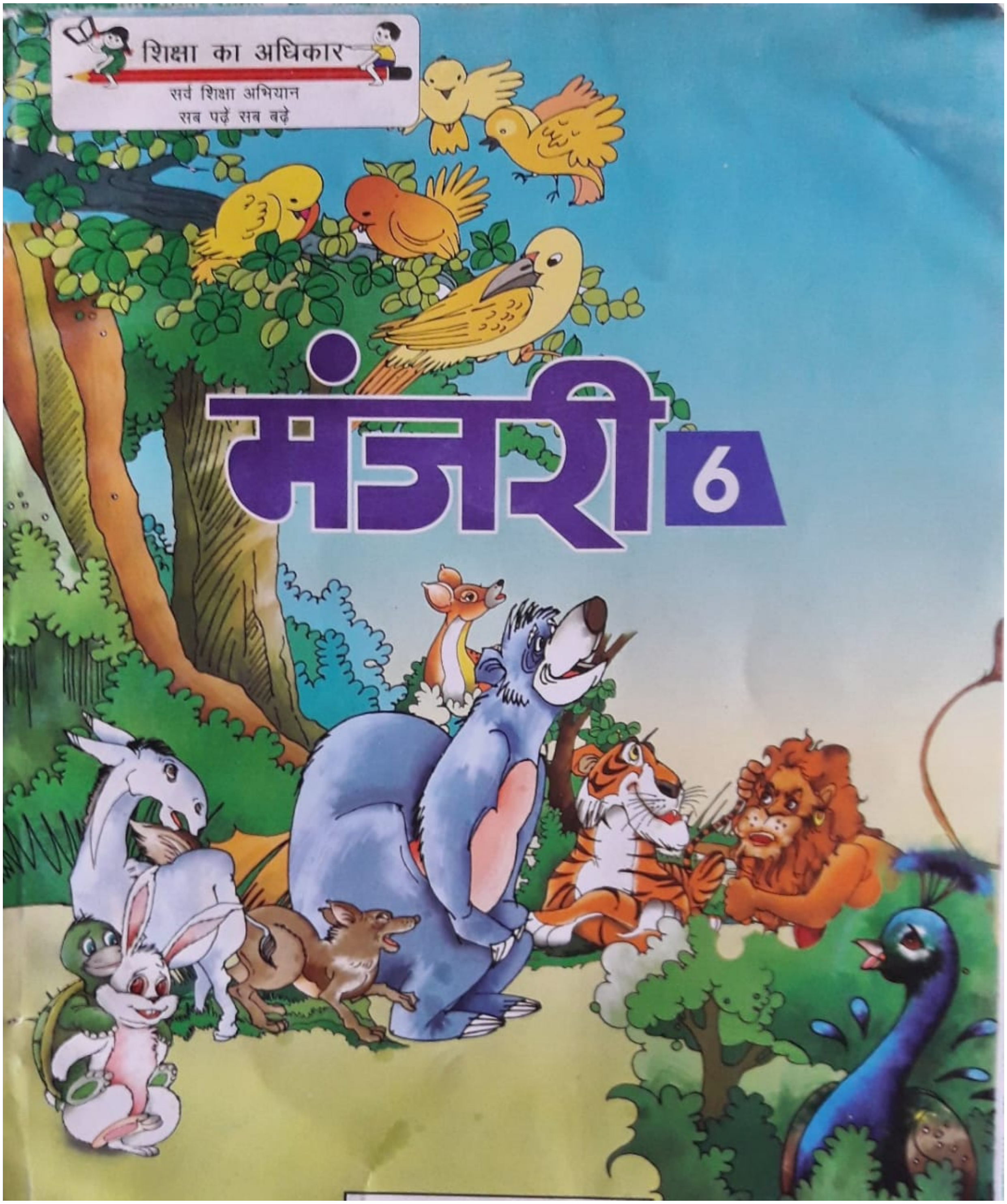
शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़े
मंजरी 6

पाठ 1

चिर महान

(प्रस्तुत कविता में ईश्वर से लोक कल्याण और मानवता की सेवा करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की गयी है।)

जगजीवन में जो चिर महान
सौन्दर्यपूर्ण औ सत्य-प्राण
मैं उसका प्रेमी बनूँ, नाथ!
जो हो मानव के हित समान!

जिससे जीवन में मिले शक्ति,
छूटे भय, संशय,अन्धभक्ति,

मैं वह प्रकाश बन सकूँ, नाथ!

मिल जायें जिसमें अखिल व्यक्ति,

पाकर, प्रभु! तुमसे अमर दान

करने मानव का परित्राण,

ला सकूँ विश्व में एक बार

फिर से नवजीवन का विहान!

- सुमित्रानन्दन पन्त

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म सन् 1900 ई0 में अल्मोड़ा के निकट कौसानी ग्राम में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम की ही पाठशाला में हुई। इनकी साहित्यिक सेवा के लिए भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म-भूषण' सम्मान से विभूषित किया। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'वीणा', 'ग्रन्थि', 'पल्लव', 'गुंजन', 'चिदम्बरा' आदि। पन्त जी का निधन 28 दिसम्बर सन् 1977 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

जगजीवन=संसार के लोगों का जीवन। **सत्यप्राण**=जिसका हृदय सत्य से भरा हो। **मानव के हित समान**=जो समान रूप से मनुष्य की भलाई करने वाला हो। **अन्धभक्ति**=बिना सोचे समझे किसी के प्रति निष्ठा का भाव रखना। **अखिल**=सम्पूर्ण, सारा। **परित्राण**=पूर्ण रक्षा। **विहान**=प्रातःकाल, भोर।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

ईश्वर भक्ति से संबंधित अन्य कविताओं का संकलन कीजिए।

विचार और कल्पना

संसार में मानव कल्याण के लिए कौन-कौन उपाय किये जा सकते हैं ? अपना विचार व्यक्त कीजिए। अगर आपको ईश्वर से संसार के कल्याण का वरदान मिल जाये तो आप क्या-क्या करेंगे ?

कविता से

1. इस कविता में 'सत्य-प्राण' ृब्द अच्छे गुण का सूचक है और 'अन्ध भक्ति' शब्द दुर्गुण अर्थात् अच्छे गुण का सूचक नहीं है। इसी प्रकार कविता को पढ़कर इसमें आये अच्छे गुण

वाले शब्दों और दुर्गुण वाले शब्दों की सूची बनाइए, जैसे -

अच्छे गुण वाले शब्द : सत्यप्राण, ...

दुर्गुण वाले शब्द : अन्ध भक्ति, ...

2. कवि विश्व में नवजीवन का विहान क्यों लाना चाहता है ?

3. इस कविता का शीर्षक 'चिर महान' है। आपको इस कविता का कोई और शीर्षक देना हो तो क्या शीर्षक देना चाहेंगे ? लिखिए।

4. (क) निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. जगजीवन में जो चिर महान

सौन्दर्यपूर्ण औ सत्य-प्राण।

2. जिससे जीवन में मिले शक्ति

छूटे भय, संशय, अन्धभक्ति।

(ख) नीचे 'क' वर्ग में दी गयी कविता पंक्तियों से सम्बन्धित पंक्तियाँ 'ख' वर्ग में दी गयी हैंै। किन्तु वे क्रम से नहीं हैं। पंक्तियों को मिलाइए-

'क'	'ख'
1. **मैं उसका प्रेमी बनूँ, नाथ!**	मिल जायें जिसमें अखिल व्यक्ति
2. **मैं वह प्रकाश बन सकूँ, नाथ!**	फिर से नवजीवन का विहान
3. **ला सकूँ विश्व में एक बार**	जो हो मानव के हित समान

भाषा की बात

1. चिर शब्द का अर्थ है 'सदैव', यह महान के पूर्व विशेषण के रूप में जुड़ा है। इसी प्रकार 'चिर' विशेषण लगाकर तीन नये शब्द बनाइए, जैसे- चिर नवीन, ...।

2. जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए उसे 'विशेषण' कहते हंै। जिसकी विशेषता बताई जाय उसे 'विशेष्य' कहते हैं।

3. क्रिया विशेषण वे शब्द हैं जो क्रिया की विशेषता बताते हैं। जैसे-काला घोड़ा तेज दौड़ा। इस वाक्य में 'काला' शब्द विशेषण है जो संज्ञा शब्द 'घोड़ा' की विशेषता बता रहा है। तेज दौड़ा में 'दौड़ा' शब्द क्रिया है उसकी विशेषता बताने वाला शब्द 'तेज' क्रिया विशेषण है।

इसे भी जानें

सुमित्रानन्दन पन्त को उनकी काव्यकृति 'चिदम्बरा' के लिए सन् 1968 ई0 मंे ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है। भारत का कोई भी नागरिक जो

आठवीं अनुसूची में बतायी गयी 22 भाषाओं में से किसी भाषा में उत्कृष्ट लेखन करता हो, वह इस पुरस्कार के योग्य है। इस पुरस्कार की स्थापना सन् 1965 ई0 में हुई।

शिक्षक संकेत- श्रव्य-दृश्य सामग्री का प्रयोग कर कविता को सुनाएँ एवं विद्यालय के किसी कार्यक्रम में बच्चों से प्रस्तुत कराएँ।

पाठ 2

अपना स्थान स्वयं बनाइए

(प्रस्तुत कहानी में लेखक द्वारा बच्चों को कर्मठ और सदाचारी बनने की प्रेरणा दी गई है।)

राजा ने एक दिन अपने मंत्री से कहा, ”मुझे अपने लिए एक आदमी की जरूरत है। कोई तुम्हारी निगाह में जँचे तो लाना, पर इतना ध्यान रखना कि आदमी अच्छा हो।" बहुत दिनों की जाँच -पड़ताल के बाद मंत्री को एक युवक जँचा। उसने युवक की नौकरी छुड़ा दी और उन्नति का आश्वासन देकर राजा के सामने पेश किया। बहुत देर तक तो राजा को अपनी बात ही याद न आई, बाद में बोले, ”हाँ, उस समय शायद कोई बात मन में थी, पर मैंने अब तो कोई बात नहीं की है।" मंत्री ने कहा, "हुजूर! मैंने इसे हजारों में से छाँटा है और बढ़िया नौकरी से छुड़ाकर लाया हूँ।“ राजा ने ज़रा सोचकर कहा, ”हमारे पास तो इस समय कोई काम नहीं है, पर तुम बहुत कह रहे हो, तो हम इसे अपने दफ्तर में चपरासी रख सकते हैं ।

वेतन पंद्रह रुपये मिलेगा।“ मंत्री को बुरा लगा, पर उस युवक ने कहा, "मेरे लिए सबसे बड़ा वेतन यह है कि मुझे अपने राजा की सेवा करने का मौका मिलेगा।“ यह कहकर वह उस नौकरी के लिए तैयार हो गया। मंत्री जब उसे दफ्तर में छोड़ने गया, तो वहाँ धूल थी,

क्योंकि राजा वहाँ न कभी जाते थे और न काम करते थे। यह देखकर मंत्री दुखी हुआ, परन्तु वह युवक इतना होने पर भी खुश था। उसने अच्छा स्थान दिलाने के लिए मंत्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

युवक ने लगातार कई दिनों तक उस दफ़्तर को साफ करके उसे शाही दफ्तर का रूप दे दिया। उस दफ़्तर में एक छोटी-सी कोठरी थी। युवक ने उसकी जाँच-पड़ताल की, तो पता चला कि पिछले सालों में बादशाह के पास जो निजी पत्र आए थे, उनके लिफ़ाफों का ढेर उस कोठरी में था।

उनमें से बहुत-से लिफ़ाफों पर सोने की पच्चीकारी थी और रत्न जड़े थे। ये वे लिफाफे थे जो विवाह जैसे शुभ अवसरों पर दूसरे राजाओं और अमीर-उमरावों के यहाँ से आए थे। युवक ने कारीगर लगाकर सब कीमती सामान लिफ़ाफ़ों पर से उतरवा लिया और बाज़ार में बेच दिया।

सामान बेचकर उसे कई हजार रुपये मिले। उनमें से कुछ रुपये तो उसने दफ़्तर में बढ़िया फर्नीचर और चित्र आदि लगाने में खर्च कर दिए और बाकी सरकारी खज़ाने में जमा कर दिए। जहाँ वह सामान बिका, उसने उसकी भी रसीद ली और जहाँ से यह सामान खरीदा गया, उसकी भी। दफ़्तर सचमुच शाही दफ़्तर हो गया। चुगलखोरों ने राजा से उसकी शिकायत की कि वह रुपया लुटा रहा है। एक दिन राजा गुस्से मंे भरे दफ्तर गए तो दफ्तर की हालत देखकर दंग रह गए, फिर भी उन्होंने तेज़ आवाज में पूछा, "तुमने यह सजावट किसके रुपये से की ?" "दफ्तर के रुपये से, हुजूर!“ कहकर उसने राजा को रद्दी लिफ़ाफ़ों की कहानी सुनाई और खजांची से गवाही दिलाई कि दफ़्तर का सामान खरीदने के बाद बचा हुआ रुपया खज़ाने में जमा किया गया है। राजा रीझ गए और उस युवक को अपने राज्य का वित्तमंत्री बना दिया। इस कारण दूसरे मंत्रियांे को परेशानी होने लगी, क्यांेकि वह न स्वयं बेईमानी करता था, न किसी को करने देता था, न लापरवाही करता

था, न करने देता था। उसके बाद से तो जो भी मंत्री राजा के पास जाता, किसी-न-किसी बहाने उस युवक की शिकायत करता, जिससे कि वह राजा की नजरों में गिर जाए।

एक रात को दो बजे राजा ने अपने सेनापति को बुलाकर कहा, "हमारे सब मंत्रियों को, उनके घरों से उठाकर इस कमरे में ले आओ, लेकिन वे जिस हालत में हों, उसी हालत में लाया जाए। समझ लो, हमारे हुक्म को। अगर कोई पलंग पर सो रहा हो, तो उसे पलंग सहित ज्यों का त्यों लाया जाए और कोई कालीन पर बैठा चैपड़ खेल रहा हो, तो कालीन समेत यहाँ लाया जाए।“

एक घण्टे के भीतर ही सभी मंत्री महल के एक बड़े से कमरे में आ गए। राजा ने देखा कि आठ में से सात मंत्री नशे में थे। उनमें से कुछ जुआ खेल रहे थे। वित्त मंत्री भी बनियान पहने एक चैकी पर बैठे दीये की रोशनी में कोई काग़ज देख रहे थे। सभी मंत्री बहुत लज्जित हुए। तब राजा ने वित्तमंत्री से पूछा, ‘‘जनाब, रात में दो बजे किस काग़ज में उलझे हुए थे ?’’

उसने उत्तर दिया, ”हुजूर! दूर के इलाके से इस साल का जो राज-कर आया है, उसमें पिछले साल से एक पैसा कम है, तो बार-बार देख रहा था कि जोड़ में भूल है या सचमुच पैसा कम है।

“राजा ने अपने जेब से एक पैसा फेंककर कहा, लो, अब हिसाब ठीक कर दो और जाओ आराम करो।“

वित्त मंत्री ने नम्रता के साथ पैसा वापस करते हुए कहा, ”हुजूर! पैसा तो मैं भी डाल सकता था, पर यदि पैसा कम है और उसके लिए पूछताछ न हुई, तो इससे अफ़सरो मंे

ढील और बेईमानी पैदा होगी।“ उसकी बात सुनकर राजा बहुत खुश हुए और उन्होंने उस युवक को राज्य का प्रधानमंत्री बना दिया।

कन्हैयालाल मिश्र ‘प्रभाकर‘

कन्हैया लाल मिश्र ‘प्रभाकर’ का जन्म 29 मई 1961 में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के देवबन्द ग्राम में हुआ था। प्रभाकर जी हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार निबन्धकार, पत्रकार तथा स्वतन्त्रता सेनानी थे। इनकी रचनाओं मंे ‘बाजे पायलिया के घुँघरू’, ‘दीप जले शंख बजे’, ‘तपती पगडंडियों पर पदयात्रा’ तथा ‘माटी हो गई सोना’ आदि प्रमुख है। इनका निधन 9 मई 1995 ई0 को हुआ था।

शब्दार्थ

कृतज्ञता = उपकार मानना, **आश्वासन** = आशा दिलाना, **पच्चीकारी** = जड़ना, नक्काशी | **चुगलखोर** = शिकायत करने वाला, **खजाँची** = खजाने का अधिकारी।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को-

1. आपके यहाँ भी विवाह तथा अन्य प्रकार के आयोजनों से जुड़े तमाम लिफाफे आते होंगे। आप इनका उपयोग आप किस प्रकार कर सकते हैं। सोचिए/कीजिए।

2. इसी प्रकार घरों में बहुत सी चीजें रद्दी या कबाड़ समझकर फेंक दी जाती हैं। अपने घर में ऐसी वस्तुओं को खोजकर उनसे रचनात्मक चीजें तैयार कीजिए।

विचार और कल्पना

1. ईमानदारी से कार्य करने का क्या तात्पर्य है ? आपको कैसे पता चलता है कि आपके द्वारा कार्य ईमानदारी से किये गए ? ईमानदारीपूर्वक कार्य करने के क्या-क्या लाभ हैं ?

2. राजा के सात मंत्री नशे में पाए गए। नशे के क्या-क्या दुष्परिणाम होते है ? अपने विचार लिखिए।

कहानी से

1. किसने किससे कहाः-

(क) मुझे अपने लिए एक आदमी की जरुरत है।

(ख) मैंने इसे हजारों मंे से छँाटा है और बढ़िया नौकरी से छुड़ा कर लाया हूँ।

(ग) मुझे अपने राजा की सेवा करने का मौका मिलेगा।

(घ) इससे अफसरों में ढील और बेईमानी पैदा होगी।

2.. युवक ने कीमती सामान क्यों बेच दिया ?

3. ‘‘हुजूर पैसा तो मैं भी डाल सकता था, पर यदि पैसा कम है और इसके लिए पूछताछ न हुई तो इससे अफसरों में बेईमानी और ढील पैदा होगी।’’ वित्तमंत्री ने ऐसा क्यों कहा?

4. राजा ने युवक को प्रधानमंत्री क्यों बनाया ?

5. कहानी में किस बात ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

राजा, रात, सोना, दिन, खुश, निगाह

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए-

उन्नति, कृतज्ञ, बेईमान, अमीर, अच्छा

3. निम्नलिखित पंक्तियों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिएः-

(क) पेन पेन्सिल और रबर लिखने के साधन हैं

(ख) क्या आपके विद्यालय में कम्प्यूटर है

(ग) वाह कितने सुन्दर फूल खिले हैं

(घ) गुरु शिष्य विद्यालय की शोभा हैं

4. जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

जैसे- हार-गले में पहने जाने वाली माला।

हार-पराजय।

दिये गये अनेकार्थी शब्दों के अर्थ लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए-

कर, मन, सोना, पत्र

5. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। निम्नलिखित पंक्तियों में आये हुए विशेषणों को रेखांकित कीजिए-

(क) बढ़िया नौकरी से छुड़ाकर लाया हूँ।

(ख) दफ़्तर सचमुच शाही दफ़्तर हो गया है।

(ग) उन्होंने तेज आवाज में पूछा।

(घ) उसने राजा को रद्दी लिफ़ाफ़ों की कहानी सुनाई।

(ड़.) सभी मंत्री महल के एक बड़े से कमरे में आ गये।

(च) सभी मंत्री बहुत लज्जित हुए।

इसे भी जानें

‘रॉक गार्डन आॅफ चंडीगढ़‘ एक शिल्पकृत गार्डन अर्थात उद्यान है जो भारत के चंडीगढ़ राज्य में स्थित है। इसे मुख्यतः नेक चन्द सैनी‘ गार्डन के नाम से भी जाना जाता है। लगभग 40 एकड़ मंे फैले इस गार्डन को ‘नेकचन्द सैनी’ ने कूड़े-करकट तथा बेकार की वस्तुएँ जैसे- सिरामिक, प्लास्टिक बोतलें, पुरानी तथा टूटी चूड़ियाँ, फ्यूज बल्ब, होल्डर तथा टूटी टाइल्स आदि से बनाया है।

पाठ 3

48ST2L

आप भले तो जग भला

(इस पाठ में लेखक ने कहा है कि हमें केवल अपने से ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए। हमें दूसरों के विचारों का भी सम्मान करना चाहिए। यदि हम दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे तो वे भी हमारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।)

एक विशाल काँच के महल में न जाने किधर से एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। हजारों काँचों के टुकड़ों में अपनी शक्ल देखकर वह चैंका। उसने जिधर नजर डाली, उधर ही हजारों कुत्ते दिखायी दिये। वह समझा कि ये सब उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी शान दिखाने के लिए वह भौंकने लगा, उसे सभी कुत्ते भौंकते हुए दिखायी पड़े। उसकी आवाज की ही प्रतिध्वनि उसके कानों में जोर-जोर से आती। उसका दिल धड़कने लगा। वह और जोर से भौंका। सब कुत्ते भी अधिक जोर से भौंकते दिखायी दिये। आखिर वह उन कुत्तों पर झपटा, वे भी उस पर झपटे। बेचारा जोर-जोर से उछला, कूदा, भौंका और चिल्लाया। अन्त में गश खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद उसी महल में एक दूसरा कुत्ता आया। उसको भी हजारों कुत्ते दिखायी दिये। वह डरा नहीं, प्यार से उसने अपनी दुम हिलायी। सभी कुत्तों की दुम हिलती दिखायी दी। वह खूब खुश हुआ और कुत्तों की ओर अपनी पूँछ हिलाता बढ़ा। सभी कुत्ते उसकी ओर दुम हिलाते बढ़े। वह प्रसन्नता से उछला-कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया।

जब मैं अपने एक मित्र को हमेशा परेशान, नाराज और चिड़चिड़ाते देखता हूँ तब इसी किस्से का स्मरण हो जाता है। मैं उनकी मिसाल भौंकने वाले कुत्ते से नहीं देना चाहता। यह तो बड़ी अशिष्टता होगी। पर इस कहानी से वे चाहें तो कुछ सबक जरूर सीख सकते हैं।

दुनिया काँच के महल जैसी है। अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। 'आप भले तो जग भला','आप बुरे तो जग बुरा'। अगर आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों के दोषों को न देखकर उनके गुणों की ही ओर ध्यान देते हैं तो दुनिया भी आपसे नम्रता और प्रेम का बर्ताव करेगी। अगर आप हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखते हैं, उन्हें अपना शत्रु समझते हैं और उनकी ओर भौंका करते हैं तो फिर वे क्यों न आपकी ओर गुस्से से दौड़ेंगे? अंग्रेजी में एक कहावत है कि अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी, पर अगर आपको गुस्सा होना और रोना ही है तो दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना ही हितकर होगा।

अमेरिका के मशहूर नेता अब्राहम लिंकन से किसी ने एक बार पूछा, "आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?"

उन्होंने जरा देर सोचकर उत्तर दिया, "मैं दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता।"

मेरे मित्र की यही खास गलती है। वे दूसरों का दृष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। दूसरों के विचारों की, कामों की, भावनाओं की आलोचना करना ही अपना परम धर्म समझते हैं।

उनका शायद यह ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए ही भेजा है। पर वे यह भूल जाते हैं कि शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर जहर के।

दुनिया में पूर्ण कौन है? हर एक में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रहती हैं। प्रत्येक व्यक्ति से गलतियाँ होती हैं। फिर एक-दूसरे को सुधारने की कोशिश करना अनुचित ही समझना चाहिए।

जैसा ईसा ने कहा था, "लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।" दूसरों को सीख देना तो बहुत आसान काम है, अपने ही आदर्शों पर स्वयं अमल करना कठिन है। अगर हम अपने को ही सुधारने का प्रयत्न करें और दूसरों के अवगुणों पर टीका-टिप्पणी करना बन्द कर दें तो हमारे मित्र जैसा हमारा हाल कभी नहीं होगा।इसी सिलसिले में एक बात और। आप तो दूसरों की नुक्ताचीनी नहीं करेंगे, ऐसी उम्मीद है, पर दूसरे ही अगर आपकी नुक्ताचीनी करना न छोड़ें तो? मेरे मित्र अपनी बुराई या आलोचना सुनकर आगबबूला हो जाते हैं, भले ही वह दुनिया की दिनभर बुराई करते रहें। पर आपके लिए तो ऐसे मौके पर दादू की पंक्तियाँ गुनगुना लेना बड़ा कारगर होगा:

निन्दक बाबा वीर हमारा, बिनहीं कौड़ी बहै बिचारा।

आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे।।

अगर सचमुच कुछ त्रुटियाँ हैं, जिनकी ओर 'निन्दक' हमारा ध्यान खींचता है तो उन अवगुणों को दूर करना हम सभी का कर्तव्य हो जाता है। जिसने उनकी ओर ध्यान दिलाया उसका उपकार ही मानना चाहिए। एक दिन एक सज्जन से कुछ गलती हो गयी। हमारे मित्र तुरन्त बिगड़कर बोले, "देखिए महाशय यह आपकी सरासर गलती है, आइन्दा ऐसा करेंगे तो ठीक नहीं होगा।" बेचारे महाशय जी बड़े दुःखी हुए। उनका अपमान हो गया। मन में क्रोध जागृत हुआ और वे बिना कुछ उत्तर दिये ही उठकर चले गये। दूसरे दिन मैंने उन महाशय जी से एकान्त में कहा, "देखिए, गलती तो सभी से होती है। ऐसी गलती मैं भी कर चुका हूँ। दुखी होने का कोई कारण नहीं। आप तो बड़े समझदार हैं। कोशिश करें तो यह क्या, बड़ी से बड़ी गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं। ठीक है न?"

उनकी आँखों में आँसू छलछला आये। बड़े प्रेम से बोले, "जी हाँ, मैं अपनी गलती मानता हूँ। आगे भला मैं वही गलती क्यों करने लगा! पर कोई मुहब्बत से पेश आये तब न! आदमी प्रेम का भूखा रहता है।"

जब सरदार पृथ्वीसिंह ने हिंसा का मार्ग त्यागकर अपने को बापू के सामने अर्पण कर दिया तब बापू को बहुत खुशी और सन्तोष हुआ। पर बापू जहाँ प्रेम और सहानुभूति की

मूर्ति थे, वहाँ बड़े परीक्षक भी थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने पृथ्वीसिंह से कहा, ”सरदार साहब, अगर आप सेवाग्राम में आकर मेरे आश्रम में रह सकें तभी मैं समझूँगा कि आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है।“

पृथ्वीसिंह जरा चौंककर बोले, "आपका क्या मतलब बापू जी?"

"भाई, मेरा आश्रम तो एक प्रयोगशाला जैसा ही है। जिन लोगों की कहीं नहीं बनती, अक्सर वे मेरे पास आ जाते हैं। उन सबको एक-साथ रखने में मैं सीमेंट का काम करता हूँ और वह सीमेंट मेरी अहिंसा ही है।"

"मैं समझ गया, बापू जी!“ पृथ्वीसिंह ने मुस्कराकर कहा। आगे की कहानी यहाँ कहने की

श्रीमन्नारायण

श्रीमन्नारायण का जन्म सन् 1912 ई0 को इटावा में हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा कोलकाता तथा प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई। आप गांधीवादी आर्थिक सिद्धान्तों के विशेषज्ञ माने जाते हैं। आप भारत सरकार के योजना आयोग के सदस्य तथा गुजरात प्रान्त के राज्यपाल भी रह चुके हैं। श्रीमन्नारायण का शुरू से ही साहित्य के प्रति अनुराग था। आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं- ‘रोटी का राग’ तथा ‘मानव’। इनका निधन सन् 1978 में हो गया।

शब्दार्थ

प्रतिध्वनि = किसी वस्तु से टकराकर वापस आयी ध्वनि। **गश खाना** = मूर्च्छित होना। **मिसाल** = नमूना, नजीर, दृष्टान्त। **सबक** = शिक्षा, पाठ। **बर्ताव** = व्यवहार। **ऐब** = दोष , खोट, बुराई। **नुक्ताचीनी** = दोष निकालने का काम, छिद्रान्वेषण। **खास** = विशेष। **शहतीर** = पाटन के नीचे लगने वाली कड़ी। **अमल** = व्यवहार। **दादू** = भक्तिकालीन प्रसिद्ध कवि।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. पाठ में अनेक महापुरुषों जैसे- अब्राहम लिंकन, महात्मा गाँधी, ईसामसीह, सुकरात आदि द्वारा कही गयी बातों का उपयोग दृष्टान्तों के रूप में किया गया है। अन्य महापुरुषों ने भी विभिन्न विषयों पर इस तरह की बातें कहीं हैं। उनका संकलन कीजिए और उन्हें कागज पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखकर कक्षा की दीवारों पर चिपकाइए।

2. इस पाठ का शीर्षक ”आप भले तो जग भला“ है। यह एक लोकोक्ति है। इस तरह की अनेक लोकोक्तियाँ दैनिक बोलचाल में प्रचलित हैं। किन्हीं पाँच लोकोक्तियों का संकलन कीजिए और उनका भाव अपने शब्दों में लिखिए।

विचार और कल्पना

(क) हम महापुरुषों की वाणी और अपने से श्रेष्ठ जनों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। वे लोग जैसा कहते हैं वैसा ही करते हैं। ऐसे लोग हमें शीघ्र प्रभावित कर लेते हैं। आपके परिवार तथा विद्यालय के जिस व्यक्ति ने आपको विशेष रूप से प्रभावित किया हो, उसके गुणों, व्यवहार के विषय में संक्षेप में अपने विचार लिखिए।

(ख) पाठ में लेखक द्वारा अपनी बात स्पष्ट करने के लिए कई दृष्टान्त (उदाहरण) दिये गये हैं। बताइए इनमें से आपको कौन सा उदाहरण सबसे अच्छा लगा और क्यों?

निबन्ध से

1. "आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?" इस प्रश्न का अब्राहम लिंकन ने क्या जवाब दिया?

2. गाँधी जी ने अपने आश्रम को प्रयोगशाला क्यों कहा?

3. पाठ के शीर्षक ‘आप भले तो जग भला’ का क्या आशय है?

4. नीचे दी गयी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) दुनिया काँच के महल जैसी है, अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है।

(ख) अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी।

(ग) शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर जहर के।

(घ) लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।

5. प्रश्नों में उत्तर के रूप में चार विकल्प दिये गये हैं, सही विकल्प पर सही का चिह्न लगाइए-

(क) लोग आपसे प्रेम और नम्रता का बर्ताव करेंगे, जब आप-

1. हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखेंगे।

2. लोगों को अपना शत्रु समझेंगे।

3. लोगों की ओर गुस्से से दौड़ेंगे।

4. लोगों के दोष न देखकर उनके गुणों की ओर ध्यान देंगे।

(ख) बापू के किस गुण के कारण लोग उनकी ओर आकृष्ट होते थे-

1. आलोचना 2. अनुशासन

3. कठोरता 4. प्रेम और सहानुभूति

भाषा की बात

1. नीचे दिये गये मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

टूट पड़ना, दुम हिलाना, दिल दुखाना, नुक्ताचीनी करना, आगबबूला होना, चुटकी लेना, दिमाग चढ़ना।

2. (क) आप तो बड़े समझदार हैं। -साधारण वाक्य

(ख) शायद कुछ लोगों का ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए भेजा है। -मिश्र वाक्य

(ग) वह प्रसन्नता से उछला कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया। -संयुक्त वाक्य

ऊपर तीन तरह के वाक्य दिये गये हैं- साधारण, मिश्र और संयुक्त। पाठ में आये हुए इन तीनों प्रकार के कम से कम दो-दो वाक्यों को छाँटकर लिखिए।

3. 'यह तो बड़ी अशिष्टता होगी।' इस वाक्य में 'अशिष्टता' शब्द भाववाचक संज्ञा है। भाववाचक संज्ञा शब्दों के अन्त में ता, पन, पा, हट, वट, त्व, आस प्रत्यय जुड़े रहते हैं। पाठ में आये हुए अन्य भाववाचक संज्ञा शब्दों को छाँटकर लिखिए।

इसे भी जानें

"भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है-बोलना और कहना।"

मंजरी-6

पाठ 4

492P49

नीति के दोहे

(दिये गये कबीर और रहीम के दोहों में आचार-विचार सम्बन्धी जीवन-मूल्यों का वर्णन है।)

कबीरदास

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।

मुई खाल की स्वाँस सो, सार भसम ह्वै-जाय।।

मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।

स्रवन द्वार ह्वै संचरे, सालै सकल सरीर।।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो दिल खोजा आपनो, मुझ-सा बुरा न कोय।।

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।

सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय ।।

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।

माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आए फल होय।।

कबीरदास जी का जन्म काशी में सन् 1398 ई0 के लगभग हुआ था। भक्तिकाल के निर्गुण धारा के सन्त कवियों में कबीरदास का विशिष्ट स्थान है। रामानन्द कबीर के गुरु माने जाते हैं। उन्होंने भक्ति विषयक रचनाओं के साथ ही समाज- सुधार की कविताएँ भी लिखीं। इनकी रचनाओं का संग्रह 'बीजक' है। इसके तीन भाग हैंः 'साखी', 'सबद', 'रमैनी'। कबीरदास की मृत्यु सन् 1518 ई0 के लगभग मगहर में हुई ।

रहीम

वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।

बाटनवारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग।।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।।

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।

सुनी अठिलैहंे लोग सब, बाँटि न लैहें कोय।।

जो बड़ेन को लघु कहें, नहिं रहीम घटि जाँहि।

गिरधर मुरलीधर कहे, कछु दुःख मानत नांिहं।।

समय लाभ सम लाभ नहिं, समय चूक सम चूक।

चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक।।

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।

सुनी अठिलैहें लोग सब, बाँटि न लैहें कोय।।

जो बड़ेन को लघु कहें, नहिं रहीम घटि जाँहि।

गिरधर मुरलीधर कहे, कछु दुःख मानत नाहिं।।

समय लाभ सम लाभ नहिं, समय चूक सम चूक।

चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक।।

रहीम का जन्म सन् 1556 ई0 के लगभग हुआ था। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। अकबर के दरबार के नवरत्नों में इन्हें स्थान प्राप्त था। ये अरबी, फारसी तथा संस्कृत भाषा के विद्वान थे। इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं- 'रहीम सतसई', 'रास पंचाध्यायी'। इनकी मृत्यु सन् 1626 ई0 में हुई|

शब्दार्थ

औषधी = दवा। **कटुक** = कड़वा। **सालै** = बेधता है। **बाटनवारे** = सिलबट्टे पर पीसने वाला। **सार** = उपयोगी। **सुभाय** = स्वभाव/व्यवहार, **थोथा** = व्यर्थ/अनुपयोगी। **बिथा** = व्यथा, दुख। **गोय** = छिपाना/छिपाकर। **हूक** = कसक।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. बाल अखबार में हर बार एक नीति परक वाक्य लिखिए और कक्षा में लगाइए|

2. शिक्षक की मदद से कक्षा के सभी बच्चे दो भागों में बंट जाएँ| इनमें से एक भाग के बच्चे कबीर, दूसरे भाग के बच्चे रहीम के दोहे याद करने की ज़िम्मेदारी लें| बाल सभा में इन कवियों की रचनाओं पर आधारित 'कवि दरबार' का आयोजन करें|

3. रेडियो, टेलीविज़न तथा इन्टरनेट के माध्यम से इन कवियों की रचनाओं को सुनकर, देखकर गायन का अभ्यास कीजिये|

पाठ से

1. नीचे कुछ वाक्य लिखे गए हैं| इनसे सम्बंधित दोहों को उसी क्रम में लिखिए -

(क) मधुर वाणी औषधि का काम करती है तथा कठोर वाणी तीर की तरह मन को बेध देती है|

(ख) कोई भी कार्य समय पर ही होता है।

(ग) अपने दुख को कहीं उजागर नही करना चाहिए।

(घ) परोपकार करने वाले लोग प्रशंसनीय होते हैं।

(ङ) दूसरे लोगों में बुराई देखना ठीक नहीं।

2. निम्नांकित पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिए -

(क) स्रवन द्वार ह्वै संचरे, सालै सकल सरीर।

(ख) पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।

(ग) बाटनवारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग।

(घ) जो दिल खोजा आपनो, मुझ-सा बुरा न कोय।

(ङ) चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक।

3. माली के द्वारा लगातार पेड़ों को सींचने पर भी फल क्यों नहीं आते हैं ?

4. अपने मन की व्यथा को मन में ही क्यों रखना चाहिए ?

भाषा की बात

1. 'स्रवन द्वार ह्वै संचरे, सालै सकल सरीर'- पंक्ति में 'स' वर्ण की आवृत्ति कई बार होने से कविता की सुन्दरता बढ़ गयी है। जहाँ एक वर्ण की आवृत्ति बार-बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। अनुप्रास अलंकार के कुछ अन्य उदाहरण पुस्तक से ढूँढ़कर लिखिए।

2. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।।

उपर्युक्त दोहे में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं-

मोती के अर्थ में - कान्ति

मनुष्य के अर्थ में - स्वाभिमान

चूना के अर्थ में - जल

एक ही शब्द के कई अर्थ होने से यहाँ श्लेष अलंकार है। श्लेष अलंकार का एक और उदाहरण दीजिए।

3. पाठ में आये निम्नलिखित तद्भव शब्दों का तत्सम रूप लिखिए-

भसम, औषधी, सत, सरीर, मानुस, सबद, किरपा, हरख।

4. कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनके अलग-अलग अर्थ होते हैं, जैसे- 'तीर' शब्द के अर्थ हैं 'बाण' और 'नदी का किनारा।' निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए-

पट, दर, कर, जड़, गोली, सारंग।

इसे भी जानें

हिन्दी के नौ रत्न- कबीर, तुलसी, सूर, देव, भूषण, मतिराम, बिहारी, चन्दबरदाई और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी के नवरत्न माने जाते हैं।

संस्कृत साहित्य में नीति वचनों की समृद्ध परम्परा रही है। हिन्दी में कबीर, रहीम के अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास ने भी नीतिपरक दोहों की रचना की है। तुलसी के नीतिपरक दोहों को भी पढ़ें और समझें।

1. चरन चोंच लोचन रंगौ, चलौ मराली चाल।

छीर नीर बिबरन समय, बक उघरत तेहि काल।।

2. आपु आपु कहँ सब भलो, अपने कह कोइ कोइ।

तुलसी सब कहँ जो भलो, सुजनसराहिअ सोइ

पाठ 5

49BK5H

मेरी माँ

(प्रस्तुत पाठ में अमर शहीद राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने अपनी माँ के प्रति श्रद्धा-भक्ति व्यक्त की है।)

ग्यारह वर्ष की उम्र में माता जी विवाह कर शाहजहाँपुर आयी थीं। शाहजहाँपुर आने के थोड़े दिनों बाद ही दादी जी ने अपनी छोटी बहिन को बुला लिया। उन्हीं ने गृह-कार्य में माता जी को शिक्षा दी। थोड़े ही दिनों में माता जी ने सब गृह-कार्य को समझ लिया और भोजनादि का ठीक-ठीक प्रबन्ध करने लगीं। मेरे जन्म के पाँच या सात वर्ष बाद आपने हिन्दी पढ़ना आरम्भ किया। पढ़ने का शौक आपको खुद ही पैदा हुआ था। मोहल्ले की संग-सहेली जो घर पर आ जाती थीं, उन्हीं में जो कोई शिक्षित थीं, माता जी उनसे अक्षर-बोध करतीं। इसी प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता उसमें पढ़ना-लिखना करतीं। परिश्रम के फल से थोड़े दिनों में ही वे देवनागरी पुस्तकों का अवलोकन करने लगीं। मेरी बहिनों को छोटी आयु में माता जी ही शिक्षा दिया करती थीं। जबसे मैंने आर्यसमाज में प्रवेश किया, तब से माता जी से खूब वार्तालाप होता। यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं, तो मैं भी अति साधारण मनुष्य की भाँति संसार चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता। शिक्षा के अतिरिक्त क्रान्तिकारी जीवन में भी आपने मेरी वह सहायता की है, जो मेजिनी को उनकी माता ने की थी। यथा-समय मैं उन सारी बातों का उल्लेख करूँगा। माता जी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था कि किसी की प्राणहानि न हो। उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना। आपके इस आदेश की पूर्ति करने के लिए मुझे मजबूरन दो-एक बार अपनी प्रतिज्ञा भंग भी करनी पड़ी थी। जन्मदात्री जननी, इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण-परिशोध करने के प्रयत्न करने

का भी अवसर न मिला; इस जन्म में तो क्या यदि अनेक जन्मों में भी सारे जीवन प्रयत्न करूँ तो तुमसे उऋण नहीं हो सकता। जिस प्रेम तथा दृढ़ता के साथ तुमने इस तुच्छ जीवन का सुधार किया है, वह अवर्णनीय है। मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि तुमने किस प्रकार अपनी दैवी वाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया है। तुम्हारी दया से ही मैं देश-सेवा में संलग्न हो सका। धार्मिक जीवन में भी तुम्हारे ही प्रोत्साहन ने सहायता दी। जो कुछ शिक्षा मैंने ग्रहण की उसका भी श्रेय तुम्हीं को है। जिस मनोहर रूप से तुम मुझे उपदेश करती थीं उसका स्मरण कर तुम्हारी स्वर्गीय मूर्ति का ध्यान आ जाता और मस्तक नत हो जाता है। तुम्हें यदि मुझे ताड़ना भी देनी हुई तो तुमने प्रेम-भरे शब्दों में यही कहा कि तुम्हें जो अच्छा लगे वह करो, किन्तु ऐसा करना ठीक नहीं इसका परिणाम अच्छा न होगा। जीवनदात्री! आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं। जन्म-जन्मान्तर परमात्मा ऐसी ही माता दें। यही इच्छा है।

महान से महान संकट में भी तुमने मुझे अधीर न होने दिया। सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी सुनाते हुए मुझे सान्त्वना देती रहीं। तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन भर में कोई कष्ट न अनुभव किया। इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक तृष्णा है। वह यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता। किन्तु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखायी देती। तुम्हें मेरी मृत्यु का दुखद संवाद सुनाया जायेगा। माँ मुझे विश्वास है, तुम यह समझकर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता- भारतमाता की सेवा में अपने जीवन को बलिवेदी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारे कुल को कलंकित न किया; अपनी प्रतिज्ञा में दृढ़ रहा। जब स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जायेगा, तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जायेगा। गुरु गोविन्द सिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु का संवाद सुना था तो बहुत हर्षित हुईं और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई बाँटी थीं। जन्मदात्री! वर दो कि अन्तिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण-कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करूँ।

- रामप्रसाद ‘बिस्मिल’

भारत के अमर क्रान्तिकारियों में श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका जन्म 4 जून सन् 1897 ई0 को मैनपुरी में हुआ था। ब्रिटिश सरकार का विरोध करने पर 19 दिसम्बर सन् 1927 ई0 को इन्हें गोरखपुर जिला जेल में फाँसी दी गयी। क्रान्तिकारी होने के साथ-साथ वे साहित्यिक रुचि के धनी, सफल रचनाकार थे। इन्होंने आत्मकथा, जीवनी, उपन्यास, समीक्षा, लेख, अनुवाद, कविता आदि अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलायी। इनकी प्रमुख रचनाएँ- 'निज जीवन की छटा' (आत्मकथा), 'मन की लहर' (कविता संकलन), 'बोलशेविकों की करतूत' (उपन्यास), 'केथोराइन' (जीवनी) आदि हैं।

शब्दार्थ

नितान्त=एकदम, बिल्कुल। **सदृश**=समान। **अक्षर-बोध**=वर्ण-ज्ञान। **अवलोकन**=देखना, निरीक्षण करना। **वार्तालाप**=बातचीत। **मेजिनी** = सन् 1805 ई0 में इटली में जन्मे महान देशभक्त व क्रान्तिकारी थे। **निर्वाह**=पूरा किया जाना, गुजारा। **जन्मदात्री**=जन्म देने वाली। **परिशोध**=ऋण आदि का भुगतान, चुकता। **उऋण**=ऋण से मुक्त। **अवर्णनीय**=जो वर्णन करने योग्य न हो। **संलग्न**=चिपका हुआ, लगा हुआ। **श्रेय** = यश। **ताड़ना**=सुधार के उद्देश्य से मारना। **परिणाम**=फल। **सान्त्वना**=ढाढस बँधाना, तसल्ली। **तृष्णा**=अप्राप्त वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा, लोभ। **बलिवेदी की भेंट**=न्योछावर होना। **विचलित** = अस्थिर, चंचल।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के विचारों को पत्र-पत्रिकाओं से एकत्र कर संकलन बनाइए।

2. शहीद रामप्रसाद ‘बिस्मिल’ के विषय में अपने पुस्तकालय से जानकारियाँ एकत्र कीजिए।

विचार और कल्पना

(1) अगर घर की माताएँ पढ़ी-लिखीं हो तो वे घर को कैसे स्वर्ग बना सकतीं हैं, अपने विचार लिखिए।

(2) पाठ मंे लेखक ने अपनी माँ के बारे में अपने विचार व्यक्त किये हैं। इसी आधार पर आप भी अपनी माँ के बारे में अपने विचार लिखिए।

पाठ से

1. नीचे दिये गये प्रश्नों में उत्तर के रूप में तीन विकल्प दिये गये हैं। सही विकल्प पर सही का निशान लगाइए-

अ. बिस्मिल की माँ का विवाह-

(क) ग्यारह वर्ष की अवस्था में हुआ था।

(ख) अठारह वर्ष की अवस्था में हुआ था।

(ग) बीस वर्ष की अवस्था में हुआ था।

ब. बिस्मिल के क्रान्तिकारी जीवन में उनकी माँ ने उनकी वैसी ही सहायता की, जैसे-

(क) भगत सिंह की उनकी माँ ने की थी।

(ख) चन्द्रशेखर आजाद की उनकी माँ ने की थी।

(ग) मेजिनी की उनकी माँ ने की थी।

स. बिस्मिल ने माता को धैर्य धारण करने के लिए कहा, क्योंकि उनका पुत्र-

(क) कायर का जीवन नहीं जीना चाहता था।

(ख) छिपकर नहीं रहना चाहता था।

(ग) भारतमाता की सेवा में प्राणों की बलि चढ़ाना चाहता था।

2. बिस्मिल की माँ ने पढ़ना-लिखना कैसे सीखा?

3. रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने कहा था-''इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक तृष्णा है ....।'' वह तृष्णा क्या थी ? लिखिए।

4. इस पाठ की किन-किन बातों ने आपको प्रभावित किया ? क्यों?

भाषा की बात

1. 'प्रबन्ध' में 'प्र', 'परिश्रम' में 'परि', 'अवलोकन' में 'अव', 'निर्वाह' में 'निर्' उपसर्ग लगे हैं। इन्हीं उपसर्गों की सहायता से तीन-तीन नये शब्द बनाइए।

2. 'अवर्णनीय' में 'ईय' और 'धार्मिक' में 'इक' प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों की सहायता से चार-चार नये शब्द बनाइए।

3. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए-

परमात्मा, प्रत्येक, भोजनादि, सदैव।

4. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका सम्बन्ध सूचित हो, उसे 'कारक' कहते हैं। कारकों के बोध के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो चिह्न लगाये जाते हैं, उन्हें व्याकरण में 'विभक्तियाँ' कहते हैं। इन्हें 'परसर्ग' भी कहते हैं। हिन्दी कारकों की विभक्तियों के चिह्न इस प्रकार हैं- ने, को, से (के द्वारा), के लिए, से (अलग

होने के अर्थ में) का, के, की, रा, रे, री, में (पर)। अब आप कोष्ठक में दिये गये कारक चिह्नों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- (के, ने, को, की, में, से, के लिए।)

(क) शाहजहाँपुर आने .... थोड़े दिनों के बाद दादी जी ....अपनी छोटी बहन .... बुला लिया।

(ख) तुम्हारी दया .... छाया .... मैंने अपने जीवनभर......... कोई कष्ट न अनुभव किया।

(ग) तुम्हारी दया .... ही मैं देश-सेवा में संलग्न हो सका।

(घ) आप .... आदेश ..... पूर्ति करने ..... मुझे अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी।

5. कर्ता, कर्म, क्रिया- यह हिन्दी वाक्य रचना का सामान्य पद क्रम है, जैसेः राम ने पुस्तक पढ़ी। कभी-कभी यह सामान्य पदक्रम बदल दिया जाता है जो सही नहीं है। जैसे-

(क) पुस्तक राम ने पढ़ी।

(ख) पढ़ी राम ने पुस्तक।

(ग) राम ने पढ़ी पुस्तक।

नीचे दिये गये वाक्यों को सही पदक्रम में लिखिए-

(क) बुला लिया अपनी छोटी बहिन को दादी ने।

(ख) अवलोकन करने लगी देवनागरी पुस्तकों का।

(ग) भंग करनी पड़ी थी मुझे अपनी प्रतिज्ञा।

(घ) ध्यान आ जाता तुम्हारी स्वर्गीय मूर्ति का मुझे।

6. ग्यारह वर्ष की उम्र में, मेरे जन्म के पाँच या सात वर्ष बाद, मेरी बहनों की छोटी आयु में, केवल एक तृष्णा है आदि शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दो तो पता चलेगा कि इनमें 'ग्यारह', 'पाँच', 'छोटी आयु', 'केवल एक' शब्द से संख्या या परिमाण का बोध या आभास होता है, क्योंकि ये संख्या वाचक विशेषण हैं। इनमें 'ग्यारह', 'पाँच', 'सात' तथा 'एक' से निश्चित संख्या का बोध होता है, इसलिए इनको निश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं। 'छोटी आयु' से अनिश्चित संख्या का बोध होने से इसे अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।

अब आप नीचे लिखे वाक्यों को पढ़कर उनके विशेषण के भेदों को लिखिए-

(क) सभी सदस्य खा रहे हैं। (ख) कुछ लोग टहल रहे हैं।

(ग) मुझे दो दर्जन केले दे दो। (घ) मैंने पचास रुपये का आम खरीदा।

7. इस पाठ की जिन बातों से आप प्रभावित हुए हों उन्हें अपनी कॉपी पर लिखिए।

इसे भी जानें

"सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,

देखना है ज़ोर कितना बाज़ु-ए-कातिल में है।"

-रामप्रसाद 'बिस्मिल'

पाठ 6

49KG7J

क्यों क्यों लड़की

(प्रस्तुत पाठ में एक आदिवासी लड़की के विचारों में जिज्ञासा, जीवन संघर्ष तथा कार्य करने की लगन को रोचक संवाद शैली में प्रस्तुत किया गया है|)

'पर क्यों?'

छोटी सी लड़की थी वह, करीब दस साल की| एक बड़े से सांप का पीछा कर रही थी| मैं उसके पीछे भागी, उसकी चोटियाँ पकड़ घसीट कर लायी, उस पर चिल्लाई, ' ना मोइना, ना !'

'क्यों?' उसने पूछा|

'वो कोई धामन -वामन नहीं है, नाग है, नाग !

'तो नाग को क्यों न पकडूँ?'

'क्यों?'

अरे 'काट लेगा'

'नहीं, इस बार नहीं |'

'पर क्यों ?'

मैं उसे ऑफिस तक घसीट कर लायी | वहां उसकी माँ खीरी एक टोकरी बुन रही थी |

'चलो थोडा आराम कर लो ' मैंने कहा |

'क्यों ?'

'क्यों नहीं ? थकी नहीं हो क्या ?'

मोइना ने सिर हिलाया | 'बाबू की बकरियां कौन घर लाएगा ? और लकड़ी लाना, पानी लाना, चिड़िया पकड़ने का फंदा लगाना, ये सब कौन करेगा?'

खीरी ने कहा, 'बाबू ने जो चावल भेजा है, उसके लिए उसे धन्यवाद देना न भूलना |'

'क्यों? क्यों दूँ धन्यवाद उसे ? उसकी गोशाला धोती हूँ, हजारों काम करती हूँ उसके लिए कभी धन्यवाद देता है, मुझे? मैं क्यों उसे धन्यवाद दूँ ?'

मोइना अपने काम पर भाग गयी | खीरी सिर हिलाती रह गयी | 'ऐसा बच्चा नहीं देखा कभी | बस कहती रहती है 'क्यों ? क्यों ? - गाँव के पोस्टमास्टर ने तो उसे 'क्यों -क्यों लड़की' का नाम दे रखा है |'

'मुझे तो अच्छी लगती है मोइना |'

'इतनी जिद्दी है कि एक बात पकड़ ले तो उससे हटती नहीं |'

मोइना आदिवासी लड़की थी, शबर जाति की | शबर लोग गरीब और भूमिहीन थे पर बाकी शबर लोग कभी शिकायत करते सुनायी नहीं देते थे, सिर्फ मोइना ही थी जो सवाल पर सवाल करे जाती।

'क्यों मुझे मीलों चलना पड़ता है; नदी से पानी लाने के लिए? क्यों रहते हैं; हम पत्तों की झोपड़ी में? हम दिन में दो बार चावल क्यों नहीं खा सकते?'

मोइना गाँव के बाबुओं की बकरियाँ चराने का काम करती, पर न तो वह अपने आप को दीन-हीन समझती, न ही मालिकों का अहसान मानती। वह अपना काम करती, घर आ जाती, और बुदबुदाती रहती, 'क्यों उनका बचा-खुचा खाऊँ मैं? मैं तो बढ़िया खाना बनाऊँगी शाम को। हरे पत्ते, चावल, केकड़े और मिर्ची वाला-और सारे घर वालों के साथ बैठ कर खाऊँगी।'

वैसे शबर लोग आम तौर पर अपनी लड़कियों को काम पर नहीं भेजते हैं, पर मोइना की माँ एक पैर से लँगड़ाती थी। वह ज्यादा चल फिर नहीं सकती थी। उसके पिता दूर जमशेदपुर काम की तलाश में गये हुए थे और उसका भाई गोरो जलाऊ लकड़ी लाने जंगल जाता था। सो, मोइना को भी काम पर जाना पड़ता था।

उस अक्टूबर में मैं समिति के साथ वहाँ पूरा एक माह रुकी। एक सुबह मोइना ने घोषणा की कि वह समिति वाली झोपड़ी में मेरे साथ रहेगी।

'बिल्कुल नहीं,' खीरी ने कहा।

'क्यों नहीं, इतनी बड़ी झोपड़ी है। एक बुढ़िया को कितनी जगह चाहिए?'

'तुम्हारे काम का क्या होगा?'

'काम के बाद आया करूँगी।'

और वह एक जोड़ी कपड़े और एक नेवले का बच्चा लिये आ पहुँची। ‘ये बस जरा-सा खाता है और बुरे साँपों को दूर भगा आता है,’ उसने कहा। ‘अच्छे वाले साँपों को मैं पकड़ कर माँ को दे देती हूँ।’

हमारी समिति की शिक्षिका मालती बोनाल ने मुझसे कहा, ‘आप तो तंग आ जायेंगी इसकी ‘क्यों-क्यों’ सुनते हुए।’ और वाकई, वह अक्टूबर ऐसा बीता कि पूछो मत! क्यों मुझे बाबू की बकरियाँ चरानी पड़ती हैं? उसके लड़के खुद ही कर सकते हैं। मछलियाँ बोल क्यों नहीं पातीं ?

अगर कई सारे तारे सूरज से भी बड़े हैं तो वो इतने छोटे क्यों नजर आते हैं? ‘और हर रात को तुम सोने के पहले किताबें क्यों पढ़ती हो ?’

‘क्योंकि किताबों में तुम्हारी ‘क्यों-क्यों’ के जवाब मिलते हैं।’

इस एक बार मोइना चुप रही। उसने कमरा ठीक-ठाक किया रंगन के फूलों वाले झाड़ को पानी दिया, नेवले को मछली दी। फिर उसने कहा, ‘मैं पढ़ना सीखूँगी और अपने सारे सवालों के जवाब ढूँढ़ निकालूँगी।’

जो-जो वह मुझसे सीखती, वह बकरियाँ चराते समय दूसरे बच्चों को बताती। ‘कई तारे तो सूरज से भी बड़े हैं। सूरज पास है इसलिए बड़ा दिखता है.. मछलियाँ हमारी तरह बातें नहीं करतीं। मछलियों की अपनी भाषा है, जो सुनायी नहीं देती.. तुम्हें पता है, पृथ्वी गोल है।’

एक साल बाद जब मैं उस गाँव में दुबारा पहुँची तो सबसे पहले सुनायी दी मोइना की आवाज। ‘स्कूल क्यों बन्द है?’ -समिति के स्कूल के अन्दर एक मिमियाती बकरी को अपने साथ घसीटते हुए उसने मालती को ललकारा।

क्या मतलब है तुम्हारा ‘क्यों बन्द है?’

‘मैं भी क्यों न पढ़ूँ।’

‘तो तुम्हें रोक कौन रहा है?’

‘पर कोई कक्षा ही नहीं लगी।’

‘स्कूल पूरा हो चुका।’

‘क्यों?’

‘तुम जानती हो मोइना, मैं सुबह नौ से ग्यारह बजे तक कक्षा लगाती हूँ।’

मोइना ने पाँव पटक कर कहा, ‘तुम समय बदल क्यों नहीं सकती? मुझे बाबू की बकरियाँ चरानी होती हैं, सुबह। मैं तो सिर्फ ग्यारह बजे के बाद ही आ सकती हूँ। तुम पढ़ाओगी नहीं तो मैं सीखूँगी कहाँ से? मैं बूढ़ी माँ को बता दूँगी कि बकरी चराने वाले या गाय चराने वाले, हम में से कोई भी नहीं आ सकेगा, अगर स्कूल का समय नहीं बदला तो।’

तभी उसने मुझे देखा और अपनी बकरी ले भाग खड़ी हुई।

शाम को मैं मोइना की झोपड़ी पर गयी। चौके की अंगार के पास मजे से बैठी मोइना अपनी छोटी बहिन और बड़े भाई को बता रही थी, ‘एक पेड़ काटो तो दो पेड़ लगाओ। खाने के पहले हाथ धो लो, जानते हो क्यों? पेट दर्द हो जायेगा अगर नहीं धोओगे तो। तुम कुछ नहीं जानते हो क्यों? क्योंकि तुम समिति की कक्षा में नहीं जाते।’

तुम्हें क्या लगता है, गाँव में जब प्राइमरी स्कूल खुला तो उसमें दाखिल होने वाली पहली लड़की कौन थी?- मोइना।

मोइना अब अठारह साल की है। वह समिति के स्कूल में पढ़ाती है। अगर तुम उसके स्कूल के पास से गुजरो तो निश्चित ही तुम्हें उसकी बेचैन आवाज सुनायी देगी।

‘आलस मत करो। सवाल करो मुझसे। पूछो, क्यों मच्छरों को खत्म करना चाहिए... क्यों ध्रुवतारा हमेशा उत्तरी आकाश में ही रहता है।’

और दूसरे बच्चे भी अब सीख रहे हैं पूछना- ‘क्यों?’

वैसे मोइना को पता नहीं है कि मैं उसकी कहानी लिख रही हूँ। अगर उसे बताया जाये तो कहेगी, 'क्यों'? मेरे बारे में? क्यों?'

-महाश्वेता देवी

महाश्वेता देवी का जन्म 14 जनवरी सन् 1926 ई0 को ढाका (बांग्लादेश) में हुआ था। उनकी आरम्भिक शिक्षा ढाका और कोलकाता में हुई। साहित्य के प्रति बचपन से आपका लगाव था। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'झाँसी की रानी', 'अरण्येर अधिकार' 'हजार चैरासी की माँ', 'चोट्टि मुंडा और उसका तीर', 'अग्निगर्भ', 'अक्लांत कौरव', 'सूरज गहराई', और 'मास्टर साब' आदि है। उनकी रचनाओं की कथावस्तु में आदिवासियों का जीवन संघर्ष और उनकी पीड़ा है। महाश्वेता देवी को उनकी साहित्यिक और सामाजिक सेवाओं के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ, मैग्सेसे आदि प्रमुख हैं। इनकी मृत्यु सन् 28 जुलाई 2016 को कोलकाता में हुई थी।

शब्दार्थ

धामन=साँप की एक जाति। **गोशाला**=गाय के रहने का स्थान। **अहसान**=उपकार। **बुदबुदाना**=बड़बड़ाना। **घोषणा**=जोर से बोलकर जताना, ऐलान। **ललकारना**=विपक्षी को लड़ने की चुनौती देना।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. मोइना अपने छोटे भाई और बहिन को बताती है कि- "एक पेड़ काटो तो दो पेड़ लगाओ", "खाने के पहले हाथ धो लो।" आप भी कम से कम तीन बातें लिखिए जो करनी चाहिए।

2. एक पौधा लगाइए और उसके बड़ा होने तक देखभाल कीजिए।

3. पृथ्वी देखने में चिपटी दिखाई देती है किन्तु वह गोल है। इसके साथ-साथ यह अपने अक्ष पर भी घूमती है। अक्ष पर घूमने के कारण दिन और रात होते हैं। सूर्य के चारों ओर घूमने के कारण ऋतुएँ बदलती हैं। अब तक पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन पाया जाता है। पृथ्वी पर जीवन के लिए पेड़-पौधों का होना अतिआवश्यक है। पेड़-पौधों के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती।

उपर्युक्त अंश को पढ़िए तथा इसके आधार पर पाँच प्रश्न बनाइए।

विचार और कल्पना

1. शिक्षा के माध्यम से समाज में व्याप्त गरीबी को कैसे दूर किया जा सकता है ? इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

2. प्रश्नों के द्वारा हम किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। यदि आप किसी अपरिचित स्थान पर जाते हैं, तो वहाँ आपके मन में कौन-कौन से प्रश्न आयेंगे?

पाठ से

1. मोइना का नाम क्यों-क्यों लड़की क्यों पड़ा ?

2. शबर जाति के लोग आमतौर पर अपनी लड़कियों को काम पर नहीं भेजते हैं, पर मोइना को काम पर जाना पड़ता था। क्यों ?

3. मोइना ने समिति वाली झोपड़ी में रहने के लिए नेवला ले जाने का क्या लाभ बताया ?

4. "हर रात तुम सोने के पहले किताब क्यों पढ़ती हो ?" मोइना के इस प्रश्न पर लेखिका ने क्या उत्तर दिया ?

5. वे कौन-कौन सी बातें थीं, जो मोइना बकरियाँ चराते समय दूसरे बच्चों को बताती थी ?

6. चैके की अंगार के पास बैठी मोइना ने अपनी छोटी बहिन और बड़े भाई को क्या बताया ?

7. पाठ के अन्त में मोइना कहती है-आलस मत करो सवाल करो मुझसे। "पूछो, क्यों मच्छरों को खत्म करना चाहिए ?"

अगर आपको मोइना से कुछ सवाल पूछने हैं तो कौन-कौन से सवाल पूछेंगे ? उन सवालों को लिख दीजिए।

8. सोचकर लिखिए-अगर मोइना 'क्यों-क्यों' जैसे सवाल न करती तो इसका उस पर क्या प्रभाव पड़ता?

भाषा की बात

1. (क) मोइना हर बात में 'क्यों' से प्रश्न पूछती है। उसी तरह क्या, कब, कैसे, किसने, किसको, कहाँ, किसलिए आदि भी प्रश्न वाचक शब्द हैं जिनका प्रयोग करके हम प्रश्न पूछते हैं। इन शब्दांे का प्रयोग करते हुए पाठ पर आधारित प्रश्न बनाइए।

(ख) इनमें से कुछ शब्दांे का प्रयोग कभी-कभी दो बार भी होता है, जैसे-क्या-क्या, कौन-कौन, कब-कब, कैसे-कैसे, किस-किस और किन-किन। इन पर आधारित प्रश्न बनाइए। जैसे-आपके साथ कौन-कौन विद्यालय जाते हैं?

2. निम्नलिखित वाक्यांशों से एक शब्द बनाइए-

(क) लिखने वाला (ख) चिकित्सा करने वाला

(ग) नृत्य करने वाला (घ) सेवा करने वाला

(ङ) पढ़ने वाला (च) पर्यटन करने वाला

3. व्याकरण की दृष्टि से निम्नलिखित को अलग-अलग वर्गों- विशेषण, भाववाचक संज्ञा तथा क्रियाविशेषण में बाँटिए-

बचपन, बढ़िया, बड़ा, कायरता, दिन भर, तेज-तेज, ज्यादा, जलाऊ।

4. (क) मोइना अच्छी लड़की है।

(ख) मोइना जिद्दी लड़की है।

(ग) मोइना अच्छी किन्तु जिद्दी लड़की है।

ऊपर दिये वाक्यों में पहले दो सरल वाक्य हैं। तीसरा वाक्य पहले दो वाक्यों को जोड़कर बना है। यह संयुक्त वाक्य है। दो शब्दों, पदबन्धों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द 'योजक' कहलाते हैं। यहाँ 'किन्तु' योजक शब्द है। इन्हें 'समुच्चयबोधक' भी कहते हैं। नीचे दिये गये योजक शब्दों की सहायता से वाक्य बनाइए-

किन्तु, और, तथा, तो, यदि, वरना, या।

5.निम्नलिखित शब्दों में 'ता' प्रत्यय जोड़कर भाव वाचक संज्ञा बनाइए-

यथा : कायर - कायरता

सफल ....

योग्य ....

मलिन ....

उदार ....

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं- 1. जाति वाचक 2. व्यक्ति वाचक 3. गुण वाचक

4. भाव वाचक 5. द्रव्य वाचक।

इसे भी जानें

महाश्वेता देवी को ज्ञानपीठ पुरस्कार सन् 1996 ई0 में बंगला साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए तथा मैग्सेसे पुरस्कार सन् 1997 ई0 में साहित्य एवं सृजनात्मक संचार कला के लिए प्राप्त हुआ।

पाठ 7

माँ कह एक कहानी

(प्रस्तुत कविता में यशोधरा अपने पुत्र राहुल को एक कहानी के द्वारा महात्मा बुद्ध के दया और क्षमा जैसे गुणों के बारे मंे बताती है।)

‘माँ कह एक कहानी,

राजा था या रानी,

माँ कह एक कहानी।’

‘तू है हठी मानधन मेरे,

सुन उपवन में बड़े सबेरे।

तात भ्रमण करते थे तेरे,

जहाँ सुरभि मनमानी।’

‘जहाँ सुरभि मनमानी।

हाँ! माँ यही कहानी।’

‘वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,

झलमल कर हिम बिन्दु मिले थे।

हलके झोंके हिले-मिले थे,

लहराता था पानी।’

‘लहराता था पानी।

हाँ-हाँ यही कहानी।’

‘गाते थे खग कल-कल स्वर से,

सहसा एक हंस ऊपर से।

गिरा बिद्ध होकर खर शर से,

हुई पक्ष की हानी।’

‘हुई पक्ष की हानी।

करुणा भरी कहानी।’

‘चौंक उन्होंने उसे उठाया,

नया जन्म-सा उसने पाया।

इतने में आखेटक आया,

लक्ष्य सिद्धि का मानी।’

'लक्ष्य सिद्धि का मानी|

कोमल कठिन कहानी|'

माँगा उसने आहत पक्षी,

तेरे तात किन्तु थे रक्षी|

तब उसने जो था खग भक्षी,

हठ करने की ठानी|'

'हठ करने की ठानी|

अब बढ़ चली कहानी|

हुआ विवाद सदय-निर्दय में,

उभय आग्रही थे स्व विषय में|

गयी बात तब न्यायालय में,

सुनी सभी ने जानी|'

'सुनी सभी ने जानी|

व्यापक हुई कहानी|'

'राहुल तू निर्णय ले इसका,

न्याय पक्ष लेता है किसका|

कह दे निर्भय, जय हो जिसका,

सुन लूं तेरी बानी|'

'माँ मेरी क्या बानी|

मैं सुन रहा कहानी|'

'कोई निरपराध को मारे,

तो क्या अन्य उसे न उबारे ?

रक्षक पर भक्षक को वारे,

न्याय दया का दानी|'

न्याय दया का दानी|

तूने गुनी कहानी|'

मैथिलिशरण गुप्त

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 ई. में चिरगाँव, जिला झांसी में हुआ था| राष्ट्रीय धारा के हिंदी कवियों में आप को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है| उन्होंने बहुत सी पुस्तकों की रचना की है | इनमें 'जयद्रथवध', 'भारत भारती', 'सिद्धराज', 'साकेत', 'यशोधरा' और 'पंचवटी' को विशेष ख्याति मिली| इनका निधन 12 दिसम्बर 1964 ई. को हुआ|

शब्दार्थ

सुरभि = सुगंध | **तात** = पिता |**हिमबि न्दु** = बर्फ की बूँदें / ओस की बूँदें | **खग** = पक्षी | **खर** = तीक्ष्ण, तेज़ धार वाला | **शर** = बाण | **करुणा** = दया | **आखेटक** = शिकारी | **आहात** = घायल | **भक्षी** = भक्षण करने वाला , खाने वाला | **सदय** = दयालु , दयावान | **निर्दय** = जिसके अन्दर दया न हो | **उभय** = दोनों | **आग्रही** = जिद्दी, हठी | **निर्भय** = बिना भय के | **निरपराध** = जिसने अपराध न किया हो | **उबारे** = उद्धार करना | **वारे** = न्योछावर करना | **व्यापक** = विस्तृत |

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

(क) बानी, कहानी, पानी, नानी, समान तुक वाले शब्द हैं। इनकी सहायता से चार पंक्ति की एक कविता बनाइए।

(ख) इस कविता को लिखिए-कहानी के रूप में, संवादों के रूप में।

(ग) लिखे गये संवादों के आधार पर कक्षा में अभिनय कीजिए।

विचार और कल्पना

1. कहानी के अन्त में राहुल जो निर्णय देता है, क्या आप उससे सहमत हैं ? यदि आप निर्णय देते तो किसका पक्ष लेते ? क्यों ?

2. पशु-पक्षियों का शिकार करना दण्डनीय अपराध है। आपके विचार में पशु-पक्षियों के शिकार करने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए क्या उपाय करना चाहिए?

3. राहुल की तरह आपने भी बचपन में माँ से कोई कहानी अवश्य सुनी होगी। अपनी माँ से सुनी हुई किसी कहानी को लिखिए।

कविता से

1. कहानी सुनाने के बाद माता ने राहुल से क्या प्रश्न किया ?

2. हंस को मारने वाले तथा बचाने वाले के बीच हुए विवाद का निर्णय राहुल ने क्या दिया ?

3. राहुल के उत्तर से उनके स्वभाव के विषय में क्या पता चलता है ?

4. निम्नलिखित पद्यांशों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) 'वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,

झलमल कर हिम बिन्दु मिले थे।

हलके झोंके हिले-मिले थे,

लहराता था पानी।'

(ख) 'कोई निरपराध को मारे,

तो क्या अन्य उसे न उबारे ?

रक्षक पर भक्षक को वारे,

न्याय दया का दानी।'

भाषा की बात

1. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

जैसे- हठ करने वाला - हठी

रक्षा करने वाला, भक्षण करने वाला , पक्ष लेने वाला, जिसने अपराध किया हो, जिसे डर न हो।

2. समानार्थी शब्द छाँटिए -

खग - गगन, पक्षी, नभ।

आखेट - धनुष, ओखल, शिकार।

कोमल - मुलायम, कमल, कोयल।

विवाद - निनाद, समझौता, झगड़ा।

सदय - देने वाला, दया के साथ, दीनता के साथ।

3. हिले-मिले, खर-शर और सदय-निर्दय शब्द-युग्मों में एक जैसा तुक है। इसी प्रकार के तीन और समान तुक वाले शब्द-युग्म लिखिए।

किसने किससे कहा-

यथा-माँ कह एक कहानी, राजा था या रानी। बालक ने माँ से

(क) हुआ विवाद सदय निर्दय में, उभय आग्रही थे स्व विषय में,

गयी बात तब न्यायालय में, सुनी सभी ने जानी। ....

(ख) कह दे निर्भय जय हो जिसका, सुन लूँ तेरी बानी। ....

(ग) 'कोई निरपराध को मारे,तो क्या अन्य उसे न उबारे? ....

इसे भी जानें

"मनुष्य के लिए क्षमा, त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चतम आदर्श हैं। नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है।"

-मुंशी प्रेमचन्द

पाठ 8

हार की जीत

(प्रस्तुत कहानी में एक डाकू के हृदय परिवर्तन की घटना को बड़े ही भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है।)

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनन्द आता है, वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्भजन से जो समय बचता वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुन्दर व बलवान था। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे "सुल्तान" कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, जमीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं सुल्तान के बिना नहीं रह सकूँगा," उन्हें ऐसी भ्रान्ति-सी हो गयी थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते ऐसा चलता है जैसे मोर घटा को देख कर नाच रहा हो। जब तक सन्ध्या समय सुल्तान पर चढ़ कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो

उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया

बाबा भारती ने पूछा ‘खड्गसिंह क्या हाल है?’

खड्गसिंह ने सिर झुका कर उत्तर दिया, ‘आपकी दया है।’

‘कहो, इधर कैसे आ गये।’

‘सुल्तान की चाह खींच लायी।’

‘विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।’

‘मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।’

‘उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।’

‘कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुन्दर है।’

‘क्या कहना जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।’

‘बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।’

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमण्ड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ। कुछ देर तक आश्चर्य से

चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, ‘परन्तु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?’

बाबा जी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर गये। घोड़ा वायुवेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसन्द जा जाय उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा, ‘बाबाजी मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।’

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता परन्तु कई मास बीत गये और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गये और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

सन्ध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आयी, ‘ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।’

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, ‘क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?’

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, ‘बाबा, मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।’

‘वहाँ तुम्हारा कौन है?’

‘दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। उनका सौतेला भाई हूँ।’

बाबा भारती ने घोड़े से उतर कर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़ कर धीरे-धीरे चलने लगे।

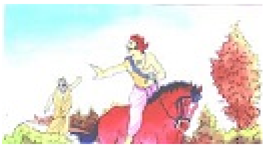

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गयी। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तन कर बैठा है और घोड़े को दौड़ाये लिये जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गयी। वह अपाहिज डाकू खड्ग सिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, 'जरा ठहर जाओ।'

खड्ग सिंह ने आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, 'बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।'

'परन्तु एक बात सुनते जाओ।'

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है, और कहा, 'यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परन्तु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जायेगा।'

बाबा जी आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।

'अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परन्तु बाबा भारती ने स्वयं कहा कि 'इस घटना को किसी के

सामने प्रकट न करना।' इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है। खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परन्तु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दी और पूछा, 'बाबा जी इसमें आपको क्या डर है?'

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया 'लोगों को यदि इस घटना का पता चल गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।' यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गये, परन्तु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है। उन्हें इस घोड़े से प्यार था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, 'इसके बिना मैं न रह सकूँगा।' इसकी रखवाली में वे कई रात सोये नहीं। भजन-भक्ति न कर, रखवाली करते रहे। परन्तु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक न दिखायी पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

रात के अन्धकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मन्दिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मन्दिर के अन्दर कोई शब्द सुनायी न देता था। खड्गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परन्तु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकल कर सावधानी से फाटक बन्द कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चैथा पहर आरम्भ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परन्तु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गये।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अन्दर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपट कर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन के बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे सन्तोष से बोले, 'अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।'

- सुदर्शन

सुदर्शन का वास्तविक नाम बद्रीनाथ भट्ट था। इनका जन्म सन् 1896 ई0 में पंजाब स्थित सियालकोट में हुआ था। कक्षा छह में ही उन्होंने अपनी पहली कहानी लिखी थी। कहानी के अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, नाटक, जीवनी, बालसाहित्य, धार्मिक साहित्य, गीत आदि भी लिखे हैं। इनके प्रमुख कहानी-संग्रह 'पुष्पलता', 'सुप्रभात', 'परिवर्तन', 'पनघट', 'नगीना' आदि हैं। आपका उपन्यास 'भागवन्ती' है। आपने अपनी कहानियों में आदर्श की प्रतिष्ठा की है। सन् 2008 में इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ

अर्पण=देना, प्रदान करना, भेंट करना। **असबाब**=सामान। **कीर्ति**=यश। **अभिलाषा**=इच्छा। **अस्तबल**=घुड़साल, तबेला। **सहस्रों**=हजारों। **बाँका**=सुन्दर और बना-ठना। **बाहुबल**=भुजाओं की शक्ति। **नाईं**= तरह, समान। **मिथ्या**=झूठ। **कंगले**=गरीब, कंगाल। **प्रयोजन**=उद्देश्य। **दुःख की रेखा**=थोड़ा-सा दुःख। **नेकी के आँसू**=उपकार के भाव, दया का भाव। **प्रतीत**=मालूम होना, विदित। **पाँवों की चाप**=पैरों की आवाज।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. बाबा भारती और खड्गसिंह के रूप में कहानी पर कक्षा मंे अभिनय कीजिए।

2. बाबा भारती ने अपने घोड़े सुल्तान की बचपन से सेवा की और उसकी तारीफ करते नहीं थकते थे। इस प्रकार का कोई पालतू जानवर आपके घर में हो तो उसका वर्णन कीजिए।

विचार और कल्पना

1. बताइये आपको कहानी का कौन सा पात्र सबसे अच्छा लगा ? और क्यों ?

2. यदि बाबा भारती और खड्गसिंह की मुलाकात अगली बार होगी तो उनके बीच क्या-क्या बातें होंगी ? लिखिए।

3. चित्र को देखकर अपने विचार दस पंक्तियों में लिखिए-

कहानी से

1. बाबा भारती ने खड्गसिंह से उस घटना को किसी के सामने प्रकट न करने के लिए क्यों कहा ?

2. बाबा भारती द्वारा की गयी प्रार्थना का डाकू खड्गसिंह पर क्या प्रभाव पड़ा ?

3. कहानी के आधार पर नीचे दी गयी घटनाओं को सही क्रम दीजिए-

- बाबा भारती घोड़े के गले से लिपटकर रोने लगे।
- खड्गसिंह ने बाबा भारती की आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और कहा- बाबाजी यह घोड़ा अब न दूँगा।
- बाबा भारती की सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी।
- अपाहिज वेश में खड्गसिंह घोड़े को दौड़ाकर जाने लगा।
- घोड़े की चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया।
- माँ को अपने बेटे और किसान को लहलहाते खेत को देखकर जो आनन्द आता है वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था।
- बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे।
- खड्गसिंह जाते-जाते कह गया- 'बाबाजी यह घोड़ा मैं आपके पास न रहने दूँगा।'
- बाबा ने कहा 'इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना, नहीं तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे'।
- खड्गसिंह ने सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया।

4. इस कहानी के अन्त में किसकी जीत और किसकी हार हुई ?

5. इस कहानी द्वारा लेखक हमें क्या बताना चाहता है ?

6. इस कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं-बाबा भारती, सुल्तान और खड्गसिंह। कहानी के आधार पर इन तीनों पात्रों की विशेषताओं को स्पष्ट करने वाली तीन-तीन बातें लिखिए।

7- उस संवाद को छाँटकर लिखिए जिसने डाकू खड्गसिंह का हृदय परिवर्तन कर दिया।

8- कहानी के किस पात्र ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों ?

9- कहानी का शीर्षक है-'हार की जीत' आपके अनुसार इस कहानी के और क्या-क्या शीर्षक हो सकते हैं ? लिखिए।

भाषा की बात

1. नीचे लिखे मुहावरों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए-

वायु वेग से उड़ना, आँखों में चमक होना, दिल टूट जाना, मुँह न मोड़ना, सिर मारना, लट्टू होना, मन भारी होना।

2. नीचे बायीं ओर कुछ विशेषण दिये गये हैं और दायीं ओर कुछ विशेष्य। प्रत्येक विशेषण के साथ उपयुक्त विशेष्य मिलान कर लिखिए-

विशेषण	विशेष्य
लहलहाते	विचार
बाँका	खेत
अधीर	जल
ऊँचे	हृदय
ठण्डा	घोड़ा

3. 'कहो, इधर कैसे आ गये', 'सुल्तान की चाह खींच लायी।'

इनमें से पहला वाक्य बाबा भारती और दूसरा वाक्य डाकू खड्गसिंह का है। बातचीत के वाक्यों को अलग रखने के लिए उन्हें 'उद्धरण चिह्न'(इनवर्टेड कॉमा) में रखा जाता है। कहानी को पढ़कर नीचे दिये गये अनुच्छेद में उपयुक्त स्थान पर उद्धरण चिह्न तथा अन्य विराम चिह्न लगाइए-

अपाहिज ने हाथ जोड़ कर कहा बाबा मैं दुखिया हूँ मुझ पर दया करो रामावाला यहाँ से तीन मील दूर है मुझे वहाँ जाना है घोड़े पर चढ़ा लो परमात्मा भला करेगा वहाँ तुम्हारा कौन है दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा मैं उनका सौतेला भाई हूँ।

4. 'अ' उपसर्ग लगाने से कुछ शब्दों के अर्थ विपरीत हो जाते हैं, जैसे- धीर से अधीर, स्वीकार से अस्वीकार। 'अ' उपसर्ग लगाकर इसी तरह से अन्य पाँच शब्द लिखिए

अवधारणा चित्र-किसी पात्र अथवा विषयवस्तु के बारे में उसकी विशेषता, गुण, लाभ, हानि अथवा घटना के क्रमों के प्रमुख बिन्दुओं का चित्रण करना।

'क' के आधार पर 'ख' को पूरा करें|

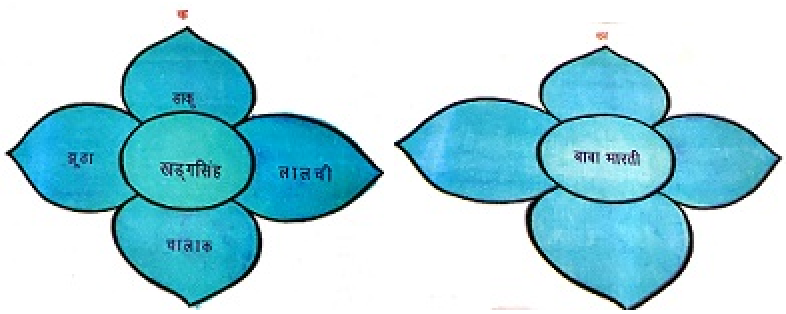

इसे भी जानें

भारत रत्न पुरस्कार- यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा कला, साहित्य, विज्ञान एवं सार्वजनिक सेवा या जीवन के असाधारण एवं अति उत्तम कोटि के कार्य के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार सर्वप्रथम सन् 1954 ई0 में सी0 राजगोपालाचारी, डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन तथा डॉ0 सी0वी0 रमन को मिला।

पाठ 9

4AD4CH

हिन्द महासागर में छोटा-सा हिन्दुस्तान

(प्रस्तुत यात्रा वृत्तान्त में लेखक ने मॉरीशस के सौन्दर्य और यहाँ फैली भारतीय संस्कृति का वर्णन किया है।)

मॉरीशस वह देश है, जिसका कोई भी हिस्सा समुद्र से पन्द्रह मील से ज्यादा दूर नहीं है। मॉरीशस वह देश है, जहाँ की जनसंख्या के 67 प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं। मॉरीशस वह देश है, जिसकी राजधानी पोर्टलुई की गलियों के नाम कलकत्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई), हैदराबाद और बम्बई (मुम्बई) हैं तथा जिसके एक पूरे मोहल्ले का नाम काशी है। मॉरीशस वह देश है, जहाँ बनारस भी है, गोकुल भी है और ब्रह्मस्थान भी।

यात्रा पर मैं दिल्ली से 15 जुलाई को, बम्बई (मुम्बई) से 16 जुलाई को और नैरोबी से 17 जुलाई को मॉरीशस के लिए रवाना हुआ।

इधर से जाते समय नैरोबी (की दुनिया) में मुझे एक रात और दो दिन ठहरने का मौका मिल गया। अतएव मन में यह लोभ जग गया कि मॉरीशस के भारतीयों और अफ्रीकियों से मिलने के पूर्व हमें अफ्रीका के शेरों से मुलाकात कर लेनी चाहिए। विमान दूसरे दिन शाम को मिलने वाला था। अतएव हम जिस दिन नैरोबी पहुँचे, उसी दिन उच्चायुक्त श्री भाटिया के साथ नेशनल पार्क में घूमने को निकल गये। नैरोबी का नेशनल पार्क चिड़ियाघर नहीं है। शहर से बाहर बहुत बड़ा जंगल है, जिसमें घास अधिक, पेड़ बहुत कम हैं। लेकिन, जंगल में सर्वत्र अच्छी सड़कें बिछी हुई हैं और पर्यटकों की गाड़ियाँ उन

पर दौड़ती ही रहती हंै। हमारी गाड़ी को भी काफी देर तक दौड़ना पड़ा, मगर सिंह कहीं दिखायी नहीं पड़े।

दूरी तय करने के बाद या यों कहिए कि दस-बीस मील के भीतर हर सड़क छान लेने के बाद, हम उस जगह जा पहुँचे, जहाँ सिंह उस दिन आराम कर रहे थे।

वहाँ जो कुछ देखा, वह जन्मभर कभी नहीं भूलेगा। कोई सात-आठ सिंह लेटे या सोये हुए थे और उन्हें घेर कर आठ-दस मोटरें खड़ी थीं। तुर्रा यह कि सिंहों को यह जानने की कोई इच्छा ही नहीं थी कि हमें देखने को आने वाले लोग कौन हैं। मोटरों में शीशे चढ़ाकर उनके भीतर बैठे लोगों की ओर सिंहों ने कभी दृष्टिपात नहीं किया, मानो हमलोग तुच्छातितुच्छ हों और उनकी नजर में आने के योग्य बिल्कुल नहीं हों। हमलोग वहाँ आधा घंटा ठहरे होंगे। इस बीच एक सिंह ने उठकर जँभाई ली, दूसरे ने देह को ताना, मगर हमारी ओर किसी भी सिंह ने नजर नहीं उठायी। हम लोग पेड़-पौधे और खरपात से भी बदतर समझे गये।

इतने में कोई मील भर की दूरी पर हिरनों का एक झुण्ड दिखायी पड़ा, जिनके बीच एक जिराफ खड़ा था। अब दो जवान सिंह उठे और दो ओर चल दिये। एक तो थोड़ा-सा आगे बढ़कर एक जगह बैठ गया, लेकिन दूसरा घास के बीच छिपता हुआ मोर्चे पर आगे बढ़ने लगा।

हिरनों के झुण्ड ने ताड़ लिया कि उन पर सिंहों की नजर पड़ रही है। अतएव वे चरना भूलकर चैकन्ने हो उठे। फिर ऐसा हुआ कि झुण्ड से छूटकर कुछ हिरन एक तरफ को भाग निकले, मगर बाकी जहाँ के तहाँ खड़े रहे। इच्छा तो यह थी कि हम लोग देर तक रुकें और देखें क्या होता है। किन्तु समय छह से ऊपर हो रहा था और सात बजे तक नेशनल पार्क का फाटक बन्द हो जाता है। फिर यह भी बात थी कि शिकार तो सिंह सूर्यास्त के बाद किया करते हंै और शिकार वे झुण्ड का नहीं करते, बल्कि उस जानवर का करते हैं, जो भागते हुए झुण्ड से पिछड़ जाता है। अब यह बात समझ में आयी कि हिरन भागने को निरापद नहीं समझ कर एक गोल में क्यों खड़े थे।

नैरोबी से मॉरीशस तक हम बी0ओ0ए0सी0 के विमान मंे उड़े। यह विमान नैरोबी से चार बजे शाम को उड़ा और पाँच घण्टे की निरन्तर उड़ान के बाद जब वह मॉरीशस पहुँचा, तब वहाँ रात के लगभग दस बज रहे थे। रात थी, अँधेरा था, पानी बरस रहा था। मगर तब भी हमारे स्वागत में बहुत काफी लोग खड़े थे। हवाई अड्डे के स्वागत का समां देखकर यह भाव जगे बिना नहीं रहा कि हम जहाँ आये हैं, वह छोटे पैमाने पर भारत ही है।

चूँकि मॉरीशस के भारतीयों में से अधिकांश बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग हैं, इसलिए हिन्दी का मॉरीशस में व्यापक प्रचार है। मॉरीशस की हिन्दी प्रचारिणी सभा जीवित जागृत संस्था है।

मॉरीशस की राजभाषा अंग्रेजी, किन्तु बोलचाल की भाषा क्रे्रयोल है। क्रेयोल के बाद मॉरीशस की दूसरी जनभाषा भोजपुरी को ही मानना पड़ेगा। प्रायः सभी भारतीय भोजपुरी बोलते अथवा उसे समझ लेते हैं। यहाँ तक कि भारतीयों के पड़ोस में रहने वाले चीनी भी भोजपुरी बखूबी बोल लेते हैं। किन्तु मॉरीशस की भोजपुरी शाहाबाद या सारन की भोजपुरी नहीं है, उसमें फ्रेंच के इतने संज्ञापद घुस गये हैं कि आपको बाज-बाज शब्दों के अर्थ पूछने पड़ेंगे। हिन्दी और भोजपुरी मॉरीशस निवासी भारतीयों को एक सूत्र में बाँधे हैं और मॉरीशस को भारत के साथ बाँधने का काम भी हिन्दी ही कर रही है। मॉरीशस में हिन्दू संस्कृति की रक्षा का काम तुलसीदास जी की ‘रामचरित मानस’ ने किया है।

मॉरीशस में ईख की खेती और उसके व्यवसाय को जो सफलता मिली है, वह भारतीय वंश के लोगों के कारण मिली है। सारा मॉरीशस कृषि प्रधान द्वीप है, क्योंकि चीनी वहाँ का प्रमुख अथवा एकमात्र उद्योग है।

भारत में बैठे-बैठे हम यह समझ नहीं पाते कि भारतीय संस्कृति कितनी प्राणवती और चिरायु है। मॉरीशस जाकर हम अपनी संस्कृति की प्राणवत्ता का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। मालिकों की इच्छा तो यही थी कि भारतीय लोग भी क्रिस्तान हो जायें किन्तु भारतीयों ने अत्याचार तो सहे, लेकिन प्रलोभनों को ठुकरा दिया। वे अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप में परिस्थितियों ने उन्हें भेज दिया था, उस द्वीप को उन्हांेने छोटा-सा हिन्दुस्तान बना डाला। यह ऐसी सफलता की बात है, जिस पर सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए।

मॉरीशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में शिवालय होता है। मॉरीशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में हिन्दू तुलसीकृत रामायण का पाठ करते हैं अथवा ढोलक और झाँझ पर उसका गायन करते हैं। मॉरीशस के मन्दिरों और शिवालयों को मैंने अत्यन्त स्वच्छ और सुरम्य पाया। कितना अच्छा हो यदि हम भारत में भी अपने मन्दिरों और तीर्थस्थलों को उतना ही स्वच्छ और सुरम्य बनायें जितना स्वच्छ वे मॉरीशस में दिखाई देते हैं।

वहाँ का परी तालाब भी हिन्दुओं की ऐकान्तिक भक्ति के कारण पुण्यधाम हो उठा है। परी-तालाब केवल तीर्थ ही नहीं, दृश्य से भी पिकनिक का स्थान है। शिवरात्रि के समय सारे मॉरीशस के हिन्दू श्वेत वस्त्र धारण करके कन्धों पर काँवर लिए जुलूस बाँधकर परी तालाब पर आते हैं और परी तालाब का जल लेकर अपने- अपने गाँव के शिवालय को लौट जाते हैं तथा शिवजी को जल चढ़ाकर अपने घरों में प्रवेश करते हैं। ये सारे काम वे बड़ी ही भक्ति-भावना और पवित्रता से करते हैं। सभी वयस्क लोग उस दिन उजली धोती, उजली कमीज, उजली गाँधी टोपी पहनते हैं। हाँ बच्चे हाफ पैन्ट पहन सकते हैं, लेकिन गाँधी टोपी उस दिन उन्हें भी पहननी पड़ती है। परी तालाब पर चलने वाला यह मेला मॉरीशस के प्रमुख आकर्षणों में से एक है और उसे देखने को अन्य धर्मों के लोग भी काफी संख्या में आते हैं।

-रामधारी सिंह 'दिनकर'

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म सन् 1908 ई0 में सिमरिया, जिला मुंगेर, बिहार में हुआ था। हिन्दी की राष्ट्रीय धारा के कवियों में दिनकर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रगतिशीलता और विचारों की गहराई आपके लेखन की विशेषता है। कविता के साथ गद्य लेखन में भी आप को यश प्राप्त है। 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'सामधेनी', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी' और 'उर्वशी' आपकी कविता की पुस्तकंे हैं। संस्कृति के चार अध्याय, मिट्टी की ओर, काव्य की भूमिका आदि आपकी गद्य रचनाएँ हैं। 24 अप्रैल 1974 में इनका निधन हो गया।

शब्दार्थ

दृष्टिपात = देखना । **तुच्छातितुच्छ** = छोटे से छोटा। **निरापद** = आपत्ति से रहित, सुरक्षित। **क्रेयोल** = भोजपुरी और फ्रेंच भाषा के मिश्रण से बनी एक प्रकार की बोली जो मॉरीशस में बोली जाती है। **बाज-बाज** = कोई-कोई। **प्राणवत्ता** = जीवित होने का भाव, शक्ति सम्पन्न। **क्रिस्तान**=ईसाई धर्म मानने वाले। **ऐकान्तिक** = एक निष्ठ। **पुण्यधाम** = पवित्र स्थान, पुण्य का स्थान। **काँवर** = बहँगी। **सुरम्य** = अत्यन्त मनोहर। **वयस्क** = बालिग।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. पुस्तकालय से विश्व का मानचित्र लेकर मॉरीशस की स्थिति को रेखांकित कीजिए तथा पता कीजिए-(अ) आपके घर से मॉरीशस जाते समय कौन-कौन से देश पड़ेंगे ? (ब) किन-किन यातायात के साधनों से जाना होगा ?

2. द्वीप शब्द से कई शब्द बनाये जा सकते हैं, जैसे- महाद्वीप, प्रायद्वीप, लघुद्वीप। पता कीजिए इनमें क्या अंतर है।

विचार और कल्पना

1. आपने अपने माता-पिता के साथ किसी स्थान की यात्रा अवश्य की होगी। उस स्थान की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए अपने अनुभव लिखिए।

2. लेखक ने मॉरीशस की यात्रा की, जहाँ भारतीय मूल के लोग बड़ी संख्या में हैं। आपको यदि अवसर मिले तो आप किन देशों की यात्रा करना चाहेंगे, और क्यों ?

3. अगर मॉरीशस में रहने वाला कोई व्यक्ति आपके गाँव/शहर के बारे में जानना चाहे तो तो आप उसे क्या-क्या बतायेंगे ?

यात्रा वृत्तान्त से

1. दिये गये विकल्पों में से सही विकल्प छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) मॉरीशस की जनसंख्या के .... प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं। (76, 67, 17, 68)

(ख) मॉरीशस में भारतीय संस्कृति की रक्षा का काम तुलसीदास जी की .... ने किया है। (विनयपत्रिका, रत्नावली, रामचरित मानस, गीता)

(ग) मॉरीशस की दूसरी जनभाषा .... को ही मानना पड़ेगा। (भोजपुरी, अंग्रेजी, क्रेयोल, फ्रेंच)

2. पाठ में आये मॉरीशस के उन सभी गलियों और मोहल्लों के नाम लिखिए, जो अपने देश में भी हैं ?

3. लेखक ने मॉरीशस को 'छोटे पैमाने पर भारत' ही कहा है, क्यों ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित वाक्य में आयी हुई क्रियाओं और संज्ञापदों को रेखांकित कीजिए-

मॉरीशस में ईख की खेती और उसके व्यवसाय को जो सफलता मिली है वह भारतीय वंश के लोगों के कारण मिली है। सारा मॉरीशस कृषि प्रधान द्वीप है, क्योंकि चीनी वहाँ का प्रमुख अथवा एक मात्र उद्योग है।

2. कुछ वाक्य मिश्रित वाक्य होते हैं, जिसमें एक प्रधान वाक्य होता है और उसके सहायक एक अथवा एक से अधिक उपवाक्य होते हैं। जिसका, जहाँ, और आदि लगाकर उपवाक्यों को जोड़ा जाता है।

छाँटिए, निम्नलिखित अंश में से कौन-सा अंश प्रधान वाक्य है और कौन-सा सहायक उपवाक्य है- मॉरीशस वह देश है, जिसका कोई भी हिस्सा समुद्र से पन्द्रह मील से ज्यादा दूर नहीं है। मॉरीशस वह देश है जहाँ की जनसंख्या के 67 प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं।

3. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

लोभ का जगना, सड़क छानना, मोर्चे पर आगे बढ़ना।

4. पाठ में निम्नलिखित शब्द हिन्दी भाषा में प्रचलित दूसरी भाषा अंग्रेजी, अरबी तथा फारसी के आये हुए हैं। इन शब्दों में से अंग्रेजी, अरबी तथा फारसी के शब्दों को अलग-अलग छाँटकर लिखिए-

इजाजत, सर्विस, एयर इण्डिया, पैमाना, नेशनल पार्क, नजर, रकबा, क्रिस्तान, मोटरों, बाकी, बखूबी, पिकनिक।

5. तुच्छ + अति + तुच्छ से 'तुच्छातितुच्छ' शब्द बनता है जिसका अर्थ है तुच्छ से भी तुच्छ। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों से नये शब्द बनाइए- दीर्घ, न्यून, उच्च, सूक्ष्म।

6. (क) पाठ के सबसे अन्तिम अनुच्छेद का सुलेख कीजिए।

(ख) इस अनुच्छेद पर चार प्रश्न बनाइए।

(ग) इस अनुच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए।

(घ) इस अनुच्छेद के आधार पर एक चित्र बनाइए।

इसे भी जानें

विश्व की सभी भाषाओं में 'चीनी भाषा' बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। रामधारी सिंह दिनकर को सन् 1959 ई0 में साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा सन् 1972 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 संविधान के 86 वे संवैधानिक संशोधन में मूल अधिकार के अनुच्छेद 21 (प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता) में 21 क शामिल किया गया है, जिसके अनुसार "राज्य 6.14 वर्ष के आयु के सभी को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपबन्ध करेगा।"

पाठ 10

ईदगाह

(प्रस्तुत कहानी 'ईदगाह' में लेखक ने बाल-मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण करते हुए बालक हामिद के प्रति दादी के वात्सल्य को और दादी के प्रति हामिद के प्रगाढ़ प्रेम को दिखाया है।)

(1)

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आज ईद आयी है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुरते में बटन नहीं है। पड़ोस के घर से सूई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गये हैं। उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जायेगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना। दोपहर के पहले लौटना असम्भव है। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है। रोजे बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे। आज वह आ गयी। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। इन्हें गृहस्थी की चिन्ताओं से क्या प्रयोजन? सेवँइयों के लिए दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से ये तो सेवँइयाँ खायेंगे। वह क्या जाने कि अब्बाजान क्यों बदहवास चैधरी कायमअली के घर

दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर कि चैधरी आज आँखे बदल लें तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाय ? उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है। बार-बार जेब से अपना खजाना निकाल कर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह। उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पन्द्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनती पैसों में अनगिनत चीजें लायेंगे- खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या ? और सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का गरीब सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत-वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गयी। किसी को पता न चला, क्या बीमारी है। कहती भी तो कौन सुनने वाला था। दिल पर जो कुछ बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी और जब न सहा गया तो संसार से विदा हो गयी। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रुपये कमाने गये हैं। बहुत-सी थैलियाँ लेकर आयेंगे। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बड़ी-बड़ी चीजें लाने गयी है, इसलिए हामिद प्रसन्न है और फिर बच्चों की आशा। उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोट काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। अब उसके अब्बाजान थैलियाँ और अम्मीजान नियामतें लेकर आयेंगी, तो वह दिल के अरमान निकाल लेगा। तब देखेगा महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी कहाँ से उतने पैसे निकालेंगे। अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं। आज आबिद होता तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती। इस अन्धकार और निराशा में वह डूबी जा रही थी। किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को। इस घर में उसका काम नहीं है, लेकिन हामिद। उसे किसी के मरने-जीने से क्या मतलब ? उसके अन्दर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दल-बल लेकर आये, हामिद की आनन्द-भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है- तुम डरना नहीं अम्मा मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद के बाप अमीना के सिवा और कौन है। उसे कैसे अकेले मेले जाने दे। उसी भीड़-भाड़ में

बच्चा कहीं खो जाय तो क्या हो ? नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्हीं-सी जान। तीन कोस चलेगा कैसे। पैर में छाले पड़ जायेंगे। जूते भी तो नहीं है। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद ले लेगी, लेकिन यहाँ सेवँइयाँ कौन पकायेगा। पैसे होते तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती। यहाँ तो घंटों चीजें जमा करते लगेंगे। माँगे ही का तो भरोसा ठहरा। उस दिन फहीमन के कपड़े सिये थे। आठ आने पैसे मिले थे। उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आयी थी इसी ईद के लिए, लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गयी तो क्या करती ? हामिद के लिए कुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटुवे में।

गाँव से मेला चला और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़ कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों का इन्तजार करते। ये लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गये हैं। वह कभी थक सकता है? शहर का दामन आ गया।

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं, यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लब-घर है। इतने बड़े कॉलेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे। सब लड़के नहीं हैं जी। बड़े-बड़े आदमी हैं, सच उनकी बड़ी-बड़ी मूँछे हैं। इतने बड़े हो गये, अभी पढ़ने जाते हैं। न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़ कर। हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े-बड़े लड़के हैं, बिलकुल तीन कौड़ी, के रोज मार खाते हैं, काम से जी चुराने वाले। इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे और क्या ? क्लब-घर में जादू होता है। सुना है यहाँ मुर्दे की खोपड़ियाँ दौड़ती हैं और बड़े-बड़े तमाशे होते हैं, पर किसी को अन्दर नहीं जाने देते।

सहसा ईदगाह नजर आया। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया। नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाजिम बिछा हुआ है और रोजेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गयी हैं। पक्के जगत के नीचे तक, जहाँ जाजिम भी नहीं है। नये आने वाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं है। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की नजर में सब बराबर हैं। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गये। कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था ? लाखों सिर एक

साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सब-के-सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जायँ, और यही क्रम चलता रहे। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएँ, विस्तार और अन्ततः हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानन्द से भर देती थीं, मानों भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोये हुए है।

(2)

नमाज़ खत्म हो गयी है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकानों पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं हैं। यह देखो, हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मजा लो। महमूद और मोहसिन और नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का तिहाई जरा-सा-चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं- सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबिन और साधू। वाह! कितने सुन्दर खिलौने हैं ? अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कन्धे पर बन्दूक रखे हुए। मालूम होता है, अभी कवायद किये चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसन्द आया। कमर झुकी है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है? शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी उड़ेलना ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वत्ता है उसके मुख पर? काला चोंगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किये चले आ रहे हैं। यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से

छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाय। जरा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाय। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के?

हामिद खिलौने की निन्दा करता है-- मिट्टी ही के तो हैं, गिरे तो चकनाचूर हो जायँ, लेकिन ललचायी हुई आँखों से खिलौने को देख रहा है और चाहता है कि जरा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं, लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते, विशेषकर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचाता रह जाता है।

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहनहलुआ। मजे से खा रहे हैं। हामिद उनकी बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचायी आँखों से सबकी ओर देखता है।

मोहसिन कहता है -- हामिद रेवड़ी ले जा, कितनी खुशबूदार है।

हामिद को सन्देह हुआ, यह केवल क्रूर विनोद है, मोहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकाल कर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे और सम्मी खूब तालियाँ बजा-बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मोहसिन -- अच्छा, अबकी जरूर देंगे हामिद, अल्ला कसम, ले जाओ।

हामिद -- रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं।

सम्मी -- तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसे में क्या-क्या लोगे ?

महमूद -- हमसे गुलाब जामुन ले जाओ हामिद, मोहसिन बदमाश है।

हामिद -- मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

मोहसिन -- लेकिन दिल में कह रहे होंगे कि मिले तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

महमूद -- हम समझते हैं इसकी चालाकी। जब हमारे सारे पैसे खर्च हो जायेंगे, तो हमें ललचा-ललचाकर खायेगा।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीजों की हैं। कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वह सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है, अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जायेगी। खिलौने से क्या फायदा? हामिद के साथी आगे बढ़ गये हैं। सबील पर सब-के-सब शरबत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं? इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खायें मिठाइयाँ आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुन्सियाँ निकलंेगी, आप ही जबान चटोरी हो जायेगी। सब-के-सब खूब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हँसें। मेरी बला से। उसने दुकानदार से पूछा-- यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देख कर कहा-- यह तुम्हारे काम का नहीं है जी!

-बिकाऊ क्यों नहीं है? और यहाँ क्यों लाद लाये हैं ?

-बिकाऊ है क्यों नहीं ?

-तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है ?

-छह पैसे लगेंगे।

हामिद का दिल बैठ गया।

-ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो, नहीं चलते बनो। हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा--तीन पैसे लोगे।

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दीं। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कन्धे पर रखा, मानो बन्दूक है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। जरा सुनें, सब-के-सब क्या-क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँसकर कहा-- यह चिमटा क्यों लाया पगले ? इसे क्या करेगा? हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटक कर कहा-- जरा अपना भिश्ती जमीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जायँ बच्चा की।

महमूद बोला-- तो यह चिमटा कोई खिलौना है।

हामिद-- खिलौना क्यों नहीं। अभी कन्धे पर रखा बन्दूक हो गयी। हाथ में लिया, फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाय। तुम्हारे खिलौने कितना ही जोर लगावें, वे मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है-- चिमटा।

सम्मी ने खँजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला- मेरी खँजरी से बदलोगे। दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्षा से देखा-मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी। जरा-सा पानी लग जाय तो खतम हो जाय। मेरा बहादुर चिमटा, आग में, पानी में, तूफान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं। फिर मेले से दूर निकल आये हैं, नौ कब के बज गये, धूप तेज हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही है। बाप से जिद भी करें, तो चिमटा नहीं मिल सकता है। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गये हैं। मोहसिन, महमूद, सम्मी और नूरे एक तरफ हैं, हामिद अकेला दूसरी तरफ। शास्त्रार्थ हो रहा है।

मोहसिन ने एड़ी-चोटी का जोर लगा कर कहा-- अच्छा पानी तो नहीं भर सकता।

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा-- भिश्ती को एक डाँट लगायेगा, तो दौड़ा हुआ पानी लाकर द्वार में छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया पर महमूद ने कुमुक पहुँचायी अगर बच्चा पकड़ जायें तो अदालत में बँधे-बँधे फिरेंगे। तब तो वकील साहब के ही पैर पड़ेंगे।

हामिद इस प्रबल तर्क का जबाब न दे सका। उसने पूछा--हमें पकड़ने कौन आयेगा?

नूरे ने अकड़ कर कहा-- यह सिपाही बन्दूक वाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा, यह बेचारे हम बहादुर रुस्तम-ए-हिन्द को पकड़ेंगे। अच्छा लाओ अभी जरा कुश्ती हो जाय। इसकी सूरत देखकर दूर से भागेंगे। पकड़ेंगे क्या बेचारे ?

मोहसिन को एक नयी चोट सूझ गयी- तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जायेगा: लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरन्त जवाब दिया-- आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब, आग में कूदना वह काम है, जो यह रुस्तमें-हिन्द ही कर सकता है।

महमूद ने एक जोर लगाया-- वकील साहब कुर्सी-मेज पर बैठेंगे, तुम्हारा चिमटा तो बावर्चीखाने में जमीन पर पड़ा रहेगा।

इस तर्क ने सम्मी और नूरे को भी सजीव कर दिया। कितने ठिकाने की बात कही है पट्ठे ने? चिमटा बावरचीखाने में पड़े रहने के सिवा और क्या कर सकता है।

हामिद को कोई फड़कता हुआ जवाब न सूझा तो उसने धाँधली शुरू की - मेरा चिमटा बावरचीखाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुर्सी पर बैठेंगे तो जाकर उन्हें जमीन पर पटक देगा और उनका कानून उनके पेट में डाल देगा।

बात कुछ बनी नहीं। खासी गाली-गलौज थी। कानून को पेट में डालने वाली बात छा गयी। ऐसी छा गयी कि तीनों शूरमा मुँह ताकते रह गये, मानो कोई धेलचा कनकौआ किसी गंडेवाले कनकौए को काट गया हो। कानून मुँह से बाहर निकलने वाली चीज है। उसको पेट के अन्दर डाल दिया जावे, बेतुकी-सी बात होने पर भी कुछ नयापन रखती है। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे-हिन्द है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती।

विजेता को हारने वालों से जो सत्कार मिलना स्वाभाविक है, वह हामिद को भी मिला। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किये: पर कोई काम की चीज न ले सके। हामिद ने तीन पैसे मंे रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा ? टूट-फूट जायेंगे। हामिद का चिमटा बना रहेगा बरसों।

सन्धि की शर्त तय होने लगी। मोहसिन ने कहा- जरा अपना चिमटा दो, हम भी देखें, तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किये।

हामिद को इन शर्तों के मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आये। कितने खूबसूरत खिलौने हैं।

हामिद ने हारने वाले के आँसू पोंछे-- मैं तुम्हें चिढ़ा रहा था, सच! यह लोहे का चिमटा भला इन खिलौनों की क्या बराबरी करेगा? मालूम होता है अब बोले, अब बोले।

लेकिन मोहसिन की पार्टी को इस दिलासे से सन्तोष नहीं होता। चिमटे का सिक्का खूब बैठ गया है। चिपका हुआ टिकट पानी से नहीं छूट रहा है।

मोहसिन-- लेकिन इन खिलौनों के लिए कोई हमें दुआ तो न देगा।

महमूद -- दुआ के लिए फिरते हैं। उल्टे मार न पड़े। अम्माँ जरूर कहेंगी कि मेले में मिट्टी के खिलौने तुम्हें मिले।

हामिद को स्वीकार करना पड़ा कि खिलौनों को देखकर किसी की मँा इतनी खुश न होंगी, जितनी दादी चिमटे को देखकर होंगी। तीन पैसों में ही तो उसे सब कुछ करना था और उन पैसों के इस उपयोग पर पछतावे की बिल्कुल जरूरत न थी। फिर अब तो चिमटा रुस्तमे-हिन्द है और सभी खिलौनों का बादशाह।

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिये। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गये। यह उस चिमटे का प्रसाद था।

(3)

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गयी। मेले वाले आ गये। मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली, तो मियाँ भिश्ती नीचे आ गिरे और सुरलोक सिधारे। इस पर भाई-बहिन में मार-पीट हुई। दोनों खूब रोये। उनकी अम्मा यह शोर सुनकर बिगड़ीं और दोनों को ऊपर से दो-दो चांटे और लगाये।

मियाँ नूरे के वकील का अन्त उसके प्रतिष्ठानुकूल इससे ज्यादा गौरवमय हुआ। वकील जमीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता। उसकी मर्यादा का विचार तो करना ही होगा। दीवार में दो खूटियाँ गाड़ी गयीं। उन पर एक लकड़ी का पटरा रखा गया। पटरे पर कागज का कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। अदालतों में खस की टट्टियाँ और बिजली के पंखे रहते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी न हो। कानून की गरमी दिमाग पर चढ़ जायेगी कि नहीं। बाँस का पंखा आया और नूरे हवा करने लगे। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मर्त्यलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल

गया। फिर बड़े जोर-शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गयी।

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया, लेकिन पुलिस का सिपाही कोई साधारण व्यक्ति तो था नहीं, जो अपने पैरों चले। वह पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आयी, उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाये गये, जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटें। नूरे ने यह टोकरी उठायी और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरफ से 'छोनेवाले, जागते लहो' पुकारते चलते हैं। मगर रात तो अँधेरी ही होनी चाहिए। महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बन्दूक लिये जमीन पर आ जाते हैं और उनकी एक टाँग में विकार आ जाता है। महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डॉक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिल गया है, जिससे वह टूटी टाँग को आनन-फानन जोड़ सकता है। गूलर का दूध आता है। टाँग जोड़ दी जाती है; लेकिन सिपाही को ज्यों ही खड़ा किया जाता है, टाँग जवाब दे जाती है। शल्य क्रिया असफल हुई, तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम से कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

-यह चिमटा कहाँ था ?

-मैंने मोल लिया है।

-कै पैसे में ?

-तीन पैसे में

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दो पहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या यह चिमटा। सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया।

हामिद ने अपराधी भाव से कहा-- तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं, जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ । बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा! इतना जब्त इससे हुआ कैसे। वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया।

और अब एक बड़ी विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गयी। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता।

- प्रेमचन्द

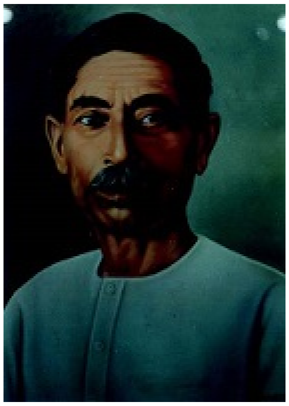

प्रेमचन्द का जन्म सन् 1880 ई0 मंे लमही, वाराणसी में हुआ था। ये कहानी और उपन्यास सम्राट के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं- 'सेवासदन', 'निर्मला', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गबन', 'गोदान' आदि। इनकी कहानियों का संग्रह'मानसरोवर' नाम से आठ भागों में प्रकाशित है। इनका साहित्य समाज सुधार, राष्ट्रीय भावना और सामान्य जनजीवन की घटनाओं से परिपूर्ण है। इनका निधन सन् 1936 ई0 में हुआ।

शब्दार्थ

रोजा=उपवास, अनाहार। **नियामत** = ईश्वर का दिया हुआ धन, अच्छी वस्तुएँ। **विध्वंस** = विनाश, नष्ट। **जाजिम** = बड़ी दरी के ऊपर बिछाने की बड़ी चादर। **वजू** = नमाज से पहले यथाविधि हाथ-पाँव और मुँह धोना। **सिज़दा** = जमीन पर सिर रखकर ईश्वर को प्रणाम करना। **प्रदीप्त** = प्रकाशित होना। **आत्मानन्द** = आन्तरिक सुख। **कवायद**=युद्ध कला का अभ्यास, परेड। **मशक**=चमड़े का बना थैला जिसमें भिश्ती पानी रखता है। **सबील** = वह स्थान जहाँ पर लोगों को पानी, शर्बत आदि पिलाया जाये, प्याऊ। **कुमुक** = सहायता, मदद। **बावरचीखाना**=रसोईघर। **अस्थि** = हड्डी। **आनन-फानन** = तुरन्त, शीघ्र, तत्काल। **प्रगल्भ**=वाक्पटु (वाणी की चतुराई)। **जब्त** = सहन, बर्दाश्त। ईद का मुहर्रम होना=सारी खुशी का शोक में बदल जाना।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

पृथ्वी के चारों ओर परिभ्रमण करते हुए चंद्रमा भी पृथ्वी के साथ-साथ सूर्य का परिभ्रमण करता है। इन्हीं दोनों परिभ्रमणों से वर्ष और मास की गणनाएँ होती हैं। सामान्यतः तीस दिनों के महीने होते हैं जिन्हें चंद्रमा की वार्षिक गति को बारह महीनों में विभाजित करके निर्धारित किया जाता है। तीस दिनों में पंद्रह-पंद्रह दिनों के दो पक्ष होते हैं। जिन पंद्रह दिनों में चंद्रमा बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा तक पहुँचता है, उसे 'शुक्लपक्ष' और जिन पंद्रह दिनों में चन्द्रमा घटते-घटते अमावस्या तक जाता है, उसे 'कृष्णपक्ष' कहते हैं। इस तरह एक वर्ष के बारह महीनों में छह-छह माह के दो अयन होते हैं। जिन छह महीनों में मौसम का तापमान बढ़ता है, उसे उत्तरायण और जिन छह महीनों में मौसम का तापमान घटता है, उसे दक्षिणायन कहते हैं । संवत् के बारह महीनों के नाम इस प्रकार है- चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।

अंग्रेजी कैलेण्डर की वार्षिक गणना सूर्य के चारों ओर पृथ्वी के परिभ्रमण की अवधि के अनुसार तीन सौ पैंसठ दिनों की होती है। इसके महीनों की गणना पृथ्वी के चारों ओर चंद्रमा के परिभ्रमण पर आधारित नहीं है। इसमें वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिनों को ही बारह महीने में विभाजित किया गया है। इस कैलेण्डर के सभी महीने तीस-तीस दिन के नहीं होते। अप्रैल, जून, सितम्बर, नवम्बर- इनके हैं दिन तीस। फरवरी है अट्ठाईस या उनतीस दिन की, बाकी सब इकतीस। नीचे दो प्रकार के कैलेण्डर दिये गये हैं। इन्हें देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

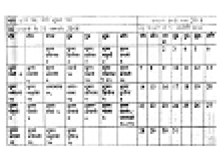

(क) किस कैलेण्डर में चंद्रमा के अनुसार महीने के दिन दिये गये हैं ?

(ख) 26 जनवरी को कौन-सा दिन है ?

(ग) शुक्ल द्वादशी को कौन सा दिन है ?

विचार और कल्पना

1. आप भी अपने आस-पास लगने वाले किसी मेले में अवश्य गये होंगे। लिखिए-

- किसी मेले में गये थे और किसके साथ गये थे ?

- यह मेला कहाँ और कब लगता है ?

- मेले में कौन-कौन सी दुकानें लगीं थीं ?

- आपने क्या-क्या खरीदा और क्यों ?

- मेले में घूमते समय क्या-क्या सावधानियाँ रखीं ?

- मेले में क्या-क्या अच्छा लगा, क्या नहीं ?

- अगर आप या आपका कोई साथी मेले में खो जाते तो क्या करते ?

2. मेले में किस-किस तरह के पोस्टर लगे थे, कोई एक पोस्टर बनाएं।

3. मेले में कई प्रकार के प्रचार या घटनाओं की आवाजें आती रहती हैं ? ऐसी ही किसी आवाज के बारे में बोलकर बताएं।

कहानी से

1. नीचे लिखे शब्दों में से सही शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) हामिद के अब्बाजान का नाम .... था।

(कायमअली, आबिद, महमूद, मोहसिन)

(ख) दुकानदार ने चिमटे का दाम ठीक-ठीक .... पैसे बताया।

(तीन, चार, पाँच, छह)

(ग) हामिद के पास कुल .... पैसे थे।

(तीन, चार, पाँच, छह)

2. किसने क्या खरीदा, तीर (→) के निशान द्वारा जोड़ी बनाइए-

महमूद	सिपाही
मोहसिन	चिमटा
हामिद	खँजरी
सम्मी	भिश्ती

3. जब सभी बच्चे घोड़ों और ऊँटों पर बैठकर पच्चीस चक्करों का मजा ले रहे थे, तब हामिद दूर खड़ा क्या सोच रहा था ?

4. हामिद महँगे खिलौने न खरीद सकने पर अपने-आप को कैसे समझा रहा था ?

5. हामिद ने चिमटा क्यों खरीदा ?

6. हामिद के क्या कहने पर बुढ़िया अमीना का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया ?

7. नीचे लिखे गये वाक्यों को कहानी के क्रम में लिखिए-

- सहसा ईदगाह नजर आया।

- हामिद ने चिमटा खरीदा।

- अमीना परेशान थी, हामिद को अकेले मेले कैसे जाने दें।

- बुढ़िया का क्रोध स्नेह में बदल गया।

- नमाज़ खत्म होने पर लोग गले मिले।

- चिमटे ने सबको मोहित कर लिया।

- अमीना दामन फैलाकर दुआएँ दे रही थी।

8. इस कहानी में आपको कौन सी बात सबसे अच्छी लगी और क्यों ?

भाषा की बात

1. इस पाठ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए -

(क) जिसका जवाब न हो।

(ख) जिसे सहा न जा सके ।

(ग) मन को हरने या आकर्षित करने वाला।

(घ) जिसकी गिनती न की जा सके।

(ङ) जिसको जीता न जा सके।

2. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

आँखें बन्द करना, पैरों में पर लग जाना, राई का पर्वत करना, एड़ी चोटी का जोर लगाना, बाल बाँका न होना।

3. नीचे दिये गये उदाहरणों के अनुसार दिये गये शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए-

आत्मानन्द = आत्मा+आनन्द (आ+आ = आ), शास्त्रार्थ = शास्त्र+अर्थ (अ+अ = आ), प्रतिष्ठानुकूल = प्रतिष्ठा+अनुकूल (आ+अ = आ)।

इच्छानुकूल, धर्मानुकूल, यथावसर, देवाशीष।

4. सूई-धागा और सानी-पानी जैसे पाठ में आये योजक चिह्न (-) वाले ृब्द-जोड़ांे को छाँटकर लिखिए। ध्यान रहे कि दोनों ृब्द एक जैसे न हों, जैसे- धीरे-धीरे में दोनों ृब्द एक ही हैं।

5. ‘छोने वाले, जागते लहो’ तोतली बोली में है, इसे शुद्ध भाषा में लिखिए।

6. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए-

(क) वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है। (ख) खेतों में कुछ अजीब रौनक है। (ग) आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। इसी प्रकार ‘कुछ अजीब’ का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य और बनाइए।

इसे भी जानें

1. प्रेमचंद का मूल नाम धनपत राय था। इन्हें नवाब राय और मुंशी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है

2. महाकुम्भ का मेला भारत में चार स्थानों पर लगता है-

इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश)

नासिक (महाराष्ट्र)

उज्जैन (मध्यप्रदेश)

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

3. भारत में पशुओं का सबसे बड़ा मेला सोनपुर (बिहार) में लगता है।

पाठ 11

4AVVFS

समर्पण

(प्रस्तुत कविता में देश के प्रति सर्वस्व समर्पण की भावना व्यक्त की गयी है।)

मन समर्पित, तन समर्पित,

और यह जीवन समर्पित।

चाहता हूं देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँ तुम्हारा ऋण बहुत है मैं अकिंचन,

किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,

थाल में लाऊँ सजा कर भाल जब भी,

कर दया स्वीकार लेना यह समर्पण।

गान अर्पित, प्राण अर्पित,

रक्त का कण-कण समर्पित।

चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँज दो तलवार को लाओ न देरी,

बाँध दो अब पीठ पर वह ढाल मेरी,

भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,

शीश पर आशीष की छाया घनेरी।

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,

आयु का क्षण-क्षण समर्पित,

चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

- रामावतार त्यागी

रामावतार त्यागी जी का जन्म सन् 1925 ई0 में मुरादाबाद में हुआ था। 'नया खून' और 'आठवाँ स्वर' इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। सन् 1985 ई0 में इनका देहावसान हो गया। इनकी कविताओं में देश-भक्ति और मानव जीवन के प्रति गहरी संवेदनाएँ मिलती हैं।

शब्दार्थ

समर्पित = पूरी तरह भेंट किया हुआ। **अकिंचन** = अत्यन्त निर्धन, दीन-हीन (जिसके पास कुछ न हो)। **निवेदन** = प्रार्थना, विनती। **भाल** = मस्तक,ललाट। **माँज दो तलवार** = तलवार की धार तेज कर दो। **ढाल** = गैंडे के चमड़े से बना कछुए की पीठ जैसा एक उपकरण जिसे पीठ पर बाँध कर लोग युद्ध करते थे। यह भाले और तलवार के आघात से रक्षा करती थी। **घनेरी** = घनी।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. नीचे कुछ महान देश-भक्तों के चित्र दिये गये हैं। उन्हें पहचानिए तथा उनके बारे में दो-दो वाक्य लिखिए-

3. नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, इनकी मदद से आप भी कविता बनाइए -

सूरज, सवेरे, धूप, पत्ती, खिलाता, महकाता, फूल, पौधे, कली, मुस्काना, गाना, खिली,

गन्ध, फल, लाल, पंछी, चहकना, आँख।

2. निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और साथियों से पूछने के लिए पाँच प्रश्न बनाइए-

‘माँज दो तलवार को लाओ न देरी,

बाँध दो अब पीठ पर वह ढाल मेरी,

भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,

शीश पर आशीष की छाया घनेरी।’

4. आपके आस-पास भी कोई ऐसे सैनिक होंगे जिसने देश की रक्षा करते समय जोखिमों का सामना किया होगा। अपने बड़ों के साथ उनसे मिलिए और उनका साक्षात्कार लेकर उनके बारे में जानिए।

विचार और कल्पना

1. हम सभी अपने-अपने ढंग से अपने देश की सेवा कर सकते हैं। बताइए, आप देश की सेवा किस-किस प्रकार से कर सकते हैं ?

2. सैनिक अनेक कठिनाइयाँ सहकर देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं। आप अपने विद्यालय की सम्पत्ति और उसकी सीमा की रक्षा किस प्रकार करेंगे, लिखिए।

कविता से

1. सब कुछ समर्पण के बाद भी कवि क्यों सन्तुष्ट नहीं है ?

2. 'थाल में भाल सजाने' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

3. निम्नलिखित भाव कविता की किन पंक्तियों में व्यक्त हुए हैं -

(क) जननी जन्मभूमि की देन के समक्ष कवि अपने को बहुत दीन-हीन समझ रहा है।

(ख) कवि अपना हर्ष-उल्लास और प्राण न्योछावर कर देना चाहता है।

(ग) कवि अपने जीवन की कल्पनाओं, जिज्ञासाओं और आयु को हर क्षण समर्पित करना चाहता है।

(घ) कवि अपने हाथों में तलवार लेकर रणक्षेत्र में कूदना चाहता है।

4. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,

शीश पर आशीष की छाया घनेरी।

(ख) गान अर्पित, प्राण अर्पित,

रक्त का कण-कण समर्पित।

भाषा की बात

नीचे कविताओं की तीन पंक्तियाँ दी गयी हैं, इनमें रेखांकित शब्द दो बार आये हैं, इन्हें पुनरुक्त (पुनः+उक्त) शब्द-युग्म कहते हंै।

रक्त का कण-कण समर्पित,

आयु का क्षण-क्षण समर्पित,

नीड़ का तृण-तृण समर्पित।

इस प्रकार के शब्दों के चार जोड़े दिये जा रहे हैं, उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क) घर-घर (ख) मीठे-मीठे

(ग) डाली-डाली (घ) चलते-चलते

पढ़ने के लिए-

थाल सजाकर किसे पूजने चले प्रात ही मतवाले,

कहाँ चले तुम राम नाम का पीताम्बर तन पर डाले।

इधर प्रयाग न गंगा सागर इधर न रामेश्वर काशी,

इधर कहाँ है तीर्थ तुम्हारा कहाँ चले तुम संन्यासी।

चले झूमते मस्ती से क्या तुम अपना पथ आये भूल,

कहाँ तुम्हारा दीप जलेगा कहाँ चढ़ेगा माला फूल।

मुझे न जाना गंगा सागर मुझ न रामेश्वर काशी,

तीर्थराज चित्तौड़ देखने को मेरी आँखें प्यासी।

-श्यामनारायण पाण्डेय

शिक्षण संकेत

ऊपर लिखी गई कविता का छात्रों से वाचन कराएँ।

इसे भी जानें

अशोक चक्र - शान्ति के दौरान वीरता या साहस दिखाने या बलिदान के लिए दिया जाने वाला देश का सर्वोच्च वीरता सम्मान है।

पाठ 12

4B5RHF

साप्ताहिक धमाका

(इस पाठ में बाल अखबार के महत्त्व और उपयोगिता का रोमांचकारी वर्णन बड़े ही रोचक ढंग से किया गया है।)

इतवार की सुबह पूरे मुहल्ले में 'साप्ताहिक धमाका' की ही चर्चा थी। फुलस्केप कागजों पर कार्बन लगाकर हाथ से लिखा गया 'साप्ताहिक धमाका' का पहला अंक सभी ने सुबह-सुबह अपने घर के दरवाजे पर पड़ा पाया था। उस अंक की मुख्य खबर बड़े-बड़े अक्षरों में थी: 'लाला धनीराम के मसालों में मिलावट।' फिर छोटे अक्षरों में पूरा विवरण दिया गया था। मसाले, चीनी, अनाज आदि में लाला ने जो मिलावट की थी, उसके प्रति सबको आगाह किया गया था। लाला के घिसे हुए पुराने बाटों की चर्चा थी। कम तौलने की कला में माहिर लाला को पुरस्कृत करने का प्रस्ताव भी था।

'साप्ताहिक धमाका' में कुछ खबरें चटपटी थीं, कुछ तिलमिलाने वाली। कुछ खबरों के शीर्षक थे: 'गुटकू भटनागर बैंगन की सब्जी से चिढ़ते हैं', 'ठेकेदार हजारासिंह ने लड़की की शादी में पचास हजार नकद दहेज दिया', 'हेडमास्टर चोपड़ा के घर स्कूल के चपरासी काम करते हैं', 'क्लासटीचर सोहनलाल ने तीन महीने की फीस अब तक स्कूल में जमा नहीं की।' साप्ताहिक के दूसरे पृष्ठ पर कुछ शैतान बच्चों के बारे में खबरें दी गयीं थीं: वीरू ने पिता की घड़ी चुराकर पचास रुपयों में बेची', 'राजेश का सफेद कुत्ता चोरी हो गया', 'दीनू और रमेश ने स्कूल से भागकर पिक्चर देखी।'

अखबार के अंत में अगले अंक के मुख्य आकर्षण दिये गये थे: 'रिश्वतखोर मुंशी शादीलाल के काले कारनामे', 'सनातन धर्म मंदिर ट्रस्ट के हिसाब में घोटाला', 'सीक्रेट एजेन्ट डेविड की विशेष रिपोर्ट', 'मुहल्ले के शराबियों का भंडा-फोड़ !'

'साप्ताहिक धमाका' की ऐसी सनसनीखेज खबरें पढ़कर सभी हैरान थे। खबरें न केवल सच्ची थीं, बल्कि कान खड़े करने वाली थीं। संपादक के नाम के आगे 'हम बच्चे' लिखा देखकर यह समझने में मुश्किल नहीं हुई कि यह काम कुछ बच्चों का है। कुछ लोग बच्चों के इस साहस भरे काम से खुश थे। कुछ अपनी पोल खुलने से बेहद खिसियाए हुए थे।

लाला धनीराम की दुकान में तो सुबह-सुबह ही हंगामा हो गया था। टंडन साहब ने एक किलो चीनी तुलवाई। फिर किलो का बाट उठाकर देखा तो नीचे से खोखला पाया। हर तौल में कम से कम सौ ग्राम का घोटाला ! लोग इकट्ठे हो गये। खूब चखचख हुई। गुटकू भटनागर निकले तो बच्चे उन्हें 'बैंगन की सब्जी' कहकर चिढ़ाने लगे। बस यों समझिए कि हर तरफ 'धमाका' हो रहा था। सब यही पूछते: 'यह किसने किया है ? कौन हैं ये बच्चे ?' लेकिन जवाब कोई न दे पाता। देता भी कैसे ? 'साप्ताहिक धमाका' की योजना बहुत ही गुप्त ढंग से बनी थी।

अगले इतवार को जब 'साप्ताहिक धमाका' का दूसरा अंक बँटा तो लगा जैसे किसी ने मिचार्ं के पैकेट खोलकर हवा में उछाल दिये हों। मुहल्ले के कई सम्मानित कहे जाने वाले लोगों की पोल खुल गयी थी। मंदिर का चंदा खाने वाले, बच्चों को ऊधमी और पापी कह रहे थे। चोरी-छिपे शराब

पीने वाले अपनी सफाई दे रहे थे। मुंशी शादीलाल चिल्लाकर कह रहे थे: ' मैं एक-एक की खबर लूँगा। जेल की हवा खिलवा दँूगा। मैं भी मुंशी हूँ मुंशी !'

कई दिनों तक यही कोशिश चलती रही कि 'साप्ताहिक धमाका' के बच्चों का पता लगाया जाय। कौन लिखता है इसे ? कौन खबरें इकट्ठी करता है ? कब बाँटा जाता है ? मुहल्ले के लगभग सभी बच्चों की लिखावट के नमूने इकट्ठे किये गये। कुछ शैतान बच्चों की हरकतों पर निगाह रखी गयी। लेकिन सफलता न मिलनी थी, न मिली।

हारकर मुहल्ले के सभी बड़े लोगों की एक मीटिंग बुलायी गयी। मुंशी शादीलाल ने कहा: 'ऐसे सनसनीखेज काम आजादी की लड़ाई के जमाने में क्रांतिकारी किया करते थे। उनका भी पता अंग्रेजों को लग ही जाता था।

हैरानी है कि हम अपने ही दुश्मनों को नहीं पहचान पा रहे हैं।'

इस पर प्रोफेसर माथुर ने कहा: 'यह काम भी आजादी की लड़ाई के दिनों जैसा ही है। आज इस बात की बहुत जरूरत है कि जो लोग समाज और देशवासियों के दुश्मन हैं उनका भंडाफोड़ किया जाय। यह काम हमें करना चाहिए था, लेकिन बच्चे कर रहे हैं। मैं उन बच्चों को बधाई देता हूँ।'

फिर तो मीटिंग में बहुत हंगामा हुआ। बिना किसी निर्णय के मीटिंग खत्म हुई । इतवार की सुबह 'साप्ताहिक धमाका' में अन्य खबरों के साथ मीटिंग की रिपोर्ट भी थी। सबसे मजेदार खबर थी: ''लाला धनीराम द्वारा 'साप्ताहिक धमाका' बाँटनेवाले को पकड़ने की कोशिश नाकाम।'' दरअसल लाला धनीराम सुबह चार बजे उठकर घर के बाहर अँधेरे में बैठ गये थे। लेकिन जब उजाला हुआ तो देखा कि 'साप्ताहिक धमाका' तो पहले ही बँट चुका था।

'साप्ताहिक धमाका' के ताजा अंक में उन घरों के नंबर दिये गये थे जहाँ, रेडियो बहुत जोर से बजता है। अपील की गयी थी कि इससे मुहल्ले के बच्चों की पढ़ाई में बाधा पड़ती है। कृपया रेडियो धीमा बजाइए। मंदिर में रोज होने वाले कीर्तन को लाउडस्पीकर पर न बजाने की अपील भी की गयी थी। अगले अंक के दो प्रमुख आकर्षण थे: 'नकली दवाएँ देने वाले डाक्टरों से सावधान !' और 'ब्रिगेडियर कपूर की मुर्गियों का चोर कौन ?'

अगर 'साप्ताहिक धमाका' कुछ लोगों पर चोट करता तो दूसरी ओर वह लोकप्रिय भी हो रहा था। नगर के एक दैनिक पत्र में बच्चों द्वारा गुप्त रूप से किए जाने वाले इस काम पर संपादकीय भी छपा। 'साप्ताहिक धमाका' का महत्त्व तब और बढ़ गया, जब कई डाक्टरों के यहाँ नकली दवाइयाँ पकड़ी गयीं। इसके साथ ही ब्रिगेडियर कपूर ने अब्दुल्ला होटल के मालिक की पुलिस में रिपोर्ट की। पुलिस की मार ने अब्दुल्ला से मुर्गियों की चोरी उगलवा ली।

धीरे-धीरे मुहल्ले में काफी सफाई हो गयी। एक दिन अचानक ही घोषणा हुई कि 'साप्ताहिक धमाका' के संपादक बच्चों को पुरस्कार देने के लिए शाम को सभा होगी। सभी लोग उन बच्चों को देखने के लिए उत्सुक थे। मुहल्ले के पार्क में दोपहर में ही शामियाना लग गया। लाउडस्पीकर पर फिल्मी गाने बजने लगे।

शाम को पंडाल खचाखच भर गया। सनातन धर्म मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष चिरंजीलाल, मुंशी शादीलाल, लाला धनीराम, डाक्टर चेलाराम आदि मंच पर बैठे थे। सभा की कार्यवाही शुरू करते हुए अध्यक्ष चिरंजीलाल ने अपने भाषण में कहा: हम 'साप्ताहिक धमाका' के संपादक बच्चों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं। उन्होंने हमारी गलतियाँ बताकर हमें सही राह दिखाई है। हमने तय किया है कि हर बच्चे को इस काम के लिए पाँच-पाँच सौ रुपये का इनाम दिया जाय। लेकिन हम नहीं जानते कि वे बहादुर बच्चे कौन हैं ? इसलिए हम उनसे निवेदन करते हैं कि वे सब मंच पर आयें, अपना परिचय दें और पुरस्कार लें।''

भाषण समाप्त हो गया। मंच पर बैठे लोग सामने बैठी भीड़ की ओर देखने लगे। भीड़ में बैठे सब लोग अपने पीछे मुड़-मुड़कर देखने लगे कि वे कौन से बच्चे हैं? किन्तु एक भी बालक मंच की ओर नहीं बढ़ा। दो मिनट, पाँच मिनट और फिर दस मिनट बीत गए। धीरे-धीरे शोर होने लगा। लोग मंच पर बैठे 'नेताओं' की खिल्ली उड़ाने लगे। सभा समाप्त हो गयी।

'साप्ताहिक धमाका' के अगले अंक में मुख्य खबर छपी: 'संपादक बच्चों को ब्लैकमेल करने की चाल नाकाम।' फिर खुलासा किया गया कि 'साप्ताहिक धमाका' के संपादक बच्चों को पहचानने के लिए यह कितना बड़ा षड्यंत्र था। इसके बाद से 'साप्ताहिक धमाका' और भी जोर से धमाका करने लगा। परिणाम यह हुआ कि लोग अपने को धीरे-

धीरे बदलने लगे। रेडियो और भजन-कीर्तन वाले लाउडस्पीकरों का स्वर धीमा हो गया। मुंशी शादीलाल भी कहने लगे: ‘अरे भाई ! इस वानरसेना से कौन दुश्मनी ले ? जो भगवान दे उसी में खुश हूँ।’ डाक्टरों के यहाँ भी ठीक दवाएँ मिलने लगीं।

‘साप्ताहिक धमाका’ अभी बंद नहीं हुआ। हर इतवार की सुबह उसके अंक बँट जाते हैं। अब एक राज की बात सुनो। पिछले दिनों मैंने ‘साप्ताहिक धमाका’ के संपादक बच्चों से मुलाकात की। उन्हें इस साहसिक और जोखिम भरे काम के लिए बधाई दी। सबसे अधिक प्रशंसा इस बात के लिए की कि उन्होंने अपनी गोपनीयता बनाये रखी।

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि ये संपादक बच्चे उसी मुहल्ले के हैं। इनकी संख्या चार है। चारों बिल्कुल सहज होकर रहते हैं। लेकिन उनकी तेज निगाह से कोई बात छिप नहीं पाती। पहले अखबार की एक प्रति तैयार की जाती हंै, फिर चार प्रतियाँ। इसके बाद चारों बच्चे मिलकर उसकी ढेर सारी प्रतियाँ बनाते हैं। जानते हो इनकी लिखावट क्यों नहीं पकड़ में आती ? इसलिए कि चारों ने बाएँ हाथ से लिखने का भी अच्छा अभ्यास किया है।

उन्होंने यह नहीं बताया कि वे अपना काम कब और कहाँ करते हैं ? उन्हें अपनी सफलता पर ख़ुशी है | उनका कहना है कि जैसे ही उनके मुहल्ले की समस्याएं हल हो जाएँगी, 'धमाका' बंद हो जाएगा | लेकिन ज़रुरत पड़ने पर वे उसे दुबारा शुरू कर देंगे | इसीलिए उन्होंने अपनी सभी बैटन को गुप्त रखा है |

अगर कहीं 'साप्ताहिक धमाका' का अंक मिले तो ज़रूर पढ़ना | वह समाज के नाम बच्चों की चुनौती है | सुना है, 'साप्ताहिक धमाका' का ज़ोरदार विशेषांक भी निकलने वाला है |

- हरिकृष्ण देवसरे

'साप्ताहिक धमाका' के लेखक डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे का जन्म 3 मार्च सन् 1940 ई0 को नागोद, सतना (म0 प्र0) में हुआ। उनके शोध का शीर्षक 'हिन्दी बाल साहित्य: एक अध्ययन' था। हिन्दी जगत में बाल साहित्य पर आधारित यह प्रथम शोध- प्रबन्ध है। आप सन् 1960 ई0 से सन् 1984 ई0 तक 'आकाशवाणी' में रहे। तदुपरान्त स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण करके सन् 1984 ई0 से सन् 1991 ई0 तक 'पराग' मासिक बाल पत्रिका के सम्पादक के रूप में कार्य किया। आपने बच्चों के लिए 300 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, इसके अतिरिक्त आपने समीक्षा, आलोचना और कई अंग्रेजी पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद भी किये हैं। इनका निधन 14 नवम्बर 2013 को हुआ।

शब्दार्थ

सीक्रेट एजेंट = गुप्तचर, जासूस। **सनसनीखेज** = आश्चर्य चकित कर देने वाली। **प्रोफेसर** = आचार्य। **ब्रिगेडियर** = थल सेना का एक उच्च पद, एक ब्रिगेड का अधिकारी। **ट्रस्ट** = न्यास, संघ। **विशेषांक** = किसी पत्र-पत्रिका का वह अंक, जो किसी विशिष्ट अवसर पर, विशेष प्रकार की उपयोगी सामग्री के साथ प्रकाशित किया गया हो।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अखबार से जुड़े निम्नलिखित शब्दों को देखिए और पता कीजिए कि किसी अखबार में इनकी क्या भूमिका होती है-

सम्पादक, संवाददाता, निज प्रतिनिधि, फोटोग्राफर।

2. जब केवल चार बच्चे अखबार निकाल सकते हैं तो आप लोग क्यों नहीं ? अपने शिक्षक की सहायता से साप्ताहिक अखबार निकालें और विद्यालय के सूचना-पट्ट पर लगाएं।

3. आप अपने विद्यालय में अध्यापक की सहायता से एक बैठक का आयोजन कीजिए और छात्र-छात्राओं का दो समूह बनाइए, जिसमें से एक समूह विद्यालय से सम्बन्धित समस्याएँ रखे तथा दूसरा समूह उसका समाधान प्रस्तुत करे।

4. अखबार (समाचार पत्र) प्रायः दैनिक, साप्ताहिक अथवा पाक्षिक होते हैं और पत्रिकाएँ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक अथवा वार्षिक होती हैं| निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर तीन - तीन पत्र - पत्रिकाओं के नाम लिखिए -

(क) दैनिक -

(ख) साप्ताहिक -

(ग) पाक्षिक -

(घ) मासिक -

(ड.) वार्षिक -

5. नीचे एक अखबार में छपी खबर के मुख्य शीर्षक दिए गए हैं| शीर्षक पढ़कर आगे की खबर पूरी कीजिये -

(क) मानक से 20 गुना ज्यादा दूषित हवा : बढ़ रहा है वायु प्रदूषण|

(ख) सड़क दुर्घटना में साइकिल सवार की मौत : मोबाइल का प्रयोग एवं हेलमेट न पहनना बना मृत्यु का कारण|

(ग) उच्च प्राथमिक विद्यालय में जगी स्वच्छता की अलख : बच्चों ने लिया आस पास को स्वच्छ रखने का संकल्प|

विचार और कल्पना

1. लोगों तक समाचार पहुंचाने के दो माध्यम होते हैं - एक प्रिंट मीडिया और दूसरा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया| प्रिंट मीडिया के अंतर्गत समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ आती हैं| इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत कौन कौन से समाचार माध्यम सम्मिलित हैं उन्हें लिखिए|

2. आप प्रतिदिन कोई न कोई दैनिक समाचार पत्र अवश्य पढ़ते होंगे, इनमें केवल स्थानीय खबरें ही नहीं होती हैं बल्कि विविध क्षेत्रों से सम्बंधित सूचनाएं और समाचार प्रकाशित होते हैं, उन्हें लिखिए|

कहानी से

1. 'साप्ताहिक धमाका' क्यों निकला गया ?

2. 'साप्ताहिक धमाका' को निकालने वाले कौन थे और वे किस प्रकार अनेक प्रतियां तैयार करते थे?

3. पहले अंक की ख़ास - ख़ास खबरें क्या क्या थीं तथा लाला धनीराम की दुकान में सुबह - सुबह हंगामा क्यों हो गया ?

4. चिरंजीलाल ने अपने भाषण में क्या कहा और क्यों कहा ?

5. 'साप्ताहिक धमाका' अखबार के दूसरे अंक की प्रमुख खबर थी -

(क) सम्मानित लोगों के अच्छे काम- कभी नहीं करते आराम।

(ख) सम्मानित लोगों की पोल खुली- चंदा खाने वाले और चोरी-छिपे शराब पीने वाले बेनकाब।

(ग) जैसा नाम वैसा काम- मुंशी शादीलाल हुए बदनाम।

(घ) मिर्ची हवा में उछली- बंद कीजिए आँखें खुली।

उपरोक्त समाचार किन संदर्भों में प्रकाशित हुआ ?

भाषा की बात

1. 'विशेष' में 'अंक' जोड़कर 'विशेषांक' शब्द बनाया गया है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'अंक' जोड़कर शब्द बनाएँ-

क्रम, प्रवेश, जन्म, गत।

2. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढं़े-

(क) खबरें न केवल सच्ची थीं बल्कि कान खड़े करने वाली थीं।

(ख) बात न केवल झूठी थी बल्कि शर्म से गड़ने वाली थी।

इसी प्रकार नीचे दिये गये जोड़ों से एक-एक वाक्य बनाइए-

दुखदायी - आसमान टूट पड़ना।

त्रस्त - नाक में दम करना।

दुष्ट - सिर पर सवार होना।

आप चाहें तो दुखदायी, त्रस्त और दुष्ट के स्थान पर अन्य उचित शब्दों का भी प्रयोग कर सकते है

इसे भी जानें

हिन्दी भाषा का सबसे पहला अखबार ‘उदन्त मार्तण्ड’ कोलकाता से सन् 1826 ई. में प्रकाशित हुआ।

शिक्षकों हेतु-

बच्चों को बाल अखबार तैयार करने में सहायता दें।

विद्यालय, गाँव, मुहल्ले से सम्बंधित खबरों को सम्मिलित कराएँ।

पाठ 13

अमर शहीद भगत सिंह के पत्र

(भगत सिंह समय-समय पर अपने हितैषियों को पत्र लिखते रहते थे। उन पत्रों से उनकी देशभक्ति, त्याग-भावना और स्वदेश के लिए सर्वस्व अर्पित करने की दृढ़ कामना का परिचय मिलता है। इस पाठ में उनके कुछ पत्र दिये गये हैं।)

(1)

(जेल में माँ से भेंट न होने पर भाई कुलबीर सिंह को पत्र)

प्रिय भाई कुलबीर सिंह जी !

सत श्री अकाल।

मुझे यह जानकर कि एक दिन तुम माँ जी को साथ लेकर आये और मुलाकात का आदेश नहीं मिलने से निराश होकर वापस लौट गये, बहुत दु:ख हुआ। तुम्हें तो पता चल चुका था कि जेल में मुलाकात की इजाजत नहीं देते। फिर माँ जी को साथ क्यों लाये ? मैं जानता हूँ कि इस समय वे बहुत घबरायी हुई हैं, लेकिन इस घबराहट और परेशानी का क्या फायदा, नुकसान जरूर है, क्योंकि जब से मुझे पता चला कि वे बहुत रो रही हैं, मैं स्वयं भी बेचैन हो रहा हूँ। घबराने की कोई बात नहीं, फिर इससे कुछ मिलता भी नहीं।

सभी साहस से हालात का मुकाबला करें। आखिरकार दुनिया में दूसरे लोग भी तो हजारों मुसीबतों में फँसे हुए हैं। और फिर अगर लगातार एक बरस तक मुलाकातें करके भी तबीयत नहीं भरी तो और दो-चार मुलाकातों से भी तसल्ली न होगी। मेरा ख्याल है कि

फैसले और चालान के बाद मुलाकातों से पाबन्दी हट जायेगी, लेकिन माना कि इसके बावजूद मुलाकात की इजाजत न मिले तो........ इसलिए घबराने से क्या फायदा ?

तुम्हारा भाई,

भगत सिंह

सेंट्रल जेल, लाहौर

3 मार्च, 1931

(2)

(बलिदान से एक दिन पहले कैदी साथियों को लिखा गया अन्तिम पत्र)

साथियो ! 22 मार्च, 1931

साथियों !

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं इसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मैं एक शर्त पर जिन्दा रह सकता हूँ कि मैं कैद होकर या पाबन्द होकर जीना नहीं चाहता।

मेरा नाम हिन्दुस्तानी क्रान्ति का प्रतीक बन चुका है और क्रान्तिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊँचा उठा दिया है- इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में

इससे ऊँचा मैं हरगिज़ नहीं हो सकता।

आज मेरी कमजोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं, अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे ज़ाहिर हो जायेंगी और क्रान्ति का प्रतीक-चिह्न मद्धिम पड़ जायेगा या सम्भवतः मिट ही जाय लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ अपने बच्चों को भगत सिंह बनने की आरज़ू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जायेगी कि क्रान्ति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हाँ, एक विचार भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ भाग भी पूरा नहीं करा सके, अगर स्वतन्त्र जिन्दा रह सकता तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर सकता।

इसके सिवाय मेरे मन में कभी कोई लालच फाँसी से बचने का नहीं आया। मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है, अब तो बड़ी बेताबी से अन्तिम परीक्षा का इन्तजार है, कामना है कि यह और नजदीक हो जाय।

आपका साथी

-भगत सिंह

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर सन् 1907 ई0 को पंजाब के लायलपुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह था। सरदार भगत सिंह बचपन से ही क्रान्तिकारी विचारों वाले थे। बड़े होने पर ये ब्रिटिश साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे। चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खाँ जैसे क्रान्तिकारियों की तरह ही भगत सिंह का नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। भगत सिंह हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सदस्य थे। साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के सिलसिले में पंजाब केशरी लाला लाजपत राय पर पुलिस ने प्राणघातक प्रहार किया था। पुलिस अधीक्षक सांडर्स को इसके लिए जिम्मेदार मानते हुए भगत सिंह ने गोलियाँ चलाकर उसकी हत्या कर दी थी। इसी मामले में दूसरा पुलिस अफसर मिस्टफर्म भी मारा गया था। ब्रिटिश सरकार ने अन्यायपूर्ण ढंग से इन्हें 23 मार्च सन् 1931 ई0 को फाँसी दे दी ।

शब्दार्थ

जिन्दगी = जीवन। **एलान** = घोषणा। **ताबेदार** = आज्ञाकारी। **हालात** = स्थिति। **तसल्ली** = सांत्वना, ढाढ़स। **क्रान्ति** = परिवर्तन के लिए आन्दोलन। **हरगिज** = कभी भी, कदापि। **जाहिर** = प्रकट। **प्रतीक-चिह्न** = पहचान। **मद्धिम** = धीमा। **आरजू** = कामना/इच्छा। **कुर्बानी** = बलिदान। **तादाद** = संख्या। **हसरतें** = इच्छाएँ। **साम्राज्यवाद** = अन्य देशों को अपने अधिकार में ले लेने और उन पर शासन करने की नीति। **सत श्री अकाल** = सिक्ख सम्प्रदाय में अभिवादन की शब्दावली। **साइमन कमीशन** = ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शासन में सुधार की दृष्टि से इस कमीशन का गठन किया था। इसके अध्यक्ष ‘साइमन’ नामक अंग्रेज थे।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. मोटे तौर पर पत्रों को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- व्यक्तिगत पत्र, व्यापारिक पत्र, शासकीय पत्र और सम्पादकीय पत्र। व्यक्तिगत पत्र अपने सम्बन्धित लोगों

को लिखे जाते हंै। इन पत्रों में प्रेषक को अपना पता और तिथि सबसे ऊपर दाहिनी ओर लिखना चाहिए। बाइं तरफ आदर सूचक (जैसे- पूज्य, महोदय) तथा प्रियता बोधक (जैसे- प्रिय) शब्द लिखना चाहिए। सम्बोधन के बाद तथ्य लिखे जाते हैं। पत्र के अन्त में हस्ताक्षर के पूर्व श्रद्धासूचक या प्रेमसूचक (जैसे- आपका आज्ञाकारी, तुम्हारा शुभेच्छु) शब्द का प्रयोग किया जाता है। उपर्युक्त संकेत के आधार पर अपने मित्रों को अपनी पढ़ाई की स्थिति के सम्बन्ध में पत्र लिखिए।

2. पत्रों के माध्यम से समाचार भेजने का मुख्य साधन डाकघर रहे हैं। किन्तु आज संचार की क्रान्ति का युग है। वर्तमान में पत्र के अलावा और कौन-कौन माध्यम हैं, जिनसे संदेश भेजा जाता है, लिखिए।

3. अपने पास के डाकघर में जाकर पता लगाइए कि पत्र किस प्रकार दूर-दराज के स्थानों पर पहुँचाये जाते हैं।

4. आप अपने जीवन में आगे क्या करना चाहते हैं और क्यों ? इसके लिए अपने माता-पिता को एक पत्र लिखें ।

विचार और कल्पना

1. भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर सन् 1907 ई0 को हुआ तथा उन्हें फाँसी 23 मार्च सन् 1931 ई0 को दी गयी। बताइए कि वे कुल कितने समय जीवित रहे ?

2. भगत सिंह के मन में देश और मानवता के लिए कुछ करने की हसरत थी। अपने देश और समाज की अच्छाई के लिए आप क्या कर सकते हैं ?

पत्र से

1. भगत सिंह ने अपने पत्र में माँ के लिए क्या संदेश भेजा ?

2. भगत सिंह किस शर्त पर जिन्दा रह सकते थे ?

3. भगत सिंह हँसते-हँसते फाँसी क्यों चढ़ना चाहते थे ?

भाषा की बात

1. ‘क्रान्तिकारी दल’ में ‘दल’ संज्ञापद है। ‘दल’ की विशेषता बताने वाला शब्द ’क्रान्तिकारी’ विशेषण है। निम्नांकित शब्दों को पढ़िए और विशेषणपदों को चुनकर लिखिएः-

प्राणघातक प्रहार, दृढ़ कामना, अन्तिम परीक्षा, शैतानी शक्तियाँ, हिन्दुस्तानी माताएँ।

2. छोटी-छोटी में योजक चिह्न (-) का प्रयोग हुआ है। इस चिह्न का प्रयोग पाँच प्रकार से होता है-

(क) दो शब्दों के बीच ‘और’ के स्थान पर, जैसे- माता-पिता, रात-दिन।

(ख) पुनरुक्त शब्दों के बीच, जैसे- छोटी-छोटी, धीरे-धीरे।

(ग) दो शब्दों के बीच का, के, की, के स्थान पर, जैसे - देश-गान, त्याग-भाव।

(घ) तुलना के लिए प्रयोग में आने वाले ‘सा’, ‘सी’, ‘से’ के पूर्व, जैसे- गोला-सा, भोली-सी, विचित्र-से।

(ङ) दो शब्दों के बीच ‘न’ या ‘से’ आने पर, जैसे- एक-न-एक, बड़े-से-बड़े।

उपर्युक्त पाँचो प्रकार के योजक चिह्न युक्त शब्दों के एक-एक अन्य उदाहरण दीजिए।

3. ‘बेचैन’ में ‘बे’ उपसर्ग लगा है। इसी प्रकार ‘प्र’ उपसर्ग की सहायता से ‘प्रबल’ शब्द बनाया गया है। ‘बे’ और ‘प्र’ उपसर्ग से बने दो-दो शब्द लिखिए।

इसे भी जानें

‘इन्कलाब जिन्दाबाद’ - भगत सिंह

पाठ 14

4BNIKQ

लोकगीत

(इस पाठ में लेखक ने लोकगीतों तथा लोकनृत्यों के सांस्कृतिक महत्त्व पर प्रकाश डाला है |)

लोकगीत अपनी लोच, ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय और देशी दोनों प्रकार के संगीत से भिन्न है| लोकगीत सीधे जन सामान्य के गीत हैं| घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये | इनके लिए साधना की आवश्यकता नहीं होती | त्योहारों और विशेष अवसरों पर ये गाये जाते हैं| इनको रचने वाले भी अधिकतर अनपढ़, गाँव के लोग ही हैं| स्त्रियों ने भी इनकी रचना में विशेष भाग लिया है| ये गीत बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झांझ, करताल, बांसुरी आदि की सहायता से गाये जाते हैं|

अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर कसीहै और इस प्रकार के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं| प्रान्तों की विविध सरकारों ने भी लोक साहित्य के पुनरुद्धार में हाथ बंटाया है और सभी राज्यों में इस सम्बन्ध का एक विभाग चालू कर दिया है या सार्वजनिक अधिवेशन, पुरस्कार आदि द्वारा इसका प्रोत्साहन, प्रचार और वृद्धि शुरू कर दी है|

लोकगीतों के कई प्रकार हैं| इनका एक प्रकार तो बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है| यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है| मध्यप्रदेश, दक्षिण, छोटा नागपुर में गोंड - खांड, ओरॉंव - मुंड, भील - संथाल आदि फैले हुए हैं, जिनमें आज भी जीवन, नियमों की जकड में बंध न सका और वह निर्द्वंद लहराता है| इनके गीत और नृत्य अधिकतर साथ साथ

और बड़े बड़े दलों में गाये और नाचे जाते हैं| आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक दूसरे के जवाब में गाते हैं, दिशायें गूँज उठती हैं|

पहाड़ी प्रदेशों के अपने - अपने गीत हैं| उनके अपने - अपने भिन्न रूप होते हुए भी अशास्त्रीय होने के कारण उनमें अपनी एक सामान भूमि है| गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी-अपनी विधियाँ हैं। उनका अलग नाम ही पड़ गया है- 'पहाड़ी'।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहात में हैं। इनका सम्बन्ध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमें। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्जापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के पूर्वी और बिहार के पश्चिमी जिलों में गाये जाते हैं। बाउल और भटियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया भी इसी प्रकार के हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल सम्बन्धी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाये जाते हैं। इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को इतना मान न देकर अपने गीतों के विषय रोजमर्रा के जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म का स्पर्श करते हैं। उनके राग भी साधारणतः पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि हैं। ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाये जाते हैं। लोकगीत की भाषा नित्य की बोली होने के कारण बड़ी आह्लादकर और आनन्ददायक होती है। राग तो इन गीतों के आकर्षक होते ही हैं, इनकी समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण है।

भोजपुरी में पिछले अनेक वर्षों से 'विदेशिया' का खूब प्रचार हुआ है। गानेवालों के अनेक दल इन्हें गाते हैं। उधर के भागों में विशेषकर बिहार में विदेशिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं है। इन गीतों में अधिकतर रसिकों की बात रहती है और इनसे करुणा और विरह का जो रस बरसता है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

जंगल की जातियों के अलावा गाँव के लोगों के गीत होते हैं, जो बिरहा आदि में गाये जाते हैं। जिसमें पुरुष एक ओर और महिलाएँ दूसरी ओर एक दूसरे के जवाब में दल बाँधकर गाते हंै। और दिशाएँ गुँजा देते हैं। पर इधर कुछ काल से इस प्रकार के दलीय गायन का ह्रास हुआ है।

दूसरे प्रकार के बड़े लोकप्रिय गाने 'आल्हा' हैं। अधिकतर ये बुन्देलखंडी में गाये जाते हैं। आरम्भ तो इनका चन्देल राजाओं के राजकवि जगनिक से माना जाता है, जिसने आल्हा-ऊदल की वीरता का बखान किया। उनके छन्द और विषय को लेकर लोकबोली में उसके दूसरे देहाती कवियों ने भी समय-समय पर अपने गीतों में उतारा और ये गीत हमारे गाँवों में आज भी बहुत प्रेम से गाये जाते हैं।

इनको गाने वाले गाँव-गाँव ढोलक लिये गाते फिरते हैं। इसकी सीमा पर उन गीतों का भी स्थान है, जिन्हें नट रस्सियों पर खेल करते हुए गाते हैं। अधिकतर ये गद्य-पद्यात्मक हैं और इनके अपने बोल हैं। अपने देश में स्त्रियों के गीतों की अनन्त संख्या है। ये गीत भी लोकगीत हैं, पर अधिकतर इन्हें औरतें ही गाती हैं। इन्हें सिरजती भी अधिकतर वही हैं। वैसे इन्हें रचने वाले या गाने वाले पुरुषों की भी कमी नहीं है, पर इन गीतों का सम्बन्ध विशेषतः स्त्रियों से है। इस दृष्टि से भारत इस दिशा में सभी देशों से भिन्न है, क्योंकि संसार के अन्य देशों में स्त्रियों के अपने गीत पुरुषों या जनगीतों से भिन्न नहीं हैं, मिले-जुले ही हैं।

त्योहारों पर नदियों में नहाते समय के, नहाने जाते हुए राह के, विवाह के, मटकोड़, ज्यौनार के, सम्बन्धियों के लिए प्रेम-युक्त गाली के, जन्म आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं, जो स्त्रियाँ गाती हैं। इन अवसरों पर कुछ आज से ही नहीं, बड़े प्राचीनकाल से वह गाती रही हैं। महाकवि कालिदास आदि ने भी अपने ग्रन्थों में उनके गीतों का हवाला दिया है। सोहर, बानी, सेहरा आदि उनके अनन्त गानों में से कुछ हैं। वैसे तो बारहमासे पुरुषों के साथ नारियाँ भी गाती हैं।

एक विशेष बात यह है कि नारियों के गाने साधारणतः अकेले नहीं गाये जाते, दल बाँधकर गाये जाते हैं। अनेक कंठ एक साथ फूटते हैं। यद्यपि अक्सर उनमें मेल नहीं होता, फिर भी त्योहारों और शुभ अवसरों पर वे बहुत ही भले लगते हैं। गाँवों और नगरों में गानेवालियाँ

भी होती हैं, जो विवाह, जन्म आदि के अवसरों पर गाने के लिए बुला ली जाती हैं। बिहार और पूर्वी उत्तरप्रदेश में छठ पर्व बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। इसके गीत बड़े मोहक और लोचदार होते हैं।

सभी ऋतुओं में स्त्रियाँ उल्लसित होकर दल बाँधकर गाती हैं पर होली, बरसात की कजरी आदि तो उनकी अपनी चीज है,जो सुनते ही बनती है। पूरब की बोलियों में अधिकतर मैथिल-कोकिल विद्यापति के गीत गाये जाते हैं। पर सारे देश में -कश्मीर से कन्या कुमारी-केरल तक और काठियावाड़-गुजरात- राजस्थान से उड़ीसा-आन्ध्र तक-सभी के अपने-अपने विद्यापति हैं।

स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। अधिकतर उनके गाने के साथ नाच का भी पुट होता है। गुजरात का एक प्रकार का दलीय गायन 'गरबा' है, जिसे विशेष विधि से औरतें घेरे में घूम-घूमकर गाती हैं। साथ ही लकड़ियाँ भी बजाती हैं। इसमें नाच-गान साथ-साथ चलते हैं। वस्तुतः यह नाच ही है। सभी प्रान्तों में यह लोकप्रिय हो चला है। इसी प्रकार होली के अवसर पर ब्रज में 'रसिया' चलता है, जिसे दल के दल गाते हैं, स्त्रियाँ विशेषकर।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनन्त प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनन्द के स्रोतों की कमी हो सकती है? वहाँ के अनन्त संख्यक गाने उद्दाम ग्रामीण जीवन के ही प्रतीक हैं।

- डॉ0

भगवतशरण उपाध्याय

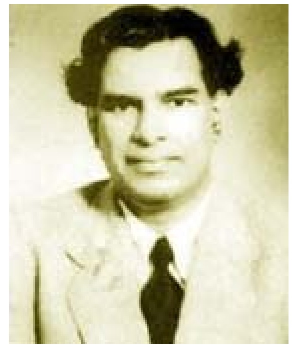

डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 ई0 में बलिया में हुआ। आपने प्राचीन भारत के ऐतिहासिक तथ्यों एवं भारतीय संस्कृति पर विशेष दृष्टिकोण से अध्ययन किया है और मौलिक साहित्यिक कृतित्व के रूप में कुछ संस्मरण, फीचर और निबन्धों की रचना की है। आपका गद्य भावुकतापूर्ण और आलंकारिक है।

शब्दार्थ

पुनरुद्धार = जिसका दोबारा उद्धार किया जाये। **ओजस्वी** = तेजवान। **निद्र्वन्द्व** = द्वन्द्व रहित, (सब तरह से स्वच्छन्द) **बारहमासा** = चैत्र से लेकर फाल्गुन तक के बारह महीनों का एक गीत। **आह्लादकर** = प्रसन्नता देने वाली। **सिरजती** = रचती, बनाती। **मटकोड़** = विवाह के समय मिट्टी खोदने की एक रस्म। **ज्यौनार** = विवाह के समय खाना खाने की रस्म। **कंठ** = गला। **उद्दाम** = उच्छृंखल, निरंकुश।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. निम्नांकित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए और अपने साथियों से पूछने के लिए पाँच प्रश्न बनाइए -

''भारतीय आर्केस्ट्रा के योग से भी लोकगीत गाये जाते हैं। इन्हें एक या अनेक लोग मिलकर गाते हैं। अधिकतर एक लड़का और लड़की एक दूसरे के जवाब के रूप में या

एक साथ मिलकर भी इन्हें गाते हैं। इस प्रकार के गीत वस्तुतः 'पश्चिम' और नये भारत के मिले-जुले प्रयास हैं। मधुर, तेज या ढीले, कृत्रिम स्वर में ये गीत गाये जाते हैं। यद्यपि ये शास्त्र की दृष्टि से नगण्य हैं तथापि अब काफी लोकप्रिय हो गये हैं। ये देशी-विदेशी और अशास्त्रीय-गँवारू गानों के बिगड़े रूप हैं।

2. अपनी दादी/नानी तथा पास-पड़ोस की महिलाओं से पूछकर कुछ लोकगीत संकलित करें तथा उन्हीं से जानकारी करें कि ये किस अवसर पर गाये जाते हैं?

3. शिक्षक की सहायता से एक ऐसी 'बाल सभा' का आयोजन करें, जिसमें कक्षा के सभी छात्र केवल 'लोकगीत' ही प्रस्तुत करें।

विचार और कल्पना

1. लोकगीतों में लोगों की दिलचस्पी कम होने से हमें क्या क्षति हो सकती है। इन्हंे बढ़ावा देने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

2. देश के प्रत्येक क्षेत्र के लोकगीत अलग-अलग होते हैं किन्तु सभी का मूल भाव एक ही होता है जो अनेकता में एकता को व्यक्त करता है। बताइए कि और कौन से घटक होते हैं जो देश की अनेकता में एकता को व्यक्त करते हैं।

निबन्ध से

1. कव्वाली के अलावा कौन से गीत हैं, जिनमें टोली बनाकर प्रतिस्पर्धा आयोजित की जाती है?

2. हमारे यहाँ महिलाएँ कब-कब किस प्रकार के गीत गाती हंै, उन गीतों को कौन-सा गीत कहा जाता है ?

3. लोकगीत हमारे देश के किन-किन क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय हैं तथा इसकी क्या विशेषताएँ हैं?

4. लोकगीत किन-किन रागों पर आधारित होते हैं?

5. सोहर, चैता तथा कजरी कब-कब गाये जाते हैं?

भाषा की बात

1. पाठ में ‘पुनरुद्धार’ शब्द आया है, जो दो शब्दों-पुनः+उद्धार से मिलकर बना है। इसी आधार पर निम्नांकित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए-

पुनरावृत्ति, पुनर्जन्म, पुनर्बोध, पुनरागमन, पुनरुक्ति।

2. ‘सर्वजन’ शब्द में ‘इक’ प्रत्यय लगाकर ‘सार्वजनिक’ शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नांकित शब्दों में ‘इक’ प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए-

सप्ताह, वर्ष, समाज, धर्म, मर्म।

आंचलिक लोकगीत

1. बुन्देलखंडी

जंगल में मंगल मनालो,

हरे-भरे बिरछा लगालो।।

जितै-जितै धरती है बिरछा बिहीनी,

जैसे सिन्दूर बिना माँग लगै सूनी,

ईखौ, सुहागन बनालो, हरे-भरे बिरछा लगालो।

जंगल में मंगल......................।

मीठे फल-फूल लगैं, झूम रई डरइयौं

भर दुपेरे इनपै, चल रई कुलइयाँ,

मिल-जुल के इन खौ, बचालो, हरे-भरे बिरछा लगालो।

जंगल में मंगल ....।

2. भोजपुरी

घेरि-घेरि बरसै कारी बदरिया, कियरिया में बूँद टपके।

हरियर भइल देखा पूरा सिवनवाँ,

खुशहाल होई गइलैं सगरा किसनवाँ,

धरती पहिन लेहलीं धानी रंग चुनरिया, कियरिया में बूँद टपके।

अमवाँ की डारी पे कुँहके कोइलिया,

मोरवा-मोरिनियाँ करैलें अठखेलियाँ,

धीरे-धीरे चलै पुरबी बयरिया, कियरिया में बूँद टपके।

पाठ 15

4BXEMD

खग, उड़ते रहना

(प्रस्तुत कविता में पक्षी के माध्यम से मनुष्य को जीवन भर क्रियाशील रहने का सन्देश दिया गया है।)

खग, उड़ते रहना जीवन भर।

भूल गया है तू अपना पथ, और नहीं पंखों

में भी गति,

किन्तु लौटना पीछे पथ पर, अरे ! मौत से

भी है बदतर।

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

मत डर प्रलय - झकोरों से तू, बढ़

आशा - हलकोरों से तू,

क्षण में अरि - दल मिट जाएगा, तेरे

पंखों से पिसकर।

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

यदि तू लौट पड़ेगा थककर, अंधड़ काल - बवंडर से डर,

प्यार तुझे करने वाले ही, देखेंगे तुझको हँस - हँसकर|

खग उड़ते रहना जीवन भर !

और मिट गया चलते - चलते, मंजिल - पथ तय करते - करते,

खाक चढ़ाएगा जग , उन्नत भाल और आँखों पर|

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

- गोपाल दस 'नीरज'

गोपालदास 'नीरज' का जन्म 8 फरवरी सन् 1926 ई. को हुआ| ये प्रेम और सौन्दर्य के अन्यतम गायक और वर्तमान समय में सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं| इन्होंने अपनी मर्मस्पर्शिनी काव्यानुभूति एवं सहज भाषा द्वारा हिंदी कविता को नया मोड़ दिया गया है|

शब्दार्थ

खग = पक्षी। **बदतर** = खराब। **प्रलय** = विनाश, संहार। **अरि-दल** = शत्रुओं का झुंड। **मंजिल-पथ** = गंतव्य स्थल तक पहुँचने का मार्ग। **खाक** = चिताभस्म, राख। **भाल** = मस्तक।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अपनी पसन्द के किसी पक्षी के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

2. निम्नलिखित उदाहरण के आधार पर किसी एक पक्षी का विवरण तैयार करें-

उदाहरण-

पक्षी का नाम - कबूतर।

आकार - मध्यम|

रंग - हल्का आसमानी या सफेद।

प्रकृति - सजीव, भोली-भाली।

भोजन - शाकाहारी।

घोंसला - सूखी लकड़ियों, घास या तिनकों से घोंसला बनाना।

घोंसला बनाने का समय - वर्षा ऋतु के आस-पास।

अण्डे - सफेद या भूरे।

शत्रु - बाज।

देखे जाने की तिथि और समय - पूरे वर्ष दिखायी देता है।

अन्य बातें - छोटी चोंच कम ऊँचाई तक उड़ना, घरों में घोंसला बनाकर रहना।

विचार और कल्पना

1. सामने दिये गये चित्र को देखकर अपने विचार पाँच पंक्तियों में लिखिए-

2. उड़ता हुआ पक्षी हमें आगे बढ़ने अर्थात् उन्नति करने का संदेश देता है। इसी प्रकार बताइए कि उगता सूरज, हिमालय, लहराता सागर, फलों से लदे वृक्ष, खिले फूल हमें क्या संदेश देते हैं? प्रत्येक पर अपने विचार दो-दो पंक्तियों में लिखिए।

3. कवि इस गीत के माध्यम से हमें क्या संदेश देना चाहता है?

4. यदि आप पक्षियों की तरह उड़ सकें तो सर्वप्रथम आप कहाँ जाना चाहेंगे और क्यों?

गीत से

1. मौत से भी बदतर क्या है?

2. मार्ग में कठिनाई आने पर क्या करना चाहिए?

3. जो लोग अपने लक्ष्य तक पहुँचने के प्रयास में समाप्त हो जाते हैं, उनको संसार किस तरह सम्मान देता है?

4. कार्य को बिना पूरा किये हुए छोड़कर लौट आने वाले व्यक्ति को संसार किस दृष्टि से देखता है?

5. दी गयी कविता की पंक्तियों को पढ़िए और उनके नीचे दिये गये सही भावार्थ पर सही का चिह्न लगाइए-

और मिट गया चलते-चलते, मंजिल-पथ तय करते-करते,

खाक चढ़ाएगा जग, उन्नत भाल और आँखों पर।

(क) हे पक्षी ! यदि चलते-चलते और मंजिल पाने में खाक मिलती है तो तेरा ललाट ऊँचा रहेगा।

(ख) हे पक्षी ! (हे मानव !) यदि अपनी मंजिल को पाने के लिए अपने पथ पर उड़ते-उड़ते (चलते-चलते) मिट जाओगे तो भी कोई हानि नहीं होगी, क्योंकि तब यह संसार बड़े गर्व से तुम्हारे बलिदान (चिताभस्म) को अपने सिर आँखों पर चढ़ाएगा।

(ग) हे मानव ! अपनी मंजिल की खाक अपने ऊँचे मस्तक और आँखों पर चढ़ाओ। (घ) हे खग ! यदि राह चलते-चलते और मंजिल पाने में तू मर गया तो तू मिट्टी में मिल जायेगा।

भाषा की बात

1. दिये गये शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए -

पथ, आशा, अरि, आँख।

2. निम्नलिखित के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

पक्षी, आकाश, धरती, पहाड़।

3. योजक-चिह्न अलग-अलग सन्दर्भों में प्रयुक्त किये जाते हैं। पाठ में आशा-हलकोरों, अरि-दल तथा चलते-चलते शब्दों में आये योजक-शब्द भिन्न अर्थ वाले हैं। बताइए कि उक्त तीनों स्थानों पर प्रयुक्त योजक-चिह्नों के क्या अर्थ हैं ?

4. कविता में आये उन शब्दों को छाँटकर लिखिए जिनका अर्थ आपको नहीं पता है-

- इन शब्दों का अर्थ शब्दकोश से ढूँढकर लिखिए।

- अब इन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए|

इसे भी जानें

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, उ0 प्र0 में स्थित है।

पाठ 16

कौन बनेगा निंगथउ (राजा)

(यह मणिपुर की एक लोक-कथा है। इसमें पर्यावरण संरक्षण और जनता से राजा के प्रेम की भावना प्रकट की गयी है।)

बहुत, बहुत पहले की बात है। मणिपुर के कांगलइपाक राज्य में एक निंगथउ और एक लेइमा, राजा और रानी रहते थे। सब उन्हें बहुत प्यार करते थे।

निंगथउ और लेइमा अपने मीयम, प्रजा, का बड़ा ख्याल रखते थे। 'हमारे मीयम सुखी रहें,' वे कहते। 'कांगलइपाक में शान्ति हो।' वहाँ के पशु-पक्षी भी अपने राजा-रानी को बहुत चाहते थे। निंगथउ और लेइमा हमेशा कहते: "कांगलइपाक में सभी को खुश रहना चाहिए। सिर्फ मनुष्यों को ही नहीं, पक्षियों, जानवरों और पेड़-पौधों को भी।"

निंगथउ और लेइमा के बच्चे नहीं थे। लोगों की एक ही प्रार्थना थी: 'हमारे निंगथउ और लेइमा का एक पुत्र हो। हमें अपना तंुगी निंगथउ मिल जाय, हमारा युवराज।'

फिर एक दिन, लेइमा ने एक पुत्र, एक मौचानीपा, को जन्म दिया। लोग बहुत खुश थे। सब अपने युवराज को देखने आये। बच्चे का सिर चूमकर उन्होंने कहा- "कितना सुन्दर बेटा है, कितना सुन्दर बेटा है।" राज्य में धूम मच गयी। लोग ढोलों की ताल पर नाच उठे, बाँसुरी पर मीठी धुनें छेड़ी।

उस वक्त उन्हें पता नहीं था कि अगले साल भी उसी तरह जश्न मनाया जायेगा। और उसके अगले साल फिर। हाँ, निंगथउ और लेइमा का एक और बेटा हुआ। फिर एक और।

अब उनके प्रिय राजा-रानी के तीन बेटे थे--- सानाजाउबा, सानायाइमा और सानातोम्बा।

बारह साल बाद, उनकी एक पुत्री हुई। उसका नाम सानातोम्बि रखा गया।

बड़ी प्यारी थी वह, कोमल दिल वाली। सभी उसे बहुत चाहते थे।

कई साल बीत गये। बच्चे जवान हुए। एक दिन निंगथउ ने मन्त्रियों को बुलाकर कहा- ‘अब वक्त आ गया है। हमें घोषणा करनी होगी कि कौन तुम्हारा युवराज बनेगा, तुम्हारा तंुगी निंगथउ।’

‘इतनी जल्दी क्यों ?’ आश्चर्य से मन्त्रियों ने एक दूसरे से पूछा। पर जब उन्होंने करीब से निंगथउ को देखा, उन्हें भी लगा कि हाँ, वे सचमुच बूढ़े हो चुके थे। यह देखकर वे दुःखी हो गये।

‘अब मुझे तुम्हारा युवराज चुनना ही है,’ निंगथउ ने कहा।

मन्त्री हक्के-बक्के रह गये। ‘पर हे निंगथउ, चुनाव की क्या जरूरत है? सानाजाउबा, आपका सबसे बड़ा पुत्र, ही तो राजा बनेगा।’

‘हाँ’ निंगथउ ने जवाब दिया। ‘पुराने जमाने में ऐसा होता था। सबसे बड़ा बेटा ही हमेशा राजा बनता था। लेकिन अब समय बदल गया है। इसलिए हमें उसे चुनना है जो राजा बनने के लिए सबसे योग्य है।’

‘चलो, राजा चुनने के लिए एक प्रतियोगिता रखते हैं,’ लेइमा ने कहा।

और तब कांगलइपाक में एक मुकाबला रखा गया, एक घुड़दौड़। जो भी उस खोंगनंग तक, बरगद के पेड़ तक, सबसे पहले पहुँचेगा, युवराज उसे ही बनाया जायेगा।

लेकिन एक अजीब बात हुई। सानाजाउबा, सानायाइमा और सानातोम्बा--- तीनों ने दौड़ एक साथ खत्म की। कौन जीता, कौन हारा, कहना मुश्किल था।

'देखो, देखो!' लोगों में शोर मच गया। "कितने अच्छे घुड़सवार।'

मगर सवाल वहीं का वहीं रहा- तुंगी निंगथउ कौन बनेगा?

निंगथउ और लेइमा ने अपने बेटों को बुलाया। निंगथउ ने कहा-

'सानाजाउबा, सानायाइमा, सानातोम्बा, तुमने यह साबित कर दिया कि तुम तीनों ही अच्छे घुड़सवार हो। अब अपने-अपने तरीके से कुछ करो ताकि हम तुममें से युवराज चुन सकें।'

लड़कों ने राजा, रानी व लोगों को प्रणाम किया और अपने घोड़ों के पास चले गये। एक दूसरे को देखकर वे मुस्कराये। मगर मन-ही-मन तीनों यही सोच रहे थे कि क्या खास किया जाय।

अचानक, हाथ में बरछा लिये, सानाजाउबा अपने घोड़े पर सवार हो गया। उसने चारों तरफ देखा। लोगों में सन्नाटा-सा छा गया। 'सानाजाउबा, सबसे बड़ा राजकुमार, अब क्या कर दिखाएगा?' उन्होंने सोचा।

सानाजाउबा ने दूर खड़े शानदार खोंगनंग पेड़ को ध्यान से देखा। उसने घोड़े को एड़ लगायी और घोड़ा झट से दौड़ पड़ा। वह तेज, और तेज, पेड़ की ओर बढ़ा।

'शाबाश! शाबाश!' सब चिल्लाये। 'थाउरो! थाउरो!' और फिर एकदम शान्त हो गये।

सानाजाउबा धड़धड़ाता हुआ खोंगनंग के पास पहुँचा। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, वह पेड़ को भेदकर घोड़े समेत उसके अन्दर से निकल गया।

'थाउरो! थाउरो!' लोगों ने फिर चिल्लाया।

अब दूसरे राजकुमार, सानायाइमा, की बारी थी। वह भला क्या करेगा?

सानायाइमा ने भी खोंगनंग को गौर से देखा। फिर उसने भी घोड़ा दौड़ाया, बहुत तेज। साँस थामे सब चुपचाप देख रहे थे। पेड़ के नजदीक आकर उसने घोड़े को कूदने के लिए एड़ लगायी। दोनों ऊपर कूदे, इतने ऊँचे, कि एक अद्भुत छलाँग में वे उस विशाल वृक्ष को पार कर दूसरी ओर पहुँच गये। देखने वाले दंग रह गये। ”कमाल है! कमाल है!“ वे चिल्लाये।

और अब बारी थी छोटे राजकुमार, सानातोम्बा, की। उसने भी खोंगनंग की ओर घोड़ा दौड़ाया, और पलक झपकते ही उसे जड़ से उखाड़ डाला। बड़ी शान से फिर उसने पेड़ को उठाया और निंगथउ और लेइमा के सामने जाकर रख दिया।

बाप रे, कितना हंगामा मच गया - ‘थाउरो! थाउरो! शाबाश! शाबाश!’ की आवाजें पास के पहाड़ांे से गूँज उठीं।

अब आप ही बताओ तुंगी निगंथउ किसे बनना चाहिए?

सानाजाउबा ?

सानायाइमा ?

सानातोम्बा ?

पेड़ को भेदकर कूदने वाला ?

पेड़ के ऊपर से छलाँग लगाने वाला ?

या फिर, पेड़ को उखाड़ने वाला ?

ज्यादातर लोग सानातोम्बा को चाहते थे। क्या वह सबसे बलवान नहीं था? उसी ने तो इतने बड़े खोंगनंग को आसानी से उठा लिया था।

लोग बेचैन होने लगे। निंगथउ और लेइमा अपना फैसला सुनाने में क्यों इतनी देर लगा रहे थे? वे कर क्या रहे थे ?

निंगथउ और लेइमा सानातोम्बि को देख रहे थे। पाँच साल की उनकी बेटी उदास और अकेली खड़ी थी। वह जमीन पर पड़े खोंगनंग को देख रही थी। पेड़ के आसपास पक्षी फड़फड़ा रहे थे। घबराये हुए, वे अपने घोंसले ढूँढ़ रहे थे।

सानातोम्बि खोंगनंग के पास गयी। 'खोंगनंग मर गया,' वह धीरे से बोली, 'उसे बरछे से चोट लगी, और अब वह मर गया।'

सन्नाटा छा गया।

लेइमा ने सानातोम्बि के पास जाकर उसे बाँहों में भर लिया। फिर कहा 'निंगथउ वही है जो देखे कि राज्य में सब खुश हैं। निंगथउ वही है जो राज्य में किसी को भी नुकसान न पहुँचाये।'

सब चौकन्ने होकर सुन रहे थे।

निंगथउ उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने तीनों बेटों को देखा। फिर बेटी को देखा। उसके बाद अपनी प्रजा से कहा 'अगर कोई शासक बनने योग्य है, तो वह है छोटी सानातोम्बि। खोंगनंग को चोट लगी तो उसे भी दर्द हुआ। उसी ने हमें याद दिलाया कि खोंगनंग में भी जान है। सानातोम्बि दूसरों का दर्द समझती है। उसे मनुष्य, पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी -- सबकी तकलीफ महसूस होती है।'

'मेरे बाद सानातोम्बि ही राज्य सँभालेगी। मैं उसे कांगलइपाक की अगली लेइमा घोषित करता हूँ' निंगथउ ने एलान किया।

सभी ने मुड़कर उस छोटी लड़की, अपनी होने वाली रानी, को देखा। पाँच साल की बच्ची यूँ खड़ी थी जैसे खुद एक नन्हा-सा खोंगनंग हो। उसके चारों तरफ पक्षी फड़फड़ा रहे थे। कुछ उड़कर उसके कन्धों पर आ बैठे, कुछ सिर पर। उसने दानों से भरे अपने छोटे हाथ फैलाये, और धीरे-धीरे पास आकर पक्षी दाने चुगने लगे।

शब्दार्थ

एलान = सार्वजनिक घोषणा, मुनादी। **जश्न** = उत्सव, जलसा। **सिर्फ** = केवल, मात्र। **हक्के-बक्के रह जाना** = आश्चर्य में पड़ जाना। **पलक झपकना**=फौरन, तुरन्त। **सिर चूमना**=प्यार करना।।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. बरगद (खोंगनंग) के पेड़ का चित्र बनाइए और उसके कोटर में बैठी एक चिड़िया को दिखाइए।

2. बरगद (खोंगनंग) की तरह अन्य छायादार और दूध-सा पदार्थ निकलने वाले वृक्षों (जैसे-पीपल, पाकड़) में से किसी एक पेड़ को अपने आस-पास के किसी स्थान पर लगाकर उसके बड़े होने तक देखभाल कीजिए।

3. यह मणिपुर की लोककथा है। इस तरह की लोककथाएँ आपके यहाँ भी सुनी जाती रही होंगी। ऐसी ही कोइ लोककथा याद करके कक्षा में सुनाइए।

4. नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़िए तथा इस पर आधारित तीन प्रश्न बनाइए- निंगथउ उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने तीनों बेटों को देखा। फिर बेटी को देखा। उसके बाद अपनी प्रजा से कहा, 'अगर कोई शासक बनने योग्य है तो वह है छोटी सानातोम्बि।

खोंगनंग को चोट लगी तो उसे भी दर्द हुआ। उसी ने हमें याद दिलाया कि खोंगनंग में भी जान है। सानातोम्बि दूसरों का दर्द समझती है। उसे मनुष्य, पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी-

सबकी तकलीफ महसूस होती है। मेरे बाद सानातोम्बि ही राज्य सम्भालेगी। मैं उसे कांगलइपाक की अगली लेइमा घोषित करता हूँ' निंगथउ ने एलान किया।

विचार और कल्पना

1. भारतीय संस्कृति में पेड़ पौधों को बहुत महत्व क्यों दिया गया है ? पता करें।

2. पेड़ों से पर्यावरण शुद्ध होता है। पर्यावरण प्रदूषित होने से जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। हम सभी का कर्तव्य है कि पर्यावरण को शुद्ध रखने में अपना योगदान दें। सोचें और लिखें कि आप पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या उपाय करेंगे ?

3. इस कहानी में निंगथउ (राजा) के चुनाव के बारे में बताया गया है। बताइए- (क) आपके यहाँ किन-किन का चुनाव किया जाता है ? (ख) चुनाव किन-किन तरीकों से किया जाता है? (ग) हमें किस प्रकार के व्यक्ति का चुनाव करना चाहिए ?

4. आप क्या-क्या करेंगे कि-

- पशु-पक्षी आपसे प्यार करने लगें ?

- आपके आसपास हरियाली फैल जाए ?

लोक कथा से

1. राजा के बच्चों के नाम क्रमशः थे-

(क) सानाजाउबा, सानातोम्बि, सानायाइमा ओर सानातोम्बा।

(ख) सानाजाउबा, सानातोम्बि, सानायाइमा ओर सानातोम्बा।

(ग) सानाजाउबा, सानायाइमा, सानातोम्बि और सानातोम्बा।

(घ) सानाजाउबा, सानायाइमा, सानातोम्बा और सानातोम्बि।

2. जब निंगथउ और लेइमा, तुंगी निंगथउ का चुनाव कर रहे थे, उस समय सानातोम्बि की आयु थी ?

(क) चार वर्ष (ख) छह वर्ष

(ग) पाँच वर्ष (घ) बारह वर्ष

3. किस राजकुमार ने तुंगी निंगथउ बनने के लिए क्या काम किया। तीर (→) के निशान द्वारा मिलाइए-

राजकुमारों के नाम	कार्य
सानाजाउबा	पेड़ को उखाड़ना
सानायाइमा	पेड़ के ऊपर से छलाँग लगाना
सानातोम्बा	पेड़ को भेदकर उसके अन्दर से निकलना

4. सानातोम्बि को अगली लेइमा घोषित किया गया, क्योंकि-

(क) वह सबसे छोटी थी।

(ख) वह दूसरों का दर्द समझती थी।

(ग) उसे मनुष्य, पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी सबकी तकलीफ महसूस होती थी।

(घ) उपर्युक्त 'ख' और 'ग' दोनों।

5. निंगथउ को किसने याद दिलाया कि खोंगनंग में भी जान है-

(क) लेइमा ने (ख) सानातोम्बि ने

(ग) सानातोम्बा ने (घ) मीयम ने

6. 'खोंगनंग में भी जान है।' सानातोम्बि ने ऐसा क्यों कहा ?

7. कहानी की कौन सी बात आपको सबसे अच्छी लगी और क्यों ?

भाषा की बात

1. अनुवाद एक कला है। किसी भाषा का अनुवाद करते समय इसका ध्यान रखा जाता है कि विषयवस्तु का मूल भाव सुरक्षित रहे और जिस भाषा में इसका अनुवाद किया जा रहा है, उन लोगों के लिए भी वह बोधगम्य हो।

इस पाठ में कई मणिपुरी शब्द आये हैं, जैसे- निंगथउ, लेइमा, मीयम आदि। अनुवाद करते समय लेखक ने इन शब्दों को देते हुए उनका हिन्दी पर्याय भी दे दिया है, जैसे-

(क) मणिपुर के कांगलइपाक राज्य में एक निंगथउ और एक लेइमा, (राजा और रानी) रहते थे।

(ख) निंगथउ और लेइमा अपने मीयम, प्रजा का बड़ा ख्याल रखते थे।

इसी प्रकार से आप भी तुंगी, थाउरो, खोंगनंग, शब्दों को खोजकर इनका हिन्दी अर्थ लिखिए।

2. कभी-कभी एक ही क्रिया पद से दो-दो वाक्यों के अर्थ निकलते हैं, जैसे- कांगलइपाक में सभी को खुश रहना चाहिए। सिर्फ मनुष्यों को नहीं पक्षियों, जानवरों और पेड़ों को भी।

इसी प्रकार दो वाक्यों की रचना आप भी कीजिए, जिसमें एक ही क्रियापद से दोनों वाक्यों का अर्थ स्पष्ट हो रहा हो।

3. इस कहानी में आये हुए मुहावरों को छाँटकर इनका अपने वाक्यों में प्रयोग करें।

इसे भी जानें

तुलसी सम्मान- मध्यप्रदेश सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर जनजातीय लोककथा के विकास में उल्लेखनीय योगदान हेतु दिया जाता है। इसकी स्थापना सन् 1983 ई0 में हुई।

पाठ 17

4CG6QN

बादल चले गये वे

(प्रस्तुत कविता में बादल के माध्यम से कवि ने सुख और दु:ख की बात कही है, जैसे बादल आते और चले जाते हैं, वैसे ही सुख-दु:ख भी जीवन में आते हैं और चले जाते हैं।)

बना-बना कर

चित्र सलोने

यह सूना आकाश सजाया

राग दिखाया

रंग दिखाया

क्षण-क्षण छवि से चित्त चुराया

बादल चले गये वे ।

आसमान अब
नीला-नीला
एक रंग रस श्याम सजीला
धरती पीली
हरी रसीली
शिशिर-प्रभात समुज्ज्वल गीला
बादल चले गये वे।
दो दिन दुःख का
दो दिन सुख का
दुःख-सुख दोनों संगी जग में
कभी हास है
कभी अश्रु है
जीवन नवल तरंगी जग में
बादल चले गये वे
दो दिन पाहुन जैसे रह कर ।।

-त्रिलोचन

त्रिलोचन का जन्म 20 अगस्त सन् 1917 ई0 को सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका वास्तविक नाम वासुदेव सिंह है। हिन्दी की आधुनिक प्रगतिशील कविता में त्रिलोचन का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगन्त, ताप के ताये हुए दिन, शब्द, इस जनपद का कवि हूँ, अरधान, तुम्हें सौंपता हूँ, चैती आदि आप के काव्य-संग्रह हैं। सन् 2007 में इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ

सलोने=सुन्दर। **राग**=प्रेम। **सजीला** = सजा हुआ। **समुज्ज्वल**=सफेद चमकीला, प्रकाशवान। **नवल तरंगी**=नयी लहरों से युक्त। **पाहुन**=अतिथि, मेहमान।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

(क) बादल से संबंधित अन्य गीत, कविताओं का संकलन कीजिए।

(ख) बादल कैसे बनते है ? पता लगाकर लिखिए।

विचार और कल्पना

1. बताइए- आपको बादल कब-कब अच्छे लगते हैं, कब नहीं ?

2. आसमान में बदलों को उमड़ता-घुमड़ता देखकर कुछ लोग प्रसन्न हो जाते हैं और कुछ चिंतित। नीचे लिखे नामों में कौन प्रसन्न होता है और कौन चिंतित ? कारण भी लिखिए-

किसान, यात्री, मोर, कुम्भकार

3. आपने इन्द्रधनुष देखा होगा सोचकर बताइए कि इन्द्रधनुष में कौन-कौन से रंग होते हैं तथा इन्द्रधनुष कैसे बनते हैं ?

4. यदि कुछ वषा ि तक बादल आये ही नहीं अर्थात् पानी बिलकुल न बरसे तो क्या-क्या समस्याएँ आ सकती है ? सोचकर लिखिए।

5. आकाश में जब बादल छाये रहते हैं, तब उन्हें ध्यान से देखिए। उनमें विभिन्न आकृतियाँ दिखाई पड़ती हैं, उनमें जो भी आकृति आपको सबसे अच्छी लगे उसका चित्र कॉपी पर बनाकर अपने शिक्षक को दिखाइए।

कविता से

1. निम्नलिखित पद्यांशों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) दुःख-सुख.............. चले गये वे।

(ख) एक रंग रस..............समुज्ज्वल गीला।

2. आशय स्पष्ट कीजिए -

रंग दिखाया, चित्त चुराया, श्याम सजीला, नवल तरंगी।

3. कविता में कुल तीन पद हैं। तीनो पदों के तुकान्त शब्दों को अलग-अलग जोड़ा बनाकर लिखिए।

4. बादल की तुलना पाहुन से क्यों की गयी है ?

भाषा की बात

1. 'दुःख-सुख' दोनों शब्द एक दूसरे के विपरीतार्थी हैं। इसी तरह के पाँच शब्द-युग्म लिखिए।

2. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए-

आकाश, धरती, प्रभात, बादल।

3. कविता में आए उन शब्दों को छाँटकर लिखिए जिनका अर्थ आपको नहीं पता है।

- इन शब्दों के अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़कर लिखिए।

- अब इन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

इसे भी जानें

1. वर्षा जल संचय-वर्षा जल भूमि जल की पुनः पूर्ति करता है और नदियों के प्रवाह को बनाये रखने में सहायक होता है। परन्तु वर्षा जल का अधिकांश भाग ऐसे ही बह जाता है और बाढ़ का कारण बनता है। भविष्य में उपयोग के लिए छतों से वर्षा जल को पाइप की सहायता से बड़ी-बड़ी टंकियों, जलाशयों, पात्रों आदि में एकत्र किया जाता है। यह वर्षा जल संचय कहलाता है।

2. भारत भारती सम्मान- उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान द्वारा साहित्य सृजन एवं हिन्दी की अनवरत सेवा हेतु दिया जाता है, इसकी स्थापना सन् 1986 ई0 में हुई।

पाठ 18

बहादुर बेटा

(प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने एक बहादुर बालक की बहादुरी का वर्णन किया है।)

पात्र- माँ

संदीप- -बड़ा बेटा

कुलदीप -छोटा बेटा

मधुर -बेटी

एक युवक -संदीप का मित्र

एक युवक डाक्टर और एक युवती -दोनांे रेडक्रास के सदस्य

(मंच पर एक साधारण से घर का एक कमरा। मधुर बैठी पढ़ रही है। बीच-बीच में घड़ी की ओर देख लेती है। उसी समय माँ अन्दर से आती है।)

माँ- क्या बज गया मधुर ? अरे ! चार बजने वाले हंै और उन दोनों में से कोई भी नहीं आया !

मधुर- यही तो मंै भी देख रही हूँ। बड़े भैया तो बारह बजे तक आ जाते थे और दो बजे तक कुलदीप भी आ जाता था। आज दोनों न जाने कहाँ चले गये?

इसी समय कुलदीप तेजी से भागता हुआ आता है।

कुलदीप- माँ, माँ, तुमने सुना ? बड़े जोर का तूफान आया है। नदियों में बाढ़ आ गयी है। स्कूल में मास्टर जी कह रहे थे, गाँव के गाँव बह गये। सैकड़ों आदमी भी बह गये। जानवरों का तो कहना ही क्या ? मकान गिर पड़े । चारों तरफ हाहाकार मचा है। मास्टर जी ने कहा है कि हम लोगों को उनकी मदद करनी चाहिए, वहाँ जाना चाहिए। उनको कपड़े और पैसे देने चाहिए। (तेजी से बोलता चला जाता है।)

मधुर - चर्चा तो आज हमारे स्कूल में भी हो रही थी पर ऐसी कोई बात मैंने नहीं सुनी कि इतना नुकसान हुआ ।

कुलदीप- तुमको कुछ पता भी है? इतने जोरों का तूफान आया कि नदी का सारा पानी गाँव में भर गया। इसलिए यह हुक्म हुआ है कि जो कोई जो कुछ भी कर सके, करे। जो युवक हैं और स्वस्थ हैं, वे वहाँ जाकर लोगों को बचाने का काम करें। जो धनी हैं वे धन दें, जिनके पास अनाज है, वे अनाज दें। कपड़े हैं, कपड़े दें........

माँ- हाँ, हाँ, यह तो होना चाहिए। मेरे पास पैसा तो नहीं है लेकिन जो कुछ हो सकता है वह अवश्य करूँगी। कहाँ भेजना होगा पैसा ?

कुलदीप- वह तो लेने वाले यहीं आ जायंेगे। लेकिन मैं जा रहा हूँ।

मधुर- माँ -(एक साथ) तू कहाँ जा रहा है?

कुलदीप- लोगों को बचाने।

माँ - (हँसकर) तेरे विचार बहुत अच्छे हैं। लेकिन तू इतना छोटा है कि उनको क्या बचायेगा? खुद वे लोग तुझे ही बचाने की परेशानी में पड़ जायेंगे। पहले तू रोटी खा ले और हाँ, संदीप अभी क्यों नहीं आया। कहीं वह भी.....

मधुर - हाँ, माँ, वह जरूर चले गये होंगे। वह दिन-रात इसी तरह की बातें करते रहते हैं-

‘मैं कुछ करना चाहता हूँ। मेरे पिता और मेरे चाचा ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी।

मेरे देश के हजारों लोगों ने अपने प्राण दिये थे। अपना सब कुछ लुटा दिया था।

अब मुझे कुछ करना चाहिए। मुझे भी अपने देश की सेवा करनी चाहिए।'

(सहसा एक युवक का प्रवेश)

युवक - संदीप का घर यही है?

सब - (एक साथ) हाँ, हाँ यही है। क्या बात है?

युवक - मैं आपको बताने आया हूँ कि संदीप बाढ़ पीड़ित लोगों की सहायता करने के लिए चला गया है।

माँ - (घबराकर) क्या ?

मधुर - तो भैया चले ही गये।

युवक - लेकिन आप कोई चिन्ता न कीजिए। (तेजी से कहकर लौटता है।)

माँ - हे भगवान ! यह सब क्या हो रहा है ? कब दूर हांेगी ये परेशानियाँ ? कितना बलिदान चाहता है तू ? हे भगवान ! तू मेरे बच्चे की रक्षा करना। वह खूब सेवा करे। पर.........पर........

मधुर - (माँ को झकझोरकर) माँ, माँ, तुम कहाँ खो गयी हो ? क्या सोचने लगी ? हमें कुछ करना चाहिए। चलो, हम दोनों घर-घर से अनाज और धन इकट्ठा करें। और हाँ, बाढ़पीड़ितों के लिए खाने की जरूरत भी तो होगी।

कुलदीप- खाना, कपड़ा, मकान सभी चीजों की जरूरत होगी। मास्टर जी कहते थे कि सरकार प्रबंध कर रही है। कैंप लगवा दिये हैं। माँ, मैं जाता हूँ। स्कूल में वालंटियरों की जरूरत है। मैं कैंप में जाकर तो काम कर ही सकता हूँ।

माँ - क्यों नहीं कर सकता ? तू भी जा। लेकिन एक बात का ध्यान रखना, नदी के पास मत जाना।

कुलदीप- मैं नदी के पास क्यों जाऊँगा। वह तो खुद ही हमारे पास आ गयी है। (हँसकर) अच्छा, मैं चला।

(तेजी से चला जाता है। बाहर शोर उठता है। माँ खिड़की से झाँकती है।)

मधुर - देखो, देखो, माँ कितने लोग इधर ही चले आ रहे हंै, और वह देखो ट्रक भी आ रहे हैं। ऐसा लगता है कि ये बाढ़पीड़ित गाँवों से लोगों को निकालकर ला रहे हैं। क्यों माँ, एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं !

माँ - क्या अच्छा हो यदि सभी ऐसा कर सकें, फिर तो बहुत सारी समस्याएँ यों ही खत्म हो जायें। पता नहीं सरकार क्या करेगी ? लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे दोनों बेटे सेवाकार्य में लग गये। भगवान उनकी रक्षा करे।

मधुर - जो दूसरों की रक्षा करते हैं, भगवान उनकी रक्षा करते हैं।

माँ - हाँ, करते तो हैं।

(सहसा माँ फिर ध्यानस्थ हो जाती है और वहीं बैठ जाती है। मधुर उसे फिर झकझोरना चाहती है। लेकिन सहसा रुक जाती है, जैसे दूर कहीं से संगीत का मधुर स्वर उठता है। वह चारों ओर देखती है, तभी एक युवती वहाँ आ जाती है। उसके वस्त्रों पर रेडक्रास का चिह्न लगा हुआ है।)

युवती - क्या संदीप जी का मकान यही है?

मधुर - जी।

माँ - (आँखें खोलकर) संदीप, कहाँ है संदीप? कैसा है वह?

युवती - आप शायद उनकी माँ है? चिंता मत कीजिए। कोई विशेष बात नहीं है।

मधुर - लेकिन आप हैं कौन?

युवती - मैं रेडक्रास की सदस्या हूँ। बाहर मेरे बहुत से साथी हैं। हम सब लोग बाढ़पीड़ितों की सहायता करने के लिए गये हुए थे। आप के पुत्र संदीप जी ने वहाँ बहुत काम किया। अपने प्राणों की चिन्ता किये बिना उन्होंने सैकड़ों लोगों को बचाया। उनका साहस देखकर हम लोग दंग रह गये। हमारे मना करने पर भी उन्होंने आराम नहीं किया। लेकिन अचानक............

माँ और मधुर- (एक साथ) अचानक क्या हुआ? बोलतीं क्यों नहीं? उन्हें क्या हुआ?

युवती - आप घबराइए नहीं, मैं बता रही हूँ। लोगों को बचाते -बचाते अचानक उनकी नाव पलट गयी। उन्हें तैरना आता था। उन्होंने वहाँ भी लोगों की मदद की। जब तक सबको दूसरी नाव में नहीं चढ़ा दिया, तब तक वह नहीं चढ़े, और जब चढ़ने लगे तब सहसा पानी का बड़े जोर का रेला आया और वह बह गये|

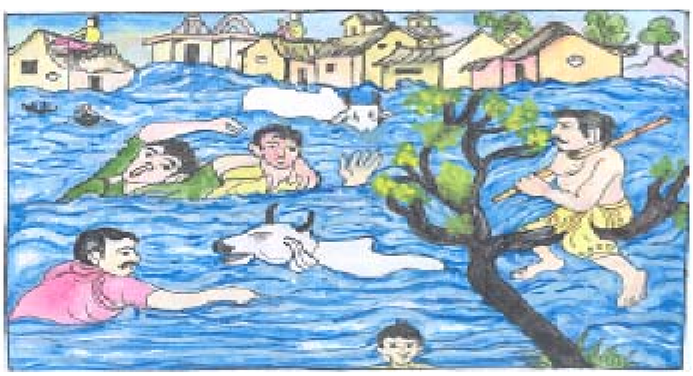

माँ - (चीखकर) हाय राम !

युवती - (शीघ्रता से) नहीं, नहीं दूसरे लोगों ने उन्हें शीघ्र बचा लिया। कठिन परिश्रम के कारण वह बेहोश हो गये हैं, लेकिन हमने उन्हें फस्र्ट-एड दे दी है। बहुत जल्दी ही वह ठीक हो जायेंगे।

मधुर- वह हैं कहाँ ?

युवती - बाहर। हमारी गाड़ी में। आप मेरे साथ आइए। उन्हें अंदर ले आयें।

(सब तेजी से चले जाते हैं। मधुर एकदम लौटती है और पलंग बिछाती है। फिर बाहर की ओर भागती है, तभी वे सब संदीप को लाकर पलंग पर लिटा देते हैं।)

युवती - (युवक को दिखाकर) यह हमारे डॉक्टर हैं। इन्होंने अच्छी तरह देख लिया है। डर की कोई बात नहीं है। अभी दो क्षण में ही इन्हंे होश आ जाता है।

युवक - मैं अभी एक और इंजेक्शन दिये देता हूँ। चिंता की कोई बात नहीं है। आप का बेटा बहुत बहादुर है।

(कुलदीप भागा हुआ आता है।)

कुलदीप - माँ, माँ, मैंने सुना है........(एकदम देखकर) अरे, यह तो भैया आ गये। क्या हुआ इन्हें, और ये कौन हैं ?

मधुर - बाढ़पीड़ितों को बचाते-बचाते भैया स्वयं नदी में गिर गये। इन लोगों ने उन्हें बचाया है। थक गये हैं और कोई खास बात नहीं है।

(अन्दर जाती है।)

युवक - बस, इन्हें होश आ रहा है। लेकिन आप लोग इनसे ज्यादा बातें मत कीजिए। शाम तक चुपचाप पड़े रहने दीजिए। रात को मैं आकर देख जाऊँगा।

माँ - हे भगवान! इस दुनिया में कितने अच्छे लोग हैं।

संदीप - (आँखे खोलकर) मैं, मैं कहाँ हूँ ?

युवक - अपने घर में हो। यह तुम्हारी माँ हंै, बहन है, भाई है और हम हैं तुम्हारे साथी।

संदीप - ओह! तुम हो डॉक्टर। मुझे इतना ही याद है कि जैसे मैं डूब गया हूँ और फिर कोई अन्तरिक्ष में से आकर बचा रहा है, वह तुम थे।

युवती - संदीप बाबू, आप बोलिए नहीं। एक-दो दिन आराम कीजिए।

संदीप - बहुत अच्छा डॉक्टर! आपकी आज्ञा का पालन होगा। (सब हँस पड़ते हैं)

युवक और युवती - (एक साथ) अच्छा, अब हमें आज्ञा दीजिए।

माँ - नहीं, नहीं ऐसे नहीं। बिना मुँह मीठा किये तुम नहीं जा सकते। अरे मधुर ! लो वह तो अन्दर चली भी गयी। शायद चाय बना रही होगी।

युवक - माँ हमें तो आज्ञा ही दीजिए।

कुलदीप - समझ लीजिए, भइया को अभी होश नहीं आया है। बस पाँच मिनट लगेंगे।

(सब हँसते हैं। वह भी अन्दर चला जाता है।)

माँ - आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी हमें भी अवसर दिया कीजिए।

युवती - हम भी तो आपके ही हैं और फिर आपने कम सेवा की है क्या ?

(दोनों मुस्कराते हैं और अन्दर से मधुर, कुलदीप चाय का सामान लेकर आते हैं। पर्दा गिरने लगता है।)

-विष्णु प्रभाकर

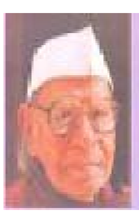

विष्णु प्रभाकर जी का जन्म 21 जून, सन् 1912 ई0 को मुजफ्फरनगर जिले के मीरनपुर (मीरापुर) गाँव में हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय से बी.ए. और फिर हिन्दी प्रभाकर परीक्षा उत्तीर्ण की। यहीं से इनके नाम के साथ 'प्रभाकर' जुड़ गया। विष्णु जी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकंाकी, स्कैच और रिपोर्ताज विधाओं

में अनेक रचनाएं की हंै। ‘सीमा-रेखा’, ‘पुस्तक कीट’ आदि आपके प्रमुख एकंाकी हैं। ‘आवारा मसीहा’ आपकी बहुप्रशंसित रचना है। इनका निधन 11 अप्रैल 2009 को हुआ।

शब्दार्थ

सहसा=अचानक। **समस्याएँ**=कठिनाइयाँ। **वालंटियर**=स्वयंसेवक। **हुक्म**=आदेश। **फर्स्ट एड** = प्राथमिक चिकित्सा। **अन्तरिक्ष** = पृथ्वी और स्वर्ग के बीच का स्थान, आकाश।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अपने शिक्षक या बड़ों से पूछकर फस्र्ट-एड (प्राथमिक उपचार) के बारे में जानकारी प्राप्त कर फस्र्ट-एड बाक्स बनाइए।

2. नीचे दिये गये कथोपकथन को आगे बढ़ाते हुए ‘एकांकी’ की रचना कीजिए-

(श्रिया नामक लड़की का घर में प्रवेश) माँ- श्रिया, तुम तो अपनी सहेली अंजू के घर गयी थी, बड़ी देर लगा दी, बेटी !

श्रिया- माँ, वहाँ टेलीविजन पर बहुत अच्छा कार्यक्रम आ रहा था, मैं उसे देखने लगी थी। (पिता जी से) पिता जी अपने घर भी एक टेलीविजन खरीद दीजिए न!

3. इस एकांकी का कक्षा में अभिनय कीजिए।

विचार और कल्पना

1. ‘‘आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी हमें भी अवसर दिया कीजिए।’’ आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा ?

2. क्या आपने कभी बाढ़ का दृश्य देखा है ? बाढ़ आने पर आप सुरक्षा के कौन-कौन से उपाय करेगें ?

3. प्राकृतिक आपदाएँ जैसे-बाढ़, सूखा, भूकम्प आदि अचानक आती हैं। सोचें और बताएँ कि इन आपदाओं के आने पर हमंे क्या करना चाहिए और क्या नही ?

एकांकी से

1. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर पाठ के आधार पर उनको सही क्रम में लिखिए -

(क) नदियों में बाढ़ आ गयी है। (ख) गाँव के गाँव बह गये।

(ग) बड़े जोर का तूफान आया है। (घ) चारों तरफ हाहाकार मचा है।

2. संदीप के होश में आने पर डॉक्टर युवक ने किस क्रम में सबका परिचय कराया, सही क्रम चुनें -

(क) भाई, बहन, साथी और माँ (ख) बहन, भाई, माँ, और साथी

(ग) माँ, बहन, भाई और साथी (घ) साथी, बहन, माँ, और भाई

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए-

(क) जो कोई जो कुछ भी कर सके, ...।

(ख) जो युवक हैं और स्वस्थ हैं, ...।

(ग) जो धनी हैं, ...।

(घ) जिनके पास अनाज है, ...।

4. निम्नलिखित कथोपकथन किसके द्वारा कहे गये हैं-

(क) मेरे पास पैसा तो नहीं हैं, लेकिन जो कुछ हो सकता है, अवश्य करूँगी।

(ख) मैं नदी के पास क्यों जाऊँगा, वह तो खुद ही हमारे पास आ गयी है।

(ग) एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं।

(घ) जिनके पास अनाज है, ...।

5. ट्रक को देखकर मधुर ने अपनी माँ से बाढ़ पीड़ितों के बारे में क्या कहा ?

6. युवक और युवती द्वारा चलने की आज्ञा लेते समय माँ ने क्या कहा ?

7. एकांकी के कौन से संवाद आपको अच्छे लगे ?

भाषा की बात

1. 'वालंटियरों' शब्द वालंटियर का हिन्दी में प्रयुक्त बहुवचन रूप है। अंग्रेजी शब्द का हिन्दी में प्रयोग करने पर उनका बहुवचन हिन्दी की प्रकृति के अनुसार बनाया जाता है, इसलिए यहाँ अंग्रेजी का बहुवचन रूप 'वालंटियर्स' न करके 'वालंटियरों' लिखा गया है। पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी बहुवचन रूप बनाइए-

ट्रेन, कैंप, स्कूल, डॉक्टर, इंजेक्शन।

2. नीचे लिखे मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए:

हाहाकार मचना, सब कुछ लुटा देना, चैन से न बैठना।

इसे भी जानें

केन्द्रीय भाषा संस्थान मैसूर, कर्नाटक में स्थित है।

पाठ 19

4CYXTY

इसे जगाओ

(इस कविता में कवि ने प्रकृति के माध्यम से मनुष्य को समय पर सजग रहकर जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा दी है।)

भई, सूरज

जरा इस आदमी को जगाओ,

भई, पवन

जरा इस आदमी को हिलाओ,

यह आदमी जो सोया पड़ा है,

जो सच से बेख़बर

सपनों में खोया पड़ा है।

भई पंछी,

इसके कानों पर चिल्लाओ!

भई सूरज! जरा इस आदमी को जगाओ!

वक्त पर जगाओ,

नहीं तो जब बेवक्त जागेगा यह

तो जो आगे निकल गये हैं

उन्हें पाने

घबरा के भागेगा यह!

घबरा के भागना अलग है

क्षिप्र गति अलग है

क्षप्र तो वह है

जो सही क्षण में सजग है

सूरज, इसे जगाओ,

पवन, इसे हिलाओ,

पंछी इसके कानों पर चिल्लाओ!

- 'भवानी प्रसाद मिश्र'

भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 1914 ई0 मंे हुआ। बी0 ए0 तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह 'कल्पना' पत्रिका के सम्पादक हो गये। उन्होंने 'आकाशवाणी' में भी कार्य किया। 'गीत फरोश' कविता के कारण उन्हें विशेष ख्याति मिली। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ 'बुनी हुई रस्सी', 'गांधी पंचशती', 'गीत फरोश' हैं। मिश्र जी का निधन सन् 1985 ई0 में हो गया।

शब्दार्थ

बेख़बर = अनभिज्ञ, अनजान। **बेवक्त** = असमय। **क्षिप्र** = त्वरित, तुरन्त। **क्षण** = पल। **सजग** = सचेत, सावधान।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. जीवन में किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाले लोगों से मिलिए एवं उनके अनुभवों को लिखिए।

2. 'क्षप्र तो वह है जो सही क्षण में सजग है' इस वाक्य में समय की उपयोगिता पर बल दिया गया है। इसी प्रकार आप भी समयबद्ध होकर अपनी दैनिक दिनचर्या का चार्ट बनाइए।

विचार और कल्पना

1. कविता में सूरज, पंछी और पवन हमें सही समय पर जागने को प्रेरित कर रहे हैं। समय के नियोजन का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है ? इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

2. संसार में बहुत से भू-भाग ऐसे है जहाँ सूरज कई दिनों तक दिखाई नहीं देता है। चारो ओर फैले अंधकार और बर्फ के बीच लोग कैसे जीवनयापन करते होंगे ? कल्पना करें और वहाँ के जीवन के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

कविता से

1. कवि ने किन-किन माध्यमों से मनुष्यों को जगाने की बात की है ?

2. मनुष्य को 'वक्त पर जगाओ' कहने से कवि का क्या तात्पर्य है ?

3. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय लिखिए-

(क) जो सच से बेखबर, सपनों में खोया पड़ा है।

(ख) क्षप्र तो वह जो सही क्षण में सजग है।

4- इस कविता को कोई अन्य मनचाहा शीर्षक दीजिए ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

पवन, पंछी, वक्त, सजग, क्षिप्र

2. दिए गए शब्दों के तत्सम् रुप लिखिए-

सूरज, हवा, सच, कान, सपना

3. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द से कीजिए-

1. अच्छे स्वास्थ्य के लिए समय से जागना समय से ....चाहिए।

2. शिक्षा हमें सही और .... का निर्णय करने में सहायक होती है।

3. सच बोलने वाले...............से दूर रहते हैं।

4. वक्त...........खाने से अनेक बीमारियाँ होती हैं।

5. दौड़ में आगे देखना चाहिए....................मुड़कर नहीं।

4. वाक्य में शब्द के जिस रूप द्वारा संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध क्रिया के साथ ज्ञात होता है, उसे कारक कहते है। कारक के चिह्नो को विभक्ति कहते हैं।

कारक आठ प्रकार के होते हैं -

कारक	विभक्ति
कर्ता	ने
कर्म	को
करण	से के द्वारा

सम्प्रदान के लिए, को

अपादान से (अलग होने का भाव)

संबंध का,के,की,रा,री,रे

अधिकरण में, पर

सम्बोधन हे! अरे!

5. निम्नलिखित वाक्यों में विभक्तियों को रेखांकित कीजिए एवं कारक का नाम लिखिए-

(क) जरा इस आदमी को जगाओ।

(ख) जो सच से बेखबर सपनों में खोया पड़ा है।

(ग) इसके कानों पर चिल्लाओ।

(घ) सूरज ने पवन को जगाया।

(ड.) महात्मा परोपकार के लिए जीवन बिताते हैं।

पढ़ने के लिए-

आज उठा मैं सबसे पहले !

सबसे पहले आज सुनूँगा,

हवा सवेरे की चलने पर,

हिल पत्तों का करना ‘हर-हर’

देखँूगा, पूरब में फैले बादल पीले,

लाल, सुनहले !

आज उठा मैं सबसे पहले !

सबसे पहले आज सुनूँगा,

चिड़ियांे का डैने फड़काकर

देखूँगा, पूरब में फैले बादल पीले,

लाल, सुनहले !

आज उठा मैं सबसे पहले !

सबसे पहले आज चुनूँगा,

पौधे-पौधे की डाली पर ,

फूल खिले जो सुन्दर-सुन्दर

देखूँगा, पूरब में फैले बादल पीले

लाल, सुनहले !

आज उठा मैं सबसे पहले !

सबसे कहता आज फिरुँगा,

कैसे पहला पत्ता डोला,

कैसे पहला पंछी बोला,

कैसे कलियों ने मुँह खोला

कैसे पूरब ने फैलाए बादल पीले,

लाल, सुनहले !

आज उठा मैं सबसे पहले !

- हरिवंश राय बच्चन

पाठ 20

4D8TVL

छिपा रहस्य

(प्रस्तुत पाठ में जानवर की स्वामी भक्ति से सम्बन्धित मार्मिक कहानी वर्णित है।)

कनाडा में मौंट्रियल नाम का बड़ा शहर है। वहाँ कई छोटी-छोटी सड़कें भी हैं। उनमें से एक है एडवर्ड स्ट्रीट। उस सड़क को पियरे जितनी अच्छी तरह जानता था उतनी अच्छी तरह और कोई भी नहीं जानता था। उसका एक कारण था। पिछले तीस सालों से पियरे उस सड़क पर बसे सभी परिवारों को दूध बाँटता था।

पिछले पन्द्रह सालों से पियरे की दूधगाड़ी को एक बड़ा सफेद घोड़ा खींचता था। घोड़े का नाम जोजफ था। शुरू में जब वह घोड़ा दूध-कम्पनी के पास आया तब उसका कोई नाम नहीं था। कम्पनी ने पियरे को सफेद घोड़े के इस्तेमाल की इजाजत दे दी। पियरे ने प्यार से घोड़े की गर्दन को सहलाया और उसकी आँखों में झाँक कर देखा।

'यह एक समझदार, भला और वफादार घोड़ा है,' पियरे ने कहा। 'मैं इसका नाम सन्त जोजफ के नाम पर रखूँगा, क्योंकि वह एक नेक और दयालु इन्सान थे।'

साल भर के अन्दर ही घोड़े ने सड़क का पूरा रास्ता रट लिया। पियरे अक्सर शेखी बघारता, 'मैं तो लगाम छूता तक नहीं हूँ। मेरे घोड़े को तो लगाम की जरूरत ही नहीं है।'

तड़के सुबह पाँच बजे ही पियरे दूध की कम्पनी में रोजाना पहुँच जाता। तब गाड़ी में दूध लादा जाता और फिर जोजफ उसे खींचता। पियरे अपनी सीट पर बैठते ही जोजफ को पुचकारता और घोड़ा अपना मुँह उसकी ओर घुमा देता। आस-पास खड़े अन्य ड्राइवर कहते, 'सब कुछ ठीक-ठाक है पियरे जाओ।' इसके बाद पियरे और जोजफ इत्मीनान के साथ सड़क पर निकल पड़ते।

पियरे के इशारे के बिना ही गाड़ी अपने आप एडवर्ड स्ट्रीट पहुँच जाती। फिर घोड़ा पहले घर पर रुकता और पियरे को नीचे उतार कर दरवाजे के सामने एक बोतल दूध रखने के लिए करीब तीस सेकेंड की मोहलत देता। घोड़ा फिर दूसरे घर पर रुकता।

इस तरह पियरे और घोड़ा पूरी एडवर्ड स्ट्रीट की लम्बाई पार करते। फिर गाड़ी को घुमाकर दोनों वापस आते। सचमुच जोजफ बहुत होशियार घोड़ा था।

अस्तबल में पियरे, जोजफ की तारीफ करते न थकता। 'मैं कभी उसकी लगाम छूता तक नहीं हूँ। कहाँ-कहाँ रुकना है यह उसे अच्छी तरह मालूम है। अगर जोजफ घोड़ागाड़ी खींच रहा है, तो मेरी जगह अगर कोई अन्धा आदमी भी हो, तो काम चल जायेगा।'

बरसों तक यही सिलसिला चलता रहा। पियरे और जोजफ धीरे-धीरे बूढ़े होने लगे। पियरे की मूँछे अब पक कर सफेद हो गयीं थीं। जोजफ भी अब अपने घुटनों को उतना ऊँचा

नहीं उठा पाता था। अस्तबल के सुपरवाइजर जैक को उनके बुढ़ापे का पता तब चला जब एक दिन पियरे लाठी के सहारे चलता हुआ आया।

'क्या बात है पियरे,' जैक ने हँस कर पूछा। 'क्या तुम्हारी टाँगों में दर्द है?' 'हाँ जैक,' पियरे ने जवाब दिया। 'मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ और पैर भी दर्द करने लग गये हैं।'

'बस! तुम अपने घोड़े को दरवाजे पर दूध की बोतलें रखना सिखा दो,' जैक ने कहा। 'बाकी सारा काम तो वह करता ही है।'

एडवर्ड स्ट्रीट पर बसे सभी चालीस परिवारों को पियरे अच्छी तरह जानता था। घर के नौकरों को मालूम था कि पियरे लिख-पढ़ नहीं सकता, इसलिए वह उसके लिए कोई चिट्ठी नहीं छोड़ते थे। अगर कभी दूध की और बोतलों की जरूरत होती, तो वे घोड़ागाड़ी की आवाज सुनकर दूर से ही चिल्लाते, 'पियरे, आज एक और बोतल देना।'

पियरे की याददाश्त बहुत अच्छी थी। वापस अस्तबल पहुँच कर बिना गलती किये वह जैक को दूध का सारा हिसाब बता देता। जैक अपनी डायरी में तुरन्त हिसाब नोट कर लेता था।

एक दिन दूध कम्पनी का मैनेजर सुबह-सुबह अस्तबल का मुआयना करने पहुँचा। जैक ने पियरे की ओर इशारा करते हुए मैनेजर से कहा, 'जरा देखिए तो! पियरे किस तरह अपने घोड़े से बात करता है और घोड़ा भी कितने प्यार से अपना मुँह घुमा कर पियरे की बात सुनता है। पियरे और घोड़े में बड़ी गहरी दोस्ती है। इस रहस्य को बस यही दोनों जानते हैं।'

कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे दोनों हम पर हँस रहे हों। पियरे भला आदमी है, पर बेचारा अब बूढ़ा हो रहा है। क्या मैं आपसे अर्ज करूँ कि अब आप उसे रिटायर कर दें

और उसकी पेंशन बाँध दें? उसने उत्सुकता से पूछा।

‘बात तो तुम्हारी ठीक है,’ मैनेजर ने कहा। ‘पियरे अपना काम तीस साल से कर रहा है और कभी कहीं से कोई शिकायत नहीं आयी है। उससे कहो कि अब वह घर पर बैठकर आराम करे। उसे हर महीने पूरी तनख्वाह मिलती रहा करेगी।’

परन्तु पियरे ने रिटायर होने से इनकार कर दिया। उसे इस बात से गहरा धक्का लगा कि वह अपने प्यारे घोड़े जोजफ से रोज नहीं मिल पायेगा। ‘हम दोनों ही अब बूढ़े हो रहे हैं,’ उसने जैक से कहा। ‘हम दोनों अगर इकट्ठे ही रिटायर हों तो अच्छा होगा। मैं आपसे यह वादा करता हूँ कि जब मेरा घोड़ा रिटायर होगा तब मैं भी काम छोड़ दूँगा।’

जैक एक भला आदमी था। वह पियरे की बात समझ गया। पियरे और जोजफ के बीच रिश्ता ही कुछ ऐसा था जिसे देख दुनिया मुस्कराने लगे। ऐसा लगता था मानो दोनों एक दूसरे का सहारा हों। जब पियरे गाड़ी की सीट पर बैठा हो, जोजफ गाड़ी खींच रहा हो, तब दोनों में से कोई भी बूढ़ा नहीं लगता था। लेकिन काम खत्म होने के बाद पियरे लँगड़ाते हुए सड़क पर इस तरह धीरे-धीरे चलता, जैसे वह बहुत बूढ़ा आदमी हो। उधर घोड़े का भी मुँह लटक जाता। वह हारा-थका सा अस्तबल वापस जाता।

सुबह-सुबह एक दिन जब पियरे आया तो जैक ने उसे एक बेहद बुरी खबर सुनायी। ‘पियरे, आज सुबह जोजफ सोकर ही नहीं उठा। वह बहुत बूढ़ा हो गया था। 25 साल की उम्र में घोड़े की वैसी ही हालत हो जाती है जैसी 75 साल के बूढ़े आदमी की होती है।’

‘हाँ,’ पियरे ने धीरे से कहा। ‘अब जोजफ को कभी नहीं देख पाऊँगा।’

‘नहीं, तुम उसे देख सकते हो,’ जैक ने दिलासा देते हुए कहा ‘वह अभी अस्तबल में है और उसके चेहरे पर बड़ी शान्ति है। तुम जाकर उसे देख तो लो।’

पियरे घर लौटने के लिए वापस मुड़ा, ‘तुम समझोगे नहीं, जैक।’ जैक ने उसका कन्धा थपथपाया, ‘फिक्र न करो। हम तुम्हारे लिए जोजफ जैसा ही एक और घोड़ा ढूँढ़ देंगे और महीने भर में तुम जोजफ की तरह उसे भी पूरा रास्ता सिखा देना ... है न ... ।’

पियरे बरसों से एक मोटी टोपी पहनता था। टोपी के हुड से उसकी आँखें लगभग ढँक जाती थीं। उसे उन आँखों में एक निर्जीव भाव दिखायी दिया। पियरे की आँखों से उसके दिल का दर्द झलक रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसका दिल रो रहा हो।

'आज छुट्टी ले लो पियरे,' जैक ने कहा। परन्तु पियरे उससे पहले ही घर वापस चल पड़ा था। अगर कोई उसके पास होता तो वह अवश्य पियरे की आँखों से लुढ़कते आँसू देखता और उसका सुबकना सुनता। पियरे एक कोना पार कर सीधा सड़क पर आ गया। उधर तेजी से आते ट्रक के ड्राइवर ने जोर से हार्न बजाया और दबा कर ब्रेक लगाया, लेकिन पियरे को कुछ सुनायी नहीं दिया।

पाँच मिनट बाद एम्बुलेंस आयी। उसके ड्राइवर ने कहा, 'यह आदमी मर चुका है।'

तब तक जैक और दूध-कम्पनी के कई लोग वहाँ आ पहुँचे और पियरे के मृत शरीर को देखने लगे।

ट्रक ड्राइवर ने गुस्से में कहा, 'यह आदमी खुद-ब-खुद ट्रक के सामने आ गया। शायद ट्रक दिखा ही नहीं। वह ट्रक के सामने इस तरह आया जैसे उसे कुछ दिखायी ही नहीं दे रहा हो- जैसे वह एकदम दृष्टिहीन हो।'

एम्बुलेंस का डॉक्टर अब लाश की ओर झुका, दृष्टिहीन वह आदमी तो सचमुच दृष्टिहीन था।

जरा उसकी आँखों का मोतियाबिन्द तो देखो? यह कम से कम पाँच साल से दृष्टिहीन होगा।' फिर क्वेन्टीन रेनाल्ड का जन्म 11 अप्रैल 1902 में न्यूयार्क नगर (संयुक्त राज्य अमेरिका) में हुआ था। यह एक लेखक और पत्रकार के रूप में ख्याति प्राप्त थे। इनका देहावसान 17 मार्च 1965 को हुआ था।

उसने जैक की तरफ मुड़ कर कहा, ‘तुम कहते हो कि यह आदमी तुम्हारे लिए काम करता था? तुम्हें नहीं मालूम कि वह दृष्टिहीन था?’

‘नहीं...नहीं,’ जैक ने हल्के से कहा। ‘यह रहस्य हम में से किसी को नहीं पता था। सिर्फ उसके दोस्त जोजफ को पता था...। यह उन दोनों के बीच की आपसी बात थी। सिर्फ .... उन दोनों के बीच की।’

- क्वेन्टीन रेनाल्ड

क्वेन्टीन रेनाल्ड का जन्म 11 अप्रैल 1902 में न्यूयार्क नगर (संयुक्त राज्य अमेरिका) में हुआ था। यह एक लेखक और पत्रकार के रूप में ख्याति प्राप्त थे। इनका देहावसान 17 मार्च 1965 को हुआ था।

शब्दार्थ

वादा = वचन, प्रतिज्ञा। **वफादार** = स्वामिभक्त, मित्रता का निर्वाह करने वाला। **शेखी बघारना** = बढ़-चढ़ कर बातें करना। **इत्मीनान** = भरोसा, विश्वास। **मोहलत** = समय देना, फुरसत । **याददाश्त** = स्मरणशक्ति। **मुआयना** = अवलोकन, निरीक्षण, जाँच-पड़ताल। **अर्ज करना** = निवेदन, प्रार्थना। **दिलासा** = आश्वासन, सान्त्वना, धीरज। **दृष्टिहीन** = जिसकी आँखों की रोशनी चली गयी हो।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अब अपने साथियों के साथ इस पर अभिनय कीजिए।

2. निम्नलिखित कहानी को पूरा कीजिए-

एक चिड़िया के दो बच्चे थे। दोनों बच्चे अभी मात्र दो दिन के थे और बहुत ही भूखे थे। बाहर घनघोर बारिश हो रही थी और तेज आँधी चल रही थी। ठंड के मारे बुरा हाल था। ....

3. स्वामिभक्त जानवरों में महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' का नाम प्रसिद्ध है। चेतक और उसकी स्वामिभक्ति के बारे में शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।

विचार और कल्पना

1. यदि आपको कहीं घायल व्यक्ति मिले तो उसकी सहायता किस प्रकार करेंगे ?

2. हमारी आँखे ईश्वरीय वरदान है। संसार में बहुत से ऐसे लोग हैं जो जन्मान्ध हंै अथवा बाद में दृष्टिहीन हो गये। ऐसे लोग बाहर की चीजों को देख नही सकते किन्तु दैनिक जीवन में अपना काम स्वयं पूरा कर लेते हैं। आप अपनी आँखांे को कुछ देर तक बन्द करके कल्पना कीजिए कि उन्हें दैनिक जीवन में कौन-कौन सी परेशानियों का सामना करना पड़ता होगा ?

कहानी से

नीचे दिए गये प्रश्नों में सही विकल्प चुनकर सही (झ्) का निशान लगाइए-

1. पियरे जिस छोटी सड़क पर दूध बाँटता था, उसका नाम था -

(क) मौंट्रियल स्ट्रीट (ख) जैक स्ट्रीट

(ग) कनाडा स्ट्रीट (घ) एडवर्ड स्ट्रीट

2. जैक को पियरे के बुढ़ापे का पता तब चला जब एक दिन पियरे-

(क) लंगड़ाता हुआ आया।

(ख) धीरे-धीरे आया।

(ग) एक आदमी का सहारा लेकर आया।

(घ) लाठी के सहारे चलता हुआ आया।

3. पियरे ने रिटायर होने से इनकार कर दिया, क्योंकि-

(क) रिटायर होने की बात सुनकर उसे धक्का लगा था।

(ख) वह अपने प्यारे घोड़े जोजफ से रोज नहीं मिल सकता था।

(ग) वह अभी बूढ़ा नहीं हुआ था।

(घ) उसे दूध बाँटने का काम अच्छा लगता था।

4. पियरे अपने घोड़े का नाम सन्त जोजफ के नाम पर क्यों रखना चाहता था ?

5. पियरे और जोजफ के बीच वह कौन-सी बात थी जिसका रहस्य किसी को पता नहीं था।

6. पाठ के आधार पर बताइए कि 'समूह 2' का कौन-सा शब्द 'समूह 1' के शब्द से सम्बंधित है। उन शब्दों को चुनकर समूह 1 के सामने लिखिए -

समूह- 1	समूह- 2
सुपरवाइजर	डॉक्टर

पियरे	घोड़ा
25 साल	जैक
आँख	टोपी
घोड़ा	अस्तबल
एम्बुलेंस	मोतियाबिन्द

7. कहानी का कौन सा अंश आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों ?

8. कहानी के किस पात्र ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया ? क्यों ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए-

अतिथी, तनखाह, मूँह, दुसरे, कमपनी, सुपरवाईजर, नोकरों,

2. समान अर्थ देने वाले शब्द समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं, उदाहरणार्थ- नीरज, पंकज, पद्म। इन तीनों शब्दों का एक ही अर्थ है- कमल। ये शब्द 'कमल' के पर्यायवाची शब्द हैं।

नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-

दूध, दुनिया, आँख, घोड़ा।

3. जिन शब्दों के अर्थ एक दूसरे के विपरीत होते हैं, उन्हें विपरीतार्थी अथवा विलोम शब्द कहते हैं, जैसे - अन्धकार का विपरीतार्थी शब्द है 'प्रकाश'।

नीचे लिखे वर्ग-क तथा वर्ग-ख के शब्दों में से एक-एक शब्द लेकर साथ-साथ प्रयोग में आने वाले विपरीतार्थी शब्दों के जोड़े बनाइए।

वर्ग-क	वर्ग-ख
हर्ष	निरर्थक
जय	विषाद
जड़	अवनति
सार्थक	पराजय
उन्नति	चेतन

4. निम्नलिखित शब्द-युग्मों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

छोटी-छोटी, जीव-जन्तु, आस-पास, कुछ न कुछ।

5. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

(क) जिसे दिखायी न देता हो। (ख) रोगियों को ले जाने वाली गाड़ी।

(ग) जहाँ घोड़े रखे जाते हैं। (घ) जिसकी कोई हद न हो।

6. (क) इन शब्दों का अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़कर लिखिए-

ख्याति, देहावसान, एम्बुलेंस, दिलासा, तनख्वाह

(ख) अब इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

इसे भी जानें

विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली चीनी भाषा के बाद क्रमशः स्पेनिश, इंग्लिश, अरेबिक और खड़ी भाषा हिन्दी है।

पाठ 21

4DHPX9

आओ फिर से दिया जलाएँ

(प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने जीवन में आने वाली कठिनाइयों से निराश न होने तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहने की प्रेरणा दी है।)

भरी दुपहरी में अँधियारा,

सूरज परछाईं से हारा,

अन्तरतम का नेह निचोडें, बुझी हुई बाती सुलगाएँ।

आओ फिर से दिया जलाएँ।

हम पड़ाव को समझे मंजिल,

लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल,

वर्तमान के मोहजाल में आने वाला कल न भुलाएँ।

आओ फिर से दिया जलाएँ।

आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा,

अपनों के विघ्नों ने घेरा।

अंतिम जय का वज्र बनाने, नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ।

आओ फिर से दिया जलाएँ।

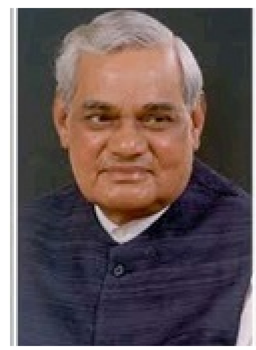

अटल बिहारी बाजपेयी का जन्म 2 दिसम्बर 1924 ई0 को ग्वालियर म0प्र0 में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री कृष्ण बिहारी बाजपेयी एवं माता श्रीमती कृष्णा देवी था। अटल जी भारत के प्रधानमंत्री भी रहे। भारत सरकार द्वारा इनको 'भारतरत्न' प्रदान किया गया है। इनकी प्रमुख रचनाएँ-'मेरी इक्यावन कविताएँ', 'नई चुनौती नया अवसर', 'मेरी संसदीय यात्रा (चार खण्ड)', 'न दैत्यं न पलायनम्' इत्यादि है।

शब्दार्थ

अन्तरतम = अन्तःकरण, सबसे भीतरी भाग। **नेह** = प्रेम। **आहुति** = यज्ञ या हवन के समय सामग्री को अग्नि में डालना। **विघ्न** = बाधा।

1. भरी हुइ दुपहरी से कवि का क्या आशय है ?

2. कवि बुझी हुई बाती को कैसे सुलगाने को कह रहा है ?

3. ‘पड़ाव को ही समझे मंजिल’ का क्या आशय है ?

4. ‘आहुति बाकी यज्ञ अधूरा’ से कवि का क्या आशय है ?

5. ‘वर्तमान के मोह जाल’ से कवि का क्या आशय है ?

6. कवि द्वारा ‘नव दधीचि’ की बात क्यों की जा रही है ?

विचार और कल्पना-

1. अगर भरी हुई दुपहरी में अचानक अँधेरा हो जाय तो क्या-क्या कठिनाइयाँ होंगी ?

2. यदि आने वाले कल को भुला दिया जाय तो हमारे वर्तमान पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा ?

कुछ करने को-

1. दीप से सम्बंधित अन्य कवियों की कविताओं का संग्रह कर पुस्तिका में लिखिए।

2. बिजली का अविष्कार होने के पूर्व प्रकाश के लिए किन-किन साधनों का प्रयोग किया जाता था, पता करके लिखिए।

3. अपने भविष्य को सुधारने के लिए वर्तमान में आप क्या-क्या करेंगे। इस विषय पर पुस्तिका में लिखिए।

भाषा की बात-

1. ‘अं’ को अनुस्वार कहते हैं। इसका चिह्न (-ं) होता है। अनुस्वार एक नासिक्य ध्वनि है, क्योंकि इसे बोलते समय हवा केवल नाक से बाहर निकलती है। इसका प्रयोग प्रत्येक

व्यंजन वर्ग के पंचमाक्षर यानी पाँचवंे अक्षर जैसे-ड., ज, ण, न, म के स्थान पर किया जाता है। दिये गये शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार (ं) लगाइए-

यथा- निचोड़े- निचोड़ें

मजिल

अतिम

विघ्नो

2. नेह शब्द का दो अर्थ है-1. प्रेम 2.तेल। इसी प्रकार दो अर्थ देने वाले पाँच शब्द और उनका अर्थ लिखिए।

3. कविता में आए तुकान्त शब्दों को छाँटकर अपनी पुस्तिका पर लिखिए।

शिक्षण संकेत- कविता में आए दधीचि प्रसंग को छात्रों को विस्तार से बताएँ।

पढ़ने के लिए

जलाते चलो ये दीये स्नेह भर-भर

कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा।

जला दीप पहला तुम्ही ने तिमिर की,

चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी।

तिमिर की सरित पार करने तुम्हीं ने,

बना दीप की नाव तैयार की थी।

बहाते चलो नाव वह तुम निरन्तर,

कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा।

जलाते चलो ये दीये स्नेह भर-भर

कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा।

-द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (द्वारिका)

इसे भी जानें

उपरोक्त भारतीय रेल यात्री टिकट के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें-

(क) कहाँ से कहाँ तक यात्रा करने के लिए टिकट क्रय किया गया है ?

(ख) यात्रा में ट्रेन द्वारा कुल कितनी दूरी तय की गयी ?

(ग) किस श्रेणी में यात्रा करने हेतु टिकट क्रय किया गया है ?

(घ) यात्रा करने की तिथि कौन सी है ?

(ड़) यात्री का च्छत् नम्बर क्या है ?

(च) टिकट खरीदने हेतु कुल कितना धन व्यय किया गया है ?

(छ) किस नम्बर की गाड़ी से यात्रा की गयी ?

(ज) कुल कितने यात्रियों के लिए टिकट खरीदा गया है ?

(झ) यात्रियों को किस-किस नम्बर का सीट/बर्थ आवंटित किया गया है ?

अनिवार्य-संस्कृत

वन्दना

4LHGRE

(1)

प्रभो! त्वं पिताऽसि, त्वमेवासि माता

वयं बालकाः बालिकास्त्वां नमामः।

त्वमेवासि विश्वस्य कर्ता विधाता

त्वमेवासि बन्धुः, त्वमेवासि भर्ता।।

(2)

प्रभो! देहि विद्यां सुबुद्धिं प्रदेहि

बलं देहि देहे सुकर्माणि कर्तुम्।

प्रभो! देशभक्तिं सुविद्यां च देहि

सदा सद्गुणानेव देव! प्रदेहि।।

(3)

प्रभो! ज्ञानगङ्गा-तरङ्गैः नवीनैः,

समस्तं विभेदं हर त्वं जनानाम्।

सुधासार-सिक्ताः सदा प्रेमयुक्ताः,

वयं शक्तिमन्तः सदा त्वां नमामः।।

शब्दार्थ

प्रभो!=हे स्वामी। **त्वम्**=तुम। **असि**=हो। **वयम्**=हम सभी। **नमामः**=नमस्कार करते हैं। **कर्ता**=करने वाला। **विधाता**=निर्माता। **बन्धुः**=सम्बन्धी। **भर्ता**=पालक। **देहि**=दो। **प्रदेहि**=प्रदान करो। **सुकर्माणि**=अच्छे कार्य। **सद्गुणानेव**=(सद्गुणान्+एव)=अच्छे गुणों को ही। **विभेदम्**=भेद-भाव। हर=दूर करो। **सुधासार**=अमृत-रस से। **सिक्ताः**=भीगे हुए। **शक्तिमन्तः**=शक्तिशाली।

अन्वय-

हे प्रभो ! त्वं पिता असि, त्वमेव माता असि, त्वमेव विश्वस्य कर्ता असि, विधाता (असि), त्वमेव बन्धुः असि, त्वमेव (विश्वस्य) भर्ता असि। (अत एव) वयं बालकाः बालिकाश्च त्वां नमामः ।। 1 ।।

हे प्रभो (अस्मभ्यं) विद्यां देहि, सुबुद्धिं प्रदेहि, सुकर्माणि कर्तुं देहे बलं देहि, देशभक्तिं देहि, सुविद्यां देहि। हे देव ! सदा सद्गुणानेव प्रदेहि ।। 2 ।।

हे प्रभो ! नवीनैः ज्ञानगङ्गातरङ्गैः जनानां समस्तं विभेदं त्वं हर। (येन) सुधासार सिक्ताः सदा प्रेमयुक्ताः शक्तिमन्तः वयं सदा त्वां नमामः ।। 3।।

भावार्थ

तुम हमारे पिता हो, तुम्हीं हमारी माता हो, इस विश्व का निर्माण करने वाले हो, विधाता तुम्हीं हो, तुम ही हमारे बन्धु हो तथा तुम्हीं हमारे पालन-पोषण करने वाले हो, हे प्रभु ! हम सब बालक-बालिकाएँ तुम्हें नमस्कार करते हैं। ।। 1 ।।

हे प्रभु ! (हमें) विद्या और सुबुद्धि प्रदान करो, अच्छे कार्यों को करने के लिए हमारे शरीर में बल प्रदान करो, हे प्रभु ! हमें देशभक्ति का भाव तथा सुविद्या प्रदान करो। हे देव ! हमेशा हम में सद्गुणों का ही विकास करो। ।। 2 ।।

हे प्रभु ! अपने ज्ञान-गंगा के नवीन तरंगों से मनुष्यों के समस्त भेद-भाव को हर लो। हम सब में अमृत रस एवं प्रेम-भाव का संचार करने वाले, शक्ति प्रदान करने वाले प्रभु ! तुम्हें हम सब प्रणाम करते हैं। ।। 3 ।।

शिक्षण-संकेत -

श्लोकों का सस्वर गायन कराएँ।

प्रथमः पाठः

4LRCT2

क्रीडा - महोत्सवः

(अकारान्ताः पुल्लिंगशब्दाः वर्तमानकालः च)

अद्य विद्यालयस्य वार्षिक - क्रीडा - महोत्सवः अस्ति| विद्यालयस्य परिसरे एव क्रीडाक्षेत्रम् अस्ति | अवनीशः, उमेशः, गोकुलः साधना, गीता इत्यादयः बालकाः बालिकाः च हस्तकन्दुके निपुणाः सन्ति| इदानीं षष्ठकक्षायाः सप्तमकक्शायाः च छात्राणाम् परस्परं क्रीडाप्रतियोगिता प्रचलति|

अस्माकं क्रीडाध्यापकाः निर्णायकाः भवन्ति| अवनीशस्य नेतृत्वे छात्राः आगच्छन्ति| क्रीडादर्शनाय विद्यालयस्य सर्वे छात्राः उपस्थिताः सन्ति| ते करतलवादनेन कोलाहलेन च क्रीडाकानां छात्राणाम् उत्साह्वर्धनं कुर्वन्ति | क्रीडायाः पश्चात् प्रधानाध्यापकः पुरस्काररूपेण कन्दुकं वितरति| अध्यापकाः छात्रेभ्यः मिष्टान्नं वितरन्ति| स्वास्थ्यलाभाय क्रीडा भवति|

शब्दार्थ

अद्य = आज| **परिसरे** = मैदान में| **क्रीडाक्षेत्रम्** = खेल का मैदान| **हस्तकन्दुके** = बालीबाल में| **क्रीडाध्यापकाः** = खेल के अध्यापक| **करतलवादनेन** = ताली बजाने से

| **कोलाहलेन** = हल्ला करने से | **क्रीडाकानां छात्राणाम्** = खेलने वाले छात्रों के | **वितरन्ति** = बाँटते हैं |

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

वार्षिकम्	क्रीडाक्षेत्रम्	स्वास्थ्यम्	उत्साहवर्धनम्
मिष्टान्नम्	पश्चात्	क्रीडायाः	स्वास्थ्यलाभाय

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) विद्यालये अद्य किम् अस्ति?

(ख) उमेशः कस्मिन् क्रीडायां निपुणः अस्ति?

(ग) कस्य नेतृत्वे छात्राः आगच्छन्ति?

(घ) छात्राः किं कुर्वन्ति?

(ङ) अध्यापकाः किं वितरन्ति?

3. मंजूषा से उचित पदों का चयन कर रिक्त स्थानों को भरें-

निर्णायकाः अस्ति कन्दुकं नेतृत्वे छात्रेभ्यः

(क) विद्यालयस्य परिसरे एव क्रीडाक्षेत्रम् ....।

(ख) अस्माकं क्रीडाध्यापकाः .... भवन्ति।

(ग) अवनीशस्य .... छात्राः आगच्छन्ति।

(घ) प्रधानाध्यापकः पुरस्काररूपेण .... वितरति।

(ङ) अध्यापकाः .... मिष्टान्नं वितरन्ति।

4. रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न-निर्माण करें-

(क) अद्य विद्यालयस्य वार्षिक-क्रीडामहोत्सवः अस्ति।

(ख) प्रधानाध्यापकः पुरस्काररूपेण कन्दुकं वितरति।

(ग) अध्यापकाः छात्रेभ्यः मिष्टान्नं वितरन्ति।

5. हिन्दी में अनुवाद करें -

(क) विद्यालयस्य परिसरे एव क्रीडाक्षेत्रम् अस्ति।

(ख) छात्राणां परस्परं क्रीडाप्रतियोगिता प्रचलति।

(ग) छात्रेभ्यः मिष्टान्नं वितरन्ति।

(घ) स्वास्थ्यलाभाय क्रीडा भवति।

(ङ) प्रधानाध्यापकः कन्दुकं वितरति।

6. नीचे कर्ता, कर्म और धातु दिये गये हैं, उनमें उचित विभक्तियों को जोड़कर वाक्य रचना करें-

छात्र पुस्तक पठ् यथा- छात्रः पुस्तकं पठति।

करीम ओदन खाद् = ...।

रमेश ग्राम गच्छ् = ...।

पीटर पत्र लिख् = ...।

रमा कन्दुक नी (नय्) = ...।

विशेष-

(क) जिन शब्दों के अन्तिम अक्षर में ‘अ’ स्वर होता है उन्हें अकारान्त शब्द कहते हैं, जैसे- नर,

(न्+अ+र्+अ) छात्र, अनिल, रमेश, घट, पट, अश्व, भ्रमर, मृग, गज आदि। ये सभी शब्द पुंल्लिङ्ग हैं। इनके अतिरिक्त फल, जल, पुष्प आदि अकारान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। परिशिष्ट में दिये गये अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द ‘बालक’ के रूप को देखें और इसी प्रकार उपर्युक्त सभी अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति में रूपों का अभ्यास करें।

(ख) किसी काम के करने को क्रिया कहते हैं। जो काम चल रहा हो उसे वर्तमान काल की क्रिया कहते हैं। ‘जाता है, जाती है, नहीं जाते हैं’ यह वर्तमान काल की क्रिया कहलाती है। इसी प्रकार जिसके अन्त में ‘ता है, ती है या ते हैं’ चिह्न होता है, उसे वर्तमान काल की क्रिया कहते हैं। इस क्रिया को बताने के लिए धातु के लट्लकार के रूप का प्रयोग होता है। परिशिष्ट में दिये गये ‘पठ्’ धातु के लट्लकार-रूप को देखें तथा निम्नांकित धातुओं के लट्लकार के रूप का भी अभ्यास करें-

नम्=नमस्कार करना। धाव्=दौड़ना। वद्=बोलना। दृश् (पश्य)=देखना। प्रच्छ् (पृच्छ्)=पूछना। चल्=चलना। खेल्=खेलना। उत्पत्=उड़ना। भू=होना। गम् (गच्छ)=जाना। अस्=होना।

शिक्षण-संकेत -

(क) ‘गम्’ और 'अस्' धातुओं के लट्लकार के रूप का अभ्यास कराएँ।

(ख) पाठ में अकारान्त पुल्लिंग शब्दों के विविध रूपों का प्रयोग हुआ है। छात्रों को उनका अभ्यास कराएँ।

सत्यमेव जयते।

द्वितीयः पाठः

पत्र-नौका

पत्रनिर्मिता तव नौका

पत्रनिर्मिता मम नौका।

तव नौका सलिले गलिता

अग्रे मम नौका चलिता।।

नहि नहि दुःखं करणीयम्

आनेयं नूतनपत्रम्।

सा गलिता यदि का गलिता

नवा नवा नौका रचिता।।

वायुः यदा वहेद् मन्दम्

तदा तडागो गमनीयः।

पुनः नवीने ते नौके

गमिष्यतः पारं चलिते।।

शब्दार्थ

पत्रम्=कागज। **निर्मिता**=बनायी हुई। **नौका**=नाव। **सलिले**=पानी में। **गलिता**=गल गयी। **अग्रे**=आगे। **चलिता**=चली। **करणीयम्**=करना चाहिए। **आनेयम्**=लाना चाहिए। **नूतनपत्रम्**=नया कागज। **नवा**=नयी (नवा नवा=नयी-नयी)। **रचिता**=बनायी गयी। **यदा**=जब। **तदा**=तब। **वहेद्**=चले। **तडागः**=तालाब। **गमनीयः**=जाना चाहिए। **पुनः**=फिर। **ते**=वे दोनों। (स्त्रीलिङ्ग)

अभ्यास

1. एक पद में उत्तर दें-

(क) नौका केन निर्मिता?

(ख) किम् आनेयम्?

(ग) नवा नवा का रचिता?

(घ) किं न करणीयम्?

2. अधोलिखित श्लोकांशों का सही क्रम में मिलान करें -

‘क’	‘ख’
तव नौका सलिले गलिता	पत्र निर्मिता मम नौका।
पत्र निर्मिता तव नौका	नवा नवा नौका रचिता।
सा गलिता यदि किं गलिता	अग्रे मम नौका चलिता।

3. मन्जूषा से क्रिया पदों को लेकर श्लोकांश की पूर्ति करें-

चलिता निर्मिता रचिता गलिता।

(क) पत्र ...... तव नौका।

(ख) मम नौका अग्रे ......।

(ग) तव नौका सलिले ......।

(घ) नवा नवा नौका ....।

4. संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) मेरी नाव कागज की बनी है।

(ख) तुम्हारी नाव पानी में गल गयी।

(ग) मेरी नाव आगे चली गयी।

(घ) दुःख नहीं करना चाहिए।

(ङ) नया कागज लाएँ।

(च) नयी-नयी नाव बनाएँ।

शिक्षण-संकेत -

(क) छात्रों को कक्षा में कविता का अभ्यास तथा वाचन कराएँ।

(ख) शिक्षक नीचे दी गयी भाव साम्य की कविता का गायन कराएँ तथा छात्रों से अभ्यास पुस्तिका में लिखवाएँ।

कः कुत्र किं करोति

विपिने चरन्ति गावः

सलिले चलन्ति नावः।

गगने लसन्ति ताराः

विकिरन्ति दीप्ती-धाराः।।

कमले लसन्ति भृंड्.गा

तरु-कोटरे विहंड्.गा।

निपतन्ति दीप-मध्ये

परितो द्रुतं पतंड्.गा।।

-वासुदेव द्विवेदी 'शास्त्री'

विद्या सर्वस्य भूषणम् ।

तृतीयः पाठः

मूर्खमित्रम्

(लङ्लकारः)

एकस्मिन् नगरे एकः नृपः आसीत्। तस्य भवने बहवः पशवः आसन्। ते नृपस्य सेवाम् अकुर्वन्। तेषु पशुषु एकः वानरः अपि तस्य प्रियः अभवत् ।

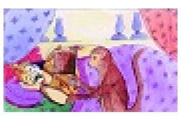

एकदा नृपः सुप्तः आसीत्। तदा सः वानरः व्यजनेन तम् अवीजयत्। तस्मिन् काले एका मक्षिका नृपस्य नासिकायाः उपरि उपाविशत् । वानरः वारं वारं तां मक्षिकां व्यजनेन न्यवारयत् तथापि सा मक्षिका पुनः पुनः आगत्य तत्रैव अतिष्ठत् । तेन सः वानरः क्रुद्धः अभवत्। तां मक्षिकां हन्तुं सः खड्गेन प्रहारम् अकरोत् । मक्षिका तु उड्डीय दूरम् अगच्छत्, किन्तु प्रहारेण नृपस्य नासिका छिन्ना अभवत् ।

अतः मूर्खजनैः सह मित्रता नोचिता ।

शब्दार्थ

नृपः=राजा। बहवः = बहुत। एकदा = एक समय (एक बार) । व्यजनेन = पंखे से। अवीजयत् = हवा कर रहा था। मक्षिका = मक्खी। हन्तुम् = मारने के लिए। खड्गेन = खड्ग से (तलवार से)। न्यवारयत् = हटाया। उड्डीय = उड़कर। नासिका = नाक ।

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

पशुषु व्यजनेन अवीजयत्

क्रुद्धः खड्गेन उड्डीय

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) कस्य भवने पशवः आसन् ?

(ख) कः पशुः राज्ञः प्रियः आसीत् ?

(ग) नृपस्य नासिकायाः उपरि का उपाविशत् ?

(घ) वानरः कां हन्तुं खड्गेन प्रहारम् अकरोत् ?

(ङ) कस्य नासिका छिन्ना अभवत् ?

3. पाठ के उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(क) .... नगरे एकः नृपः आसीत् ।

(ख) एकदा नृपः .... आसीत् ।

(ग) मक्षिका पुनः पुनः .... तत्रैव अतिष्ठत् ।

(घ) मूर्खजनैः .... नोचिता ।

(ङ) .... व्यजनेन नृपम् अवीजयत् ।

4. संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) पशु राजा की सेवा करते थे।

(ख) एक बार राजा सोये हुए थे ।

(ग) मक्खी उड़ कर दूर चली गयी ।

(घ) उसने तलवार से नाक पर प्रहार किया ।

5. भूतकाल में लङ्लकार का प्रयोग होता है, जैसे- आसीत् (था), 'अस्' धातु,

लङ्लकार, प्रथम पुरुष एकवचन। इस पाठ में प्रयुक्त लङ्लकार के रूपों को ढूँढ़कर लिखें।

शिक्षण-संकेत -

1. भू, वद्, गम् धातुओं का लङ्लकार में रूप लिखवाएँ ।

2. इस प्रकार की कोई अन्य कहानी हिन्दी में लिखकर दिखाने को कहें ।

आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया ।

चतुर्थः पाठः

वर्षर्तुः (वर्षा + ऋतुः)

(अकारान्त - नपुंसकलिंगशब्दाः , भविष्यत्कालः च)

आकाशं मेघाच्छउन्नम् वर्तते |वर्षा निकटे अस्ति |जलवर्षणेन बालानां जनानां च महान् आनन्दो भविष्यति| वृक्षेषु नवीनानि पत्राणि उद्भविष्यन्ति| प्राचीनानि पत्राणि पतिष्यन्ति| पत्रेषु वर्षाजलं मधुरं ध्वनिं करिष्यति|

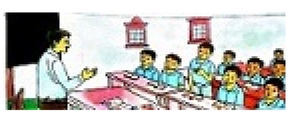

अध्यापकः - देवदत्त ! तवं कथय, वर्षायाः अनन्तरं कृषकाः किं किं कार्यं करिष्यन्ति ?

देवदत्तः - गुरो ! वर्षायाः अनन्तरं कृषकाः क्षेत्रेषु धान्यं वप्स्यन्ति | एतेन धान्यानि भविष्यन्ति| धान्यं दृष्ट्वा कृषकाणाम् हृदयं प्रफुल्लितं भविष्यति|

अध्यापकः - वर्षाकाले जनाः कीदृशं कष्टम् अनुभविष्यन्ति ?

देवदत्तः - गुरो ! वर्षाकाले भूमिः पङ्किला भविष्यति, येन जनाः भूमौ पतिष्यन्ति| जलस्य अधिकतया मार्गाः अवरुद्धाः भविष्यन्ति| गमनागमने बाधा

आगमिष्यति | मेघा: गर्जनं करिष्यन्ति तथा विद्युत्पातः च अपि भविष्यति | येन जनाः भयभीता: भविष्यन्ति | एतत्सर्वं कष्टकरम् एव | तथापि अयं ऋतु: जनानां कृते अतीव सुखकरो वर्तते |

शब्दार्थ

वर्षर्तुः=(वर्षा + ऋतु:)बरसात का मौसम। **मेघाच्छन्नम्**=(मेघ + आच्छन्नम्)बादलों से ढँका हुआ। **वर्तते**=है। **वर्षणेन**=वर्षा से। **बालानाम्**=बच्चों को। **जनानाम्**=मनुष्यों को, लोगों को। **भविष्यति**=होगा। **वृक्षेषु**=पेड़ों में, पेड़ों पर। **उद्भविष्यन्ति**=उत्पन्न होंगे। **पतिष्यन्ति**=गिरेंगे। **पत्रेषु**=पत्तों पर। **वर्षाजलम्**=वर्षा का जल। **अनन्तरम्**=बाद में। **करिष्यन्ति**=करेंगे। **क्षेत्रेषु**=खेतों में। **वप्स्यन्ति**=बोयेंगे। **अनुभविष्यन्ति**=अनुभव करेंगे। **पङ्किला**=कीचड़ युक्त। **येन**=जिससे। **आगमिष्यति**=आयेगी। **विद्युत्पातः**=बिजली का गिरना। **एतत्सर्वम्**=(एतत् + सर्वम्) यह सब। **कृते**=लिए।

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

मेघाच्छन्नम् जलवर्षणेन उद्भविष्यन्ति

प्रफुल्लितम् वप्स्यन्ति विद्युत्पातः

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) आकाशं कदा मेघाच्छन्नं भवति?

(ख) वृक्षेषु कानि उद्भविष्यन्ति?

(ग) वर्षाजलं किं करिष्यति?

(घ) भूमिः कदा पङ्किला भविष्यति?

(ङ) जनाः केन भयभीताः भविष्यन्ति?

3. मन्जूषा से उचित पदों का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

करिष्यन्ति   पतिष्यन्ति   मार्गाः   भविष्यन्ति   आगमिष्यति

(क) प्राचीनानि पत्राणि ----------।

(ख) वर्षाकाले मेघाः गर्जनम् -------।

(ग) जलस्य अधिकतया ------- अवरुद्धाः भविष्यन्ति।

(घ) गमनागमने बाधा --------।

(ङ) विद्युत्पातेन जनाः भयभीताः ---------।

विशेष-

(क) भविष्य में होने वाली क्रिया को भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं। 'जायेगा, क्यों जायेगी, नहीं जायेंगे' आदि भविष्यत् काल की क्रिया होती है अर्थात् उसके अन्त में 'गा, गी या गे, चिह्न होते हैं। इसके लिए संस्कृत में धातु के लृट्लकार के रूप का प्रयोग होता है। नीचे लृट्लकार के रूपों को ध्यान से पढ़ें-

भू =होना (भविष्यत् काल/लृट्लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु. -	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म. पु. -	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ

उ.पु.-भविष्यामि भविष्यावः भविष्यामः

इसी प्रकार पठ्, गम्, खेल्, चल्, वद्, खाद्, कृ धातुओं का लृट्लकार में रूप चलायें। उद् + भू (उद्भव्)=उत्पन्न होना, उत् + पत् (उत्पत्)=उड़ना, निः + सृ (निःसर्)=निकलना, वि + तृ (वितर्)=बाँटना- धातुओं के लृट्लकार के रूपों का भी इसी प्रकार अभ्यास करें। आपने देखा कि इन सभी धातुओं के अन्त में क्रमशः योग हुआ है-

एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथम पुरुष इष्यति इष्यतः इष्यन्ति

मध्यम पुरुष इष्यसि इष्यथः इष्यथ

उत्तम पुरुष इष्यामि इष्यावः इष्यामः

ध्यान रहे, कुछ धातुओं में 'इ' के बिना केवल 'स्यति, स्यतः, स्यन्ति' आदि चिह्न का योग होता है। जैसे- पा=पीना (भविष्यत् काल लृट्लकार), पास्यति, पास्यतः, पास्यन्ति।

(ख) नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्ति में समान होते हैं, जैसे-

वन=जंगल (नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा विभक्ति वनम् वने वनानि

द्वितीया विभक्ति वनम् वने वनानि

4. रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न निर्माण करें-

(क) वर्षायाः अनन्तरं कृषकाः क्षेत्रेषु धान्यं वपन्ति।

(ख) धान्यं दृष्ट्वा कृषकाणां हृदयं प्रफुल्लितं भवति।

(ग) वर्षाकाले आकाशं मेघाच्छन्नं भवति।

5. संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) आकाश में बादल घिरे हैं।

(ख) कल वर्षा होगी।

(ग) मैं कल घर जाऊँगा।

(घ) तुम दोनों कहाँ जाओगे?

(ङ) हम दोनों अपना पाठ पढ़ेंगे।

6. हिन्दी में अनुवाद करें -

(क) वृक्षेषु नवीनानि पत्राणि उद्भविष्यन्ति।

(ख) वर्षायाः अनन्तरं कृषकाः धान्यं वप्स्यन्ति।

(ग) धान्यं दृष्ट्वा कृषकाणां हृदयं प्रफुल्लितं भविष्यति।

(घ) वर्षाकाले भूमिः पङ्किला भविष्यति।

(ङ) जलस्य अधिकतया मार्गाः अवरुद्धाः भविष्यन्ति।

शिक्षण-संकेत-

भविष्यत् काल के सरल वाक्यों का निर्माण एवं मौखिक प्रयोग कराएँ।

अहिंसा परमो धर्मः।

पञ्चमः पाठः

4MSVZM

नीतिश्लोकाः

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।1।।

अलसस्य कुतो विद्या? अविद्यस्य कुतो धनम्?

अधनस्य कुतो मित्रम्? अमित्रस्य कुतः सुखम्?।।2।।

विद्या ददाति विनयम्, विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद् धर्मः ततः सुखम्।।3।।

पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं धनम्।

कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या न तद् धनम्।।4।।

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।5।।

शब्दार्थ

निरामयाः=निरोग (निर् + आमय)। **दुःखभाग्** = दुःखी। **मा** = नहीं। **अलसस्य**= आलसी को। **अधनस्य**=निर्धन को, गरीब को। **पात्रताम्**=योग्यता को। **पात्रत्वात्**=योग्यता से। **आप्नोति**=प्राप्त करता है। **ततः**=उससे। **कुतः**=कहाँ। **परहस्तगतम्**=दूसरे हाथ में गया। **कार्यकाले**= आवश्यकता पड़ने पर अथवा अवसर आने पर।

अन्वय-

1. सर्वे सुखिनः भवन्तु। सर्वे निरामयाः सन्तु। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। कश्चित् दुःखभाग् मा भवेत्।

2. अलसस्य विद्या कुतः? (भवति) अविद्यस्य धनं कुतः? (भवति) अधनस्य मित्रं कुतः? (भवति) अमित्रस्य सुखं कुतः? (भवति)

3. विद्या विनयं ददाति। विनयात् पात्रतां याति। पात्रत्वात् धनम् आप्नोति। धनात् धर्मः (भवति)। ततः सुखं (भवति)।

4. या विद्या पुस्तकस्था (भवति), धनं तु परहस्तगतं (भवति)। कार्यकाले समुत्पन्ने सा विद्या (उपयोगाय) न भवति। तथैव तद् धनं (उपयोगाय न भवति)।

5. वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति। नद्यः परोपकाराय वहन्ति। गावः परोपकाराय दुहन्ति। (अतः) इदं शरीरं परोपकारार्थं भवति।

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

कश्चिद्　　अविद्यस्य　　पात्रत्वात्

दु:खभाग्भवेत् पुस्तकस्था परोपकारार्थमिदम्

धनमाप्नोति परहस्तगतं समुत्पन्ने

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) सर्वे किं पश्यन्तु ? (ख) कस्य मित्रं न भवति ?

(ग) विद्या किं ददाति ? (घ) कीदृशं धनं धनं न भवति ?

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(क) सर्वे .... पश्यन्तु। (ख) अमित्रस्य कुतः ....।

(ग) परोपकाराय दुहन्ति ....। (घ) धनाद् धर्मः ततः ....।

4. बड़े वृत्त में दिये गये पदों के साथ छोटे वृत्त में दिये गये उचित क्रिया पदों को जोड़ते हुए वाक्य रचना करें -

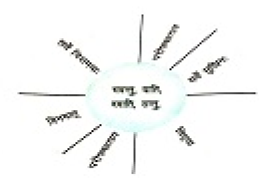

(क) ....। (घ) ....।

(ख) ....। (ङ) ....।

(ग) ....। (च) ....।

5. संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) विद्या विनय देती है।

(ख) विनय से योग्यता आती है।

(ग) परोपकार के लिए यह शरीर है।

पढ़ने के लिए

अधरं मधुरं वदनं मधुरं

नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।

हृदयं मधुरं गमनं मधुरं

मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

वचनं मधुरं, चरितं मधुरं

वसनं मधुरं वलितं मधुरम्

चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं

मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

शिक्षण-संकेत -

नीतिश्लोकों का सस्वर पाठ कराएँ।

लोभः पापस्य कारणम्।

षष्ठः पाठः

अस्माकं दिनचर्या

(विधिलिङ्लकार)

वयं स्वास्थ्यस्य लाभाय सावधाना: भवेम, यथा अस्माकं शरीरे सर्वाणि अंगानि स्वं स्वं कार्यं सम्यक् कुर्यु:| प्रतिदिनं सूर्योदयात् पूर्वम् उत्थानं कुर्यात्| भूमौ पादस्पर्शात् पूर्वं जनः ईश्वरं नमेत्| ततः जलं पिबेत्,बहिः स्वच्छपरिवेशे भ्रमेत्|

दंतानां शोधनाय प्रतिदिनं दन्तधावनं कुर्यात्| शुद्धजलेन स्नानं कुर्यात्| स्नात्वा उष्णं भोजनं कुर्यात्| भोजनान्ते तक्रं पिबेत्| निश्चितसमये विद्यालयं गच्छेत| विद्यालये गुरुजनं सादरं नमेत्| मित्रं च अभिवादयेत्| अध्ययनं मनोयोगेन कुर्यात्| अभ्यास्पुस्तिकायां सुन्दरं लिखेत् प्रश्नं च पृच्छेत्| कदापि तत्र कोलाहलं मा कुर्यात्|

विद्यालयीय - क्रियाकलापे उत्साहेन सम्मिलितं भवेत्| क्रीडावादने मित्रै: सह क्रीडेत्| सांस्कृतिक क्रियाकलापेऽपि सोत्साहेन सम्मिलितं भवेत्| वृक्षरोपणेन विद्यालयस्य शोभां वर्धयेत्|

विद्यालयात् गृहम् आगत्य जलपानं कुर्यात्| तत्पश्चात् क्रीडाक्षेत्रे क्रीडेत्| व्यायामं च कुर्यात्| सायं गृहकार्यं पाठाभ्यासं च कुर्यात्| रात्रौ भोजनान्तरं दुग्धं पीत्वा शयनं कुर्यात्|

जीवने दुर्व्यसनं कदापि न कुर्यात्| धूम्रपानं कदापि न कुर्यात्| तमालसेवनं सदा परिहरेत्| पूगीपुटिकया तमालगुटिकया च दन्तेषु रोगाः भवन्ति, अतः ताः सदा परिहरेत्| दुर्जनानां संगं त्यजेत्| सर्वदा सत्संगतिं कुर्यात्| चिन्तने गम्भीरता भवेत्| आदर्श पुरुषाणाम् चरित्रम् अनुकुर्यात्|

शब्दार्थ

भवेम = होवें | **सम्यक्** = अच्छे प्रकार से | **कुर्युः** = करें | **उत्थानं** = उठना | **कुर्यात्** = करना चाहिए | **शोधनाय** = साफ़ करने के लिए | **तक्रम्** = मट्ठा | **दुर्व्यस्नम्** = खराब आदतें| **तमालसेवनम्** = तम्बाकू का सेवन| **परिहरेत्** = छोड़ देना चाहिए| **पूगीपुटिका** = सुपाड़ी की पुड़िया| **तमालगुटिका** = सुरती की पुड़िया| **त्यजेत्** = छोड़ दें| **अनुकुर्यात्** = अनुकरण करें|

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

पादस्पर्शात् स्वच्छपरिवेशे अभिवादयेत् सत्सङ्गतिम्

क्रीडाक्षेत्रे पूगीपुटिकया अभ्यासपुस्तिकायाम् अनुकुर्यात्

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) प्रतिदिनं कदा उत्थानं कर्तव्यम् ?

(ख) प्रातःकाले कीदृशे परिवेशे भ्रमेत् ?

(ग) दन्तानां शोधनाय प्रतिदिनं किं कुर्यात् ?

(घ) सर्वदा कस्य सङ्गतिं कुर्यात् ?

3. हिन्दी में अनुवाद करें-

(क) बहिः स्वच्छ-परिवेशे भ्रमेत्।

(ख) पाठं मनोयोगेन पठेत्।

(ग) विद्यालयीय-क्रियाकलापे उत्साहेन सम्मिलितं भवेत्।

(घ) भोजनोपरान्तं शयनं कुर्यात्।

4. पाठ के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(क) भोजनान्ते-.............पिबेत्।

(ख) जीवने.......................कदापि न कुर्यात्।

(ग) तमालसेवनं सदा.................. ।

(घ) दुर्जनानां सङ्गम्................... ।

5. स्तम्भ 'क' में नीचे कुछ दिनचर्या से सम्बन्धित वाक्यांश दिये गये हैं। उनका सही क्रम में स्तम्भ 'ख' से मिलान करें।

'क'	'ख'
(क) अहं प्रातः पञ्चवादने	गच्छामि
(ख) ततः नित्यक्रियाम्	शये
(ग) भोजनान्ते विद्यालयम्	गृह्णामि

(घ) मनोयोगेन शिक्षाम्   आगच्छामि

(ङ) क्रीडावादने मित्रैः सह   जागर्मि

(च) विद्यालयात् चतुर्वादने गृहं करोमि

(छ) क्रीडाम्, पठनम्, भोजनं च कृत्वा   खेलामि

6.अपनी दिनचर्या को संस्कृत भाषा में अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखें।

विशेष-

भोजनान्ते तक्रं पिबेत् (भोजन के बाद मट्ठा पीना चाहिए)। इसको बताने के लिए 'पिबेत्' का प्रयोग किया गया है। 'चाहिए' के अर्थ में विधिलिङ्लकार के रूपों का प्रयोग होता है। इसी प्रकार खाना चाहिए (खादेत्), प्रणाम करना चाहिए (प्रणमेत्), जाना चाहिए (गच्छेत्), देखना चाहिए (पश्येत्) आदि क्रियाओं को, जिसमें चाहिए लगा हो, बताने के लिए धातु के विधिलिङ्लकार के रूपों का प्रयोग होता है।

पा = पिब् = पीना (विधिलिङ्लकार)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथम पिबेत् पिबेताम् पिबेयुः

मध्यम पिबेः पिबेतम् पिबेत

उत्तम पिबेयम् पिबेव पिबेम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के रूपों का मौखिक अभ्यास करें-

धाव्=दौड़ना। गम्=गच्छ् (जाना)। लिख्=लिखना। नम्=नमस्कार करना।

भू (भव्)=होना। त्यज्=त्यागना (छोड़ना)। भ्रम्=घूमना। खाद्=खाना। पत्=गिरना।

शिक्षण-संकेत -

छात्रों को दुव्र्यसनों से होने वाले हानियों के बारे में परिचित कराएँ।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

परिशिष्टम्

व्याकरणम्

वर्ण-परिचय

संस्कृत भाषा में वर्ण दो प्रकार के होते हैं- 'स्वर' और 'व्यंजन'। इन्हें क्रमशः 'अच'् और 'हल्' भी कहते हैं।

स्वर व्यंजन

अ, इ उ ऋ लृ - ह्रस्व स्वर। क ख ग घ ङ (क = कवर्ग।)

आ, ई, ऊ ि- दीर्घ स्वर। च छ ज झ ´ (च = चवर्ग।)

ए, ऐ, ओ, औ - दीर्घ संयुक्त स्वर। ट ठ ड ढ ण (ट = टवर्ग।)

त थ द ध न (त = तवर्ग।)

अं अनुस्वार (-ं) तथा प फ ब भ म (प = पवर्ग।)

अः विसर्ग (ः) अयोगवाह कहे जाते हैं। य व र ल ----(यण्) ----अन्तःस्थ वर्ण

स्वर दो प्रकार के होते हैं-अनुनासिक श ष स ह ----(शल्) -----ऊष्म वर्ण (चन्द्रबिन्दु युक्त -ँ) तथा {क्ष = क् +ष, त्र = त् + र, ज्ञ=ज् +´ संयुक्त व्यंजन}

निरनुनासिक (बिना चन्द्रबिन्दु के)

सन्धि-विचार

सन्धि शब्द का सामान्य अर्थ है- जोड़ (मेल)। जब दो शब्द पास-पास आते हैं, तो एक दूसरे की निकटता के कारण पहले शब्द के अन्तिम वर्ण और दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में

जो परिवर्तन, परिवर्धन होता है, उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि के लिए दोनों वर्ण एक दूसरे के पास-पास सटे हुए होने चाहिए। दूरवर्ती शब्दों में सन्धि नहीं होती। वर्णों की अतिशय समीपता को संस्कृत में ‘संहिता‘ कहते हैं।

स्वर से स्वर का, व्यंजन से व्यंजन का, व्यंजन से स्वर का तथा विसर्ग से स्वर या व्यंजन का जब परस्पर संयोग होता है, तब वर्णों के मिलने से उनमें जो परिवर्तन होता है उसे सन्धि कहते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि वर्णों के मेल के आधार पर सन्धियाँ निम्नलिखित तीन प्रकार की होती हैं-

1. स्वर-सन्धि देव +आलयः = देवालयः रमा+ईशः = रमेशः

2. व्यंजन-सन्धि सत्+आचारः = सदाचारः सत् +जनः = सज्जनः

3. विसर्ग-सन्धि नमः+करोति = नमस्करोति मनः +रथः = मनोरथः

शब्दों के रूप

अकारान्त पुंल्लिङ्ग

बालक=लड़का

विभक्ति एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्र. बालकः बालकौ बालकाः

द्वि. बालकम् बालकौ बालकान्

तृ. बालकेन बालकाभ्याम् बालकैः

च. बालकाय बालकाभ्याम् बालकेभ्यः

पं. बालकात् बालकाभ्याम् बालकेभ्यः

ष. बालकस्य बालकयोः बालकानाम्

स. बालके बालकयोः बालकेषु

स. हे बालक! हे बालकौ! हे बालकाः!

इसी प्रकार अन्य अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दांे के रूप भी चलते हैं, जैसे- छात्र, राम, वृक्ष, सूर्य, चन्द्र, नट, पुत्र, सुर, देव, रथ, सुत, जन, दन्त, लोक, ईश्वर आदि।

अकारान्त नपुंसक-लिङ्ग

फल

विभक्ति एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमा   फलम् फले फलानि

द्वितीया फलम् फले फलानि

तृतीया फलेन फलाभ्याम् फलैः

चतुर्थी फलाय फलाभ्याम् फलेभ्यः

पञ्चमी फलात् फलाभ्याम् फलेभ्यः

षष्ठी फलस्य फलयोः फलानाम्

सप्तमी फले फलयोः फलेषु

सम्बोधन हे फल! हे फले! हे फलानि!

इसी प्रकार अन्य अकारान्त नपंुसक-लिङ्ग शब्दों के रूप भी बनाये जाते हैं, जैसे- मित्र, कानन, धन, मूल (जड़), अपत्य(सन्तान), वन, अरण्य(जंगल), मुख, कमल, कुसुम, पुष्प, पर्ण(पत्ता), नक्षत्र, पत्र(कागज या पत्ता), बीज, जल, तृण(घास), गगन, शरीर, पुस्तक, ज्ञान, सुख, दुःख, पाप, पुण्य, रक्त(खून), स्वर्ण(सोना), रजत(चाँदी), हिम(बरफ या पाला) आदि।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

लता

विभक्ति एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमा लता लते लताः

द्वितीया लताम् लते लताः

तृतीया लतया लताभ्याम् लताभिः

चतुर्थी लतायै लताभ्याम् लताभ्यः

पञ्चमी लतायाः लताभ्याम् लताभ्यः

षष्ठी लतायाः लतयोः लतानाम्

सप्तमी लतायाम् लतयोः लतासु

सम्बोधन हे लते! हे लते! हे लताः!

इसी प्रकार गङ्गा, विद्या, रमा (लक्ष्मी), बाला, बालिका (लड़की), निशा (रात), कन्या, ललना (स्त्री), भार्या (स्त्री), वडवा (घोड़ी), शिखा, जटा, रेखा, प्रभा, शोभा, राधा, सुमित्रा, तारा, कौशल्या, कला आदि- आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप बनते हैं।

सर्वनाम शब्द

अस्मद् (मैं)

एकवचन द्विवचन बहुवचन

अहम् आवाम् वयम्

माम्, मा आवाम्,नौ अस्मान्, नः

मया आवाभ्याम् अस्माभिः

मह्यम्, मे आवाभ्याम्, नौ अस्मभ्यम्, नः

मत् आवाभ्याम् अस्मत्

मम, मे आवयोः, नौ अस्माकम्, नः

मयि आवयोः अस्मासु

युष्मद् (तुम)

विभक्ति एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमा त्वम् युवाम् यूयम्

द्वितीया त्वाम्, त्वा युवाम्, वाम् युष्मान्, वः

तृतीया त्वया युवाभ्याम् युष्माभिः

चतुर्थी तुभ्यम्, ते युवाभ्याम्, वाम् युष्मभ्यम्, वः

पञ्चमी त्वत् युवाभ्याम् युस्मत्

षष्ठी तव, ते युवयोः, वाम् युष्माकम्, वः

सप्तमी त्वयि युवयोः युष्मासु

तद् (वह) (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमा सः तौ ते

द्वितीया तम् तौ तान्

तृतीया तेन ताभ्याम् तैः

चतुर्थी तस्मै ताभ्याम् तेभ्यः

पञ्चमी तस्मात् ताभ्याम् तेभ्यः

षष्ठी तस्य तयोः तेषाम्

सप्तमी तस्मिन् तयोः तेषु

तद् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति एकवचन द्विवचन बहुवचन प्रथमा सा ते ताः

द्वितीया ताम् ते ताः

तृतीया तया ताभ्याम् ताभिः

चतुर्थी तस्यै ताभ्याम् ताभ्यः

पञ्चमी तस्याः ताभ्याम् ताभ्यः

षष्ठी तस्याः तयोः तासाम्

सप्तमी तस्याम् तयोः तासु

तद् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमा तत् ते तानि

द्वितीया तत् ते तानि

तृतीया तेन ताभ्याम् तैः

चतुर्थी तस्मै ताभ्याम् तेभ्यः

पञ्चमी तस्मात् ताभ्याम् तेभ्यः

षष्ठी तस्य तयोः तेषाम्

सप्तमी तस्मिन् तयोः तेषु

विशेषः - सर्वनाम शब्दों में सम्बोधन नहीं होता है।

धातुरूप

भू धातु (होना)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष भवति भवतः भवन्ति

मध्यमपुरुष भवसि भवथः भवथ

उत्तमपुरुष भवामि भवावः भवामः

लोट्लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष भवतु, भवतात् भवताम् भवन्तु

मध्यमपुरुष भव, भवतात् भवतम् भवत

उत्तमपुरुष भवानि भवाव भवाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष अभवत् अभवताम् अभवन्

मध्यमपुरुष अभवः अभवतम् अभवत

उत्तमपुरुष अभवम् अभवाव अभवाम

विधिलिङ्लकार (विधि/सम्भावना)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष भवेत् भवेताम् भवेयुः

मध्यमपुरुष भवेः भवेतम् भवेत

उत्तमपुरुष भवेयम् भवेव भवेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति

मध्यमपुरुष भविष्यसि भविष्यथः भविष्यथ

उत्तमपुरुष भविष्यामि भविष्यावः भविष्यामः

पठ् धातु (पढ़ना)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष पठति पठतः पठन्ति

मध्यमपुरुष पठसि पठथः पठथ

उत्तमपुरुष पठामि पठावः पठामः

लोट्लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष पठतु, पठतात् पठताम् पठन्तु

मध्यमपुरुष पठ, पठतात् पठतम् पठत

उत्तमपुरुष पठानि पठाव पठाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष अपठत् अपठताम् अपठन्

मध्यमपुरुष अपठः अपठतम् अपठत

उत्तमपुरुष अपठम् अपठाव अपठाम

विधिलिङ्लकार (विधि/सम्भावना)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष पठेत् पठेताम् पठेयुः

मध्यमपुरुष पठेः पठेतम् पठेत

उत्तमपुरुष पठेयम् पठेव पठेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष पठिष्यति पठिष्यतः पठिष्यन्ति

मध्यमपुरुष पठिष्यसि पठिष्यथः पठिष्यथ

उत्तमपुरुष पठिष्यामि पठिष्यावः पठिष्यामः

गम् (गच्छ) जाना

लट् (वर्तमान)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष गच्छति गच्छतः गच्छन्ति

मध्यमपुरुष गच्छसि गच्छथः गच्छथ

उत्तमपुरुष गच्छामि गच्छावः गच्छामः

लोट्लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

एकवचन द्विवचन बहुवचन

गच्छतु,गच्छतात् गच्छताम् गच्छन्तु

गच्छ, गच्छतात् गच्छतम् गच्छत

गच्छानि गच्छाव गच्छाम

लङ्लकार (भूतकाल)

एकवचन द्विवचन बहुवचन

अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्

अगच्छः अगच्छतम् अगच्छत

अगच्छम् अगच्छाव अगच्छाम

विधिलिङ्लकार (विधि/सम्भावना)

एकवचन द्विवचन बहुवचन

गच्छेत् गच्छेताम् गच्छेयुः

गच्छेः गच्छेतम् गच्छेत

गच्छेयम् गच्छेव गच्छेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

एकवचन द्विवचन बहुवचन

गमिष्यति गमिष्यतः गमिष्यन्ति

गमिष्यसि गमिष्यथः गमिष्यथ

गमिष्यामि गमिष्यावः गमिष्यामः

अस् (होना)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

एकवचन द्विवचन बहुवचन

अस्ति स्तः सन्ति

असि स्थः स्थ

अस्मि स्वः स्मः

लोट्लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष अस्तु/स्तात् स्ताम् सन्तु

मध्यमपुरुष एधि/स्तात् स्तम् स्त

उत्तमपुरुष असानि असाव असाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष आसीत् आस्ताम् आसन्

मध्यमपुरुष आसीः आस्तम् आस्त

उत्तमपुरुष आसम् आस्व आस्म

विधिलिङ्लकार (विधि/सम्भावना)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमपुरुष स्यात् स्याताम् स्युः

मध्यमपुरुष स्याः स्यातम् स्यात

उत्तमपुरुष स्याम् स्याव स्याम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्र.पु. भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति

म.पु. भविष्यसि भविष्यथः भविष्यथ

उ.पु. भविष्यामि भविष्यावः भविष्यामः

निर्देशन –श्री संजय सिन्हा, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् ,उ.प्र.

परामर्श -श्री अजय कुमार सिंह ,संयुक्त निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् ,उ.प्र.

E-book विकास ---

अल्पा निगम(प्र.अ.) प्राथमिक विद्यालय तिलौली, गोरखपुर

अमित शर्मा(स.अ)उच्च प्राथमिक विद्यालय महतवानी, उन्नाव

अनीता विश्वकर्मा(स.अ) प्राथमिक विद्यालय सैदपुर पीलीभीत

अनुभव यादव(स.अ) प्राथमिक विद्यालय गुलरिया उन्नाव

अनुपम चौधरी (स.अ)प्राथमिक विद्यालय नौरंगाबाद बदायूं

आशुतोष आनंद (स.अ)उच्च प्राथमिक विद्यालय मियागंज बाराबंकी

दीपक कुशवाहा (स.अ)उच्च प्राथमिक विद्यालय गजफ्फरनगर, उन्नाव

फिरोज खान (स.अ)प्राथमिक विद्यालय चिड़ावक, बुलंदशहर

गौरव सिंह (स.अ)उच्च प्राथमिक विद्यालय फतेहपुर मठिया, फतेहपुर

हृतिक वर्मा (स.अ)प्राथमिक विद्यालय संग्राम खेड़ा ,उन्नाव

नितिन कुमार पाण्डेय , (स.अ)प्राथमिक विद्यालय मध्यनगर ,श्रावस्ती

मनीष प्रताप सिंह (स.अ)प्राथमिक विद्यालय प्रेम नगर, फतेहपुर

प्राणेश भूषण मिश्र (स.अ)पूर्व माध्यमिक विद्यालय पठा, ललितपुर

प्रशांत चौधरी (स.अ)प्राथमिक विद्यालय रवाना, बिजनौर

राजीव कुमार साहू (स.अ)उच्च प्राथमिक विद्यालय ,सराय गोकुल सुल्तानपुर

शशि कुमार(स.अ) प्राथमिक विद्यालय खेड़ा, लच्छीखेड़ा,अकोहरी उन्नाव

शिवाली गुप्ता (स.अ)पूर्व माध्यमिक विद्यालय धौलरी,मेरठ

वरुणेश मिश्रा (स.अ)प्राथमिक विद्यालय मदनपुर पनियार ,सुल्तानपुर